उलबा चाउर

(लघु कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

उलबा चाउर

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-९५-६

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- ८४७४१०
मोबाइल- ९९३१६५४७४२

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८६६५६-५७ फैक्स- (०११) २५८८६६५८

Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Sh. Umesh Mandal.

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Ulba Chaur *: A collection of maithili short story*
by
Sh. Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन : कृषि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान

२०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल ''बाल साहित्य विदेह सम्मान'' २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

एकसत्तरि-

१. कियो ने ......

२. सूदि भरना ......

३. जन्मतिथि ......

४. इमानदार घूसखोर ......

५. पटियाबला ......

६. सनेस ......

७. उलबा चाउर ......

८. बलजोर ......

९. बेटी, हम अपराधी छी ......

१०. बगबारि ......

११. मुइलो बिसेबनि ......

१२. सड़ल दारीम ......

१३. चुप्पा पाल ......

कियो ने

डेढ़ मासक शीतलहरि समैक रोहणिए उतारि देलक। पला-पला ओस पाला बनि दिन-राति बर्फवारी करैए जइसँ मनुखकेँ के कहए जे मालो-जाल आ गाछो-बिरिछ जिनगीसँ तंग-तंग भऽ काहि कटैसँ मरबे नीक बुझैए। चटपट मरब काहि काटबसँ नीक होइते छै। जहिना माल-जालक रूइयाँ भरि दिन भुलकल ठाढ़ रहैए तहिना मनुखोक। मुदा माल-जाल जकाँ सौंसे देहक नै। कारणो अछि जे मनुखकेँ रूइयाँ संग केशो होइ छै, माल-जालकेँ से नै होइ छै। गाछ-बिरिछक पात अपन रंगेटा नै बदलि, पीअर भऽ भऽ सुखौ लगल आ तुबि-तुबि खसौ लगल अछि। आने-आन जकाँ पचासी बरखक सुगियोकाकीकेँ मन कहए लगलनि जे छिआसीअम अगहन भरिसक नहियेँ देखब। जेहो जारनि-काठी आ अन्न-पानि घरमे छल सेहो सठि गेल, शीतलहरिक कोनो ठेकान नै अछि, तखनि जीब केना? मनमे कोनो बाटे ने भेटनि। बाटो केना भेटितनि जौं माटिक रस्ता बाट होइ आ दिन-राति बर्खा होइत रहै, तखनि पक्की सड़कक सुख कल्पने हएत किने? मुदा मरितो दम लोक, जीबैक आशा थोड़े तोड़ैए जे सुगियाकाकीक पचासी बरखक पाकल फलक आँठी जकाँ सक्कत नै हेतनि। सकताएले आँठीमे ने अँकुरैक शक्ति सेहो अबै छै। सुगियाकाकीक नजरि गेलनि व्यास बाबापर। ओ जे कंठ फाड़ि-फाड़ि कहै छथिन जे 'लूटि लाउ, कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।' से समैक ठेकान किए ने केलखिन जे जखनि घरसँ निकलैबला समए बनत तखने ने लोक घरसँ निकलि किछु करत आ जखनि घरसँ निकलैबला समैए ने हेतै, तखनि केना दोसर दिन किछु करए निकलत? मुदा पेट से थोड़े बूझत। देहक जे सुख छै से केना भेटतै? आकि व्यासबाबा एअर कंडीशन मकान, भरल-पूरल अन्न-पानिक जिनगी बूझि बजै छथिन। जेते सुगियाकाकी मनकेँ मथैत तेते ओझराएले जाइत रहथि। जीबैक बाट कि भेटतनि जे आरो मन सोगाएले चलि गेलनि। असगर सिबा घरमे दोसराइतो तँ नहियेँ अछि जे दुनू गोटेक बुधिओ आ हाथो-पएर लड़ा-चला कऽ देखितिऐ जे जीब सकै छी की नै। एहने समैमे ने दोसराइतिक जरूरति होइ छै। आन समए हेबे किए करतै? असकरे लोक चाह पीब लइए, खेनाइ खा लइए, सुति-पड़ि रहैए तखनि दोसराइतक जरूरते की। दिन-रातिमे ऐसँ बेसी चाहबे की करी। चौबीसो घंटा कटैक धार तँ बनले अछि किए ने कटत। मुदा से

नै, उमेरो तँ किछु छी? बुढ़ाड़ी मृत्युक कारण छी मुदा जुआनीकेँ केना से कहबै? होइ छै तेकरो हजारो कारण, मुदा कारण कारण तँ भऽ सकै छै। अकारण कारण केना भऽ सकै छै। हिया कऽ दुनियाँ दिस सुगियाकाकी तकली तँ बूझि पड़लनि बेसौंगरकेँ ठेंगो एकटा टाँगक काज करै छै। तँए एकटा सहयोगीक जरूरति तँ अछिए। मुदा सहयोगी हएत के? बेटी सासुरे बसैए, नैहरो हटले अछि, तखनि? मुदा जरूरति तँ अछि औझुका? से तँ लगेक लोकसँ भऽ सकैए। मनमे प्रश्न अबिते काकीक मनमे उत्तर स्पष्ट भऽ गेलनि जे रीतलालक ऐठाम जा अपन बात कहिऐ जे ओ की कहैए। अनेरे बाबू जन लेबह हौ, तँ पनरह बापूत अपने छी। तइसँ तँ काज नै चलत, काज तँ अछि अपन बनि अपना जकाँ जिनगी पार लगबैक? मुदा तइसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत जे जौं भार उठा लेलक तँ बड़ बेस, जौं नै उठौत तखनि? तखनि की, तखनि यएह ने जे रीतलाल सन-सन बाबन गाही गाममे पसरल अछि। सभ कि कोलिफटूए आकि रसफटूए भऽ जाएत। जेकरा हम अपन बना अपनेबै से किए ने अपनौत। जौं सेहो नै अपनौत तँ पहिने बुझा कऽ कहबै पछाति बुझेबै। उमेद-नाउमेदक बीच सुगियाकाकी रीतलाल ऐठाम विदा भेली। ठंढसँ जहिना देह सिरसिराइत तहिना देहक फाटल-पुरान वस्त्र सिमसिमाएल। सुगियाकाकीकेँ देखिते रीतलाल अचंभित भऽ गेल जे एहनो समैमे निकलि काकी दरबज्जापर एली! सुगियाकाकीकेँ रीतलाल साक्षात् लक्ष्मी स्वरूप बुझैत। गुणसँ भरल, जेहने कंठक स्वर, तेहने नजरिक गुण आ तेहने हाथक लूरिसँ भरल-पूरल सुगियाकाकी। जाड़सँ सिरसिराइत काकीकेँ देखिते रीतलाल अपन देह परहक कम्मल सुगियाकाकीकेँ ओढ़बैत अगियासी जोड़लक। अगियासीक दुनू कात दुनू गोटेकेँ बैसिते गप-सप्प उखड़ैक मनसून बनए लगल। मुदा दुनू अपन-अपन मुँह दबने। मनमे अपन-अपन राग-दोख जे केना पुछबनि, काकी केम्हर एलौं। दरबज्जापर एली तँ चाहक बेर चाह, जलखै बेर जलखै, कलौ बेर कल्लौ आ सुतै बरे ओछाइनिक ओरियान कऽ देबनि।

तहिना सुगियाकाकीक मनमे उठैत जे घरवारी पहिने किछु हँ-निहँस बाजत तखनि ने उतारामे अपनो दुखनामा कहबै। गुमा-गुम्मी पसरल। मुदा किछु समए गुमा-गुमी भेला पछाति सुगियाकाकी गुमगुमबैत गुमगुमा जकाँ बजली-

''बौआ, एक तँ तूँ एक वंशक छह, दोसर अंश तोरामे अछि, जे सुतलो-सूतल कानसँ सुनैत रहै छी, तँए...।''

'तँए' कहिते सुगियाकाकीक बोल ब्लॉटिंग पेपरमे सोंखल रोसनाइ जकाँ बन्न भऽ गेलनि। मुदा किछु प्रश्न तँ उठिए गेल छल, जे तूँ एकवंशक छिअ। तइ संग लूरि-बुधिक अंश सेहो अछिए। रीतलाल बाजल-

''काकी, तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे चिड़ै-चुनमुनीक कोन बात जे नम्हरको-नम्हरकोक जान बँचब कठिन भऽ गेल अछि। चीन-पहचीन सेहो मेटाएल जा रहल छै, तखनि तँ लोक ताबते धरि ने धीरज रखत जाबत धरि आँखि तकैए। ओना तकितो आँखि देहक दुआरे अथबल भऽ जाइ छै मुदा तैयो तँ भूख लगने टंगटुटा चुट्टी जकाँ नेंगराइतो चलिते अछि। नेंगराइत-नेंगराइत जखनि बेदम भऽ जाइए आ पेटक आगिमे जरए लगैए तखने ने अपनाकेँ हवन चढ़बैए। मनुख तँ सहजे मनुख छी।''

रीतलालक बातकेँ सुगियाकाकी किछु बेसीए बुझलनि। बेसी बुझैक कारण काकीक सोचक धार। होइतो तँ अहिना छै जे एक्के मुँहक बात कियो बेसी बुझैए तँ कियो कम। मुदा तइ संग तेसरो बुझिनिहार तँ होइते अछि जे समगम बुझैए। समगम माने जेते प्रश्नकर्ताक बात रहल तेतबे सुनिनिहार बुझलक। सुगियाकाकी तँ सहजे सुग्गा बोल परखिनिहारि छथि। जहिना कोनो रंगक वस्त्रपर दोसर रंग चढ़बैक विधि अलग-अलग अछि, अलग-अलग ई जे कियो बेधड़क दोसर रंग घोड़ि वस्त्रकेँ डुमा देलक तँ कियो आस्ते-आस्ते रंग घोड़ि बेर-बेर डुमा-डुमा रंग चढ़बैए...। तहिना काकी मोने-मन सोचए लगली जे बेधड़क अपन विचार रखैसँ पहिने, आस्ते-आस्ते मनक उद्‌गार बेक्त करब बेसी नीक हएत। विचारिते छेली आकि रीतलालक पत्नी-कबुतरी चाह नेने पहुँचली। काकीक हाथमे चाहक गिलास पकड़बैत कबुतरी बाजलि-

''काकी, तेहेन टिकजरौना समए भऽ गेल जे एक तँ दुनियाँ जाड़सँ जड़ा गेल अछि तैपर आगिओ-छाइकेँ कि ओ तेजी छै जे बैशाख-जेठमे रहै छै। ओइ समैमे जेत्तै जारनिसँ रोटी-तरकारी बनैए तेतेसँ अखनि चाह बनैए।''

कबुतरीक रस-रसाएल बोल सुनि कोइली बोलीमे सुगियाकाकी बाझक स्वरलहरी छिटकबैत बजली-

''कनियाँ, एहने-एहने समैमे पुरुखक पुरुखपना परिवारमे देखल जाइ छै। सभ किछु सुरीत रहने भारीओ काज हल्लुके बूझि पड़ै छै, मुदा सभ किछु विपरीत रहने जौं अपन-अपन परिवार, समाज आ मातृभूमिक सेवा जे करैए, वएह ने पुरुखपना भेल। बूढ़ भेलौं, कोनो कि भगवान तँ नहियेँ छी जे जे कहब से भइए जाएत। मुदा एते तँ कहबे करबह जे भगवान हमरे सनक नम्हर जिनगी सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत दुनियाँ देखैत चलत।''

एक संग अनेको प्रश्न काकी बाजि गेली। किछु बात कबुतरी बुझबो केलक आ किछु नहियोँ। रीतलालो काकीक सोल्हन्नी बात तँ नै बुझलक मुदा कबुतरीसँ तँ बेसी बुझबे केलक। दोसर बात रीतलालक मनकेँ ईहो ठेललक जे परिवारक भीतरक जे प्रश्न अछि ओइमे परिवारक सभकेँ विचार रखैक समान अधिकार छै मुदा समाजक बीच तँ एक-मतक जरूरति होइ छै। तइले परिपक विचारक जरूरति होइते छै। कबुतरीओकेँ गर भेटल, मुँहमे ताला-लगा पति दिस आँखि उठौलक।

कबुतरीक नजरि पड़िते रीतलाल बाजल-

''काकी, अखने देखियौ जे एक गिलास चाह पीलौं। यएह चाह गरम समैमे मन भरि दैत, मुदा अदहोसँ कम शक्ति रहि गेल छै, तहिना तँ मनुखोक शक्तिकेँ होइ छै?''

रीतलालक प्रश्न सुगियाकाकी ठाढ़ काने सुनललनि। प्रश्नक एकभग्गू उत्तर नै दैत बजली-

''रीतलाल, तोंही दुनू परानी अखनि ऐठाम छह। परिवार तँ दुनू गोरेक छिअ। जे संतान छह ओहो सम्मिलिते छह। तँए परिवारमे ओहन विचारक धार बहबैक छह जे जिनगीक संग हँसैत-खेलैत-बोहैत चलए। हँसी-खेल दुनियाँमे कहाँ छै, ओ छै अपन काजमे। अपन परिवार छी आकि परिवार अपन, एकरा नीक जकाँ बुझने लोक अपन परिचए बूझि पबैए।''

काकीक विचार सुनि रीतलाल, पत्नीकेँ कहलक-

''काकी कि केतौ पड़ाएल जाइ छथि जे गपे सुनैमे रहि जाएब। जाउ, भानसक जोगार करू। खेला-पीला पछाति निचेनसँ गप-सप्प करब।''

पतिक सह पाबि कबुतरी बाजलि-

''एहेन समैमे काकीओ केतए जेती। हम सभ जुआन-जहान छी से तँ एक मोटा वस्त्र देहमे सटने छी, काकीक तँ सहजे सुखाएल हड्डी छन्हि, बेसीए जाड़ होइत हेतनि। पहिने चाइटा गोरहा आनि कऽ घूरमे दऽ दइ छियनि जे लगले टनगर भऽ जेती। अच्छा ई कहथु जे कथी खाइक मन होइ छन्हि?''

आशा पाबि सुगियाकाकी आश दैत आस मारली-

''कनियाँ, भने दुनू बेकती छह, एक तँ भगवान बेसी अज-गज नै देलनि, तैयो अपन काजे ओहन रहल जे सभ दिन अजे-गजेमे बितल। मुदा जे किछु अपन अछि सभ समैट लिअ। पाँच कट्ठा खेत बढ़ने अहूँक उपजा बढ़ि जाएत आ हमरो दिन घुसकैत कटि जाएत।''

काकीक बात सुनि रीतलाल बाजल-

''काकी, हमरासँ लगो अहाँकेँ बहुत अज-गज अछि पहिने ओ...?''

झपटि कऽ काकी बजली-

''पहिने पाछू किछु नै, चिड़ैकेँ जेतए घोघ भरै छै तेतए रहै छै। जे कियो अपन छथि ओ एहेन दुरकाल समए नै देखि रहल छथि!''

''देखि किए ने रहल छथि मुदा सबहक तँ अपने जान भौर भऽ गेल छन्हि, तखनि अनकापर नजरि केना जेतनि?''

रीतलालक बात सुनि सुगियाकाकीकेँ कटु लगलनि। कटु लगिते मन रब-रबेलनि। कबकबाइत बजली-

''बौआ रीतलाल, कहलह तँ बड़-बढ़ियाँ मुदा, मनुख तँ विवेकी होइ छै, ओकरा तँ विवेकसँ डेग उठबए पड़ै छै। जौं से नै उठौत तँ

मनुखता केना औतै। खाली दूटा हाथे-पएर रहने तँ नै हेतै। दूटाकेँ के कहए जे चारिओटा पएर रहने पशु तँ पशुए भेल किने। जे हाथी पाँच गोटेकेँ पीठपर लादि चलैए। मुदा ओकरो तँ अपना रहैक ठौर-ठेकान आ खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि नहियेँ होइ छै। ई दीगर बात जे बिनु दोसराइते बोन-झाड़मे रहि जीवन-जापन कऽ लइए मुदा पालतू तँ तखने कहबैए जखनि मनुखक संग जीबैए।''

सुगियाकाकीक बात रीतलाल नीक जकाँ नै बूझि पौलक। प्रश्न उनटबैत बाजल-

''काकी, जखनि मनुख मनुख छी तखनि दोसराइतकेँ बाँहि पकड़ि उठाबए आकि दोसराक बाँहिक आशा अपने उठैमे करए?''

रीतलालक विचार सुनि सुगियाकाकी मुस्कीआइत बजली-

''बौआ, कालक्रमे मनुख धरतीपर आबि आगू मुहेँ चलैत अछि। तहीले परिवार-समाजक जरूरति होइ छै। जखनि बच्चाक जनम होइ छै तखनि जौँ ओकरा दोसर रच्छा नै करतै तँ की ओ उठि ठाढ़ भऽ सकैए। नै भऽ सकैए। तहिना बुढ़ाड़ीमे, जखनि शरीरक सभ अंग आस्ते-आस्ते काज करब छोड़ि दइ छै तखनो तँ दोसराइतक जरूरति होइते छै। जौँ एतबो बात लोक नै बूझत तँ की ओ मनुख कहबैक अधिकार रखैए।''

सुगियाकाकीक बात सुनि रीतलालक मनमे उठल जे अनेरे काकी सन लोककेँ ओझरीमे ओझरबै छियनि। अपनो नीक नहियेँ होइए। नीक तँ तखनि हएत जखनि कामधेनु सन काकीसँ दूधक आशा रखब। तइले दुधारू भोजन आ रहैक ओरियान करए पड़त। मुदा जइ पटरीपर गप-सप्प उतरि गेल अछि, तइसँ हटि दोसर लीकपर जाइमे बाधा तँ बीचमे अछिए। अपनाकेँ ओझराएल देखि रीतलाल बाजल-

''काकी, अहाँ अपन जिनगी आ अपन विचारक मालिक अपने छी। जे मन हुअए से करब। अखनि एतबे जे जेते दिन अपन बूझि रहए चाहब, तइमे बाधा नै हएत। आगू अपन जानी।''

रीतलालक विचार सुनि सुगियाकाकीक मन मानि गेलनि जे रहै जोकर स्थानपर पहुँच गेलौं।

सात भाए-बहिनिक बीच सुगियाकाकी अंतिम तेसर बहिन। श्याम वर्ण, चाकर गोल मुँह, चौरस देह, मझोल कदक सुगियाकाकी। गाममे बेछप जनाना। ओना समाजक जनानाक बीच एकरूपता बेसी मुदा तइसँ भिन्न रहने सुगियाकाकी छेली। समाजक बहुलांश जनाना खेती-बाड़ीसँ जुड़ल तँए दिन-राति ओइ चक्कीकेँ चलबै पाछू बेहाल। बेहालो केना नै रहती? मनुख बनि जखनि ऐ धरतीपर खेल खेलैले एलौं, भिनसरमे घर-दुआर बना लेब, दुपहरमे बिलमि रौद-बसात जीड़ा लेब आ साँझमे सभकेँ उसारि अपने उसरि जाएब, यएह ने भेल जिनगी। से तँ सबहक सोझहेमे अछि। पतियानी लगौने बाबा अपन बेटाकेँ बाबा बना अपने उसरि-बिसरि जाइ छथि। अहिना ने दोसर दिससँ पोता-बेटा बनैत, बाबाक कुट्टी लग पहुँच अपन समाधि लइए। मुदा ऐ बीच जे कुत्सित बाधा बिचमाइन करैत रहल ओकरा तँ देखए पड़त किने?

समाजमे सुगियाकाकी ऐ दुआरे बेछप छेली जे जेहने हाथक लूरि बदलल छेलनि तेहने छातीक धड़कनक संग कंठक स्वर, जे मुँहक बोल होइत निकलै छेलनि। गीत-संगीत प्रेमी सुगियाकाकी। भित्ति-चित्र वृत्तिवाली सुगियाकाकी। अदौरी, दनौरी, बिऔरी इत्यादिक संग आमक अँचार-मोरब्बासँ लऽ कऽ तिल-तिसी धरिक अँचार बनौनिहारि। तइ संग सतरंग सागक संग सतरंग तरकारी-भुजिया-तरूआ बनौनिहारि सुगियाकाकी।

साठि बरख पूर्व सुगियाकाकी वसन्तपुर एली। जइ परिवारमे एली ओ परिवार बहुत जत्था-जमीनबला नै। घराड़ी संग पाँच कट्ठा चास। मुदा जेकरा संग बिआह भेलनि, ओ जेहने देखैमे भव्य तेहने कंठक सुरील। भजन-कीर्तन, नाच-गानसँ सोमनाथकेँ बच्चेसँ सिनेह छेलनि। जेना पाछूएसँ नेने आएल होथि तहिना। दसे-बारह बरखसँ जे घर छोड़ि बौड़ाए लगल ओ रंगमंचक धीर कलाकार बनि बौड़ाइते रहल। पुश्तैनी तीन पुश्त आगूसँ सुगियाकाकीक नैहरक परिवार गीत-संगीतसँ जुड़ल। सोमनाथो घुमैत-घामैत सालक तीन-तीन-चरि-चरि मास रहबो करथि आ सीखबो करथि।

किसान परिवार रहितो विश्वनाथक -सुगियाकाकीक पिता- परिवार कृषि कार्य-खेती-बाड़ीसँ अलग छेलनि। ओना परिवारमे बीस बीघा चास आ पाँच बीघा गाछी-कलमक संग नमगर-चौरगर बासो आ पोखरिओ-इनार छन्हिहेँ। कला-मर्मज्ञ विश्वनाथक परिवार, सोमनाथक बिआह अपन परिवारमे करा

लेलनि। ने सोमनाथक घर-दुआर देखलनि आ ने धन-सम्पतिक हिसाब-किताब पढ़लनि।

वसन्तपुर अबिते सुगियाकाकी परिवारक स्थिति देखि मर्माहत भेली। मुदा उपए की। पतिक कमाइ -अर्थ रूपमे- किछु ने, सालमे पाहुने-परक जकाँ आन-जान। पेटक आगि शान्त करै खातिर सासु-ससुर दिन-राति एकबट्ट केने मुदा कट-मटी तँ रहबे करनि। नव कनियाँ बनि सुगियाकाकी घरमे एली, केना सासु-ससुर कहतनि जे कनियाँ बोइन-बुत्ता करए संगे चलू। परिवारक प्रतिष्ठा तँ प्रतिष्ठा छिऐ भलहिं जिनगी भरि नै निमहै। एको दिन आकि एको क्षणक महत तँ जिनगीमे छइहे। अपन दिन-दुनियाँ देखैत सुगियाकाकी अपना दिस तकलनि तँ भरल-पूरल खजाना देखलनि। परती देखि जहिना किसानीक जिज्ञासा जगैत, बजार देखि बेपारक जिज्ञासा जगैत तहिना सुगियाकाकीकेँ भेलनि। मुदा, सासु-ससुरक ऊपर आगू चढ़ि मुँह केना उठौती, ई तँ प्रश्न रहबे करनि। जिनगी जीबैत-जीबैत लोको आ पशुओ-पक्षी अभ्यस्त भेने आनन्दित जिनगीक सुख-भोग तँ करिते अछि। मुदा जँ बरिसल पानिकेँ खेतक आड़ि बान्हि-बान्हि नै रखब तँ खेतमे पानि केना अड़त। जाबे खेतमे पानि नै अड़त ताबे धान केना रोपब। जँ से नै रोपब तँ बोनिहारिन-बोनिहारक पुतोहुक कलंक केना धुआएत? आ जौं से नै धुआएत तँ जिनगीए केहेन भेल? रंग-बिरंगक प्रश्न सुगियाकाकीक मन बरसैत पानिक बुलबुला जकाँ इंद्रधनुषी रंग नेने बनैत आ फुटैत। मनमे विचारलनि जे सभसँ पहिने अपन ढेकी-जत्ताक ओरियान करी। जखनि ढेकी-जॉत भऽ जाएत तखनि समाजक कुटौन-पिसौन कऽ अपन स्वतंत्र कारोबार अपन घर-आँगनमे करब। की हमरा चूड़ा-चाउर कुटैक लूरि नइए। की हमरा मेदा-चिक्कस पीसैक लूरि नइए। तखनि तँ भेल जे उक्खैर-समाठ, ढेकी-जॉतक ओरियान करब। केना सासु-ससुरकेँ कहबनि जे अहाँ कर्जा लऽ कऽ हमरा कीनि दिअ। मुदा अपना माए-बापकेँ तँ कहि सकै छी। देह-हाथ मारि जे आँगनमे बैसल रहै छी तइसँ नीक जे अपन घर-आँगनमे किए ने अपन लूरिक किताब लिखब शुरू करी।

आँगनक ओसारपर ओछाएल ओछाइनपर बैस सुगियाकाकी अपन दिन-रातिक झख-झखैत मोने-मन सुमारक करए लगली जे केना पौतीमे रखल खीड़ा-करैलाक बीआ समैपर माटिमे गाड़ल जाइ छै। समए पाबि जखनि माटि पकड़ि हाल पबिते फुड़फुड़ा कऽ अँकुरि माटिक ऊपर आबि अपनाकेँ गाछ

कहए लगै छै। बौधिक रूपे अगुआएल सुगियाकाकीक उत्साह जगलनि। किए ने फूल जकाँ गंध सिरजि हवाक संग वायुमंडलमे पसरब! मुदा बीचमे बाधा तँ अछिए, ओ अछि जइ परिवारमे एलौं ओ परिवार अपन छी आकि नै। कहैले तँ सभ कियो छथि मुदा हमरा विचारकेँ केते महत अछि से तँ थाहला पछाति बूझब। मुदा थाहो लेब तँ कठिन अछि। एकरूपा सासुकेँ तँ सम्हारि बाजि सम्हारि लेब मुदा ससुर तँ पुरुख छथि। पुरुखक करेज बेसी स्वार्थी होइए, अपन विचारकेँ दउ-चप बले रखए चाहैए। मन ठमकलनि। ठमैकिते सुगियाकाकीक मनमे बिजलोका जकाँ छिटकलनि। मन मानि गेलनि जे सासुकेँ संगी बनौल जा सकैए। जखने सासु समटेती तखने ससुर उसरता, उसरैत-उसरैत अपने उसरागा बनि सोझ भऽ जेता।

दोसर दिन साँझू पहर सुगियाकाकी चुल्हिक ओरियान करिते छेली आकि सासु-ससुर अनका खेतसँ खटि कऽ एली। पुतोहुकेँ काजमे लगल देखि रधिया पतिकेँ कहलखिन-

"बड़ काजुल कनियाँ घरमे पएर रखलनि अछि।"

पत्नीक बोलकेँ नकारब सोहनलाल उचित नै बुझलनि, बुझलनि ई जे संगे-संग संगी बनि भरि दिन संगे काज केलौं तखनि जेहने विचार अपन अछि तेहने ने हुनको हेतनि लोकक काजो तँ लोकक पहिचान छी। तहूमे भरि दिनक थाकल-मारल अपनो घरमे अराम नै करब, से केहेन हएत? अष्टयाम कीर्तनमे जहिना अगुआ-पछुआ एक्के धूनमे जयकार करैए तहिना सोहनलाल ताल मिलबैत बजला-

> "हम सभ तँ हिनका सबहक -बेटा-पुतोहु- नौकरी करै छी। ओना उचितो अछि। तेहेन भगवान जनम देलनि जे सोझहे हाथे-पएरटा देलनि। मुदा ओइमे बेइमानी नै केलनि। ओ चारू सुरेब अछि। जँ चारूमे सँ एकोटा अबाह रहैत तखनि के केकरा पुछैत। अहीं हमरा पुछितौं कि हमहीं अहाँकेँ पुछितौं। भीख छोड़ि दोसर कोनो रस्ता जीबैक रहितए?"

नमगर-चौड़गर पतिक बात सुनि रधिया भाव-विह्वल भऽ गेली। जहिना निशाँएल साहित्यकार जकाँ जे गुदरी-चेथरीक आगिसँ सोनाक लंका जरबै छथि, तहिना सासु-ससुरक बोल सुगियाकाकीक कानमे पड़लनि। अनुकूल मनसून देखि सुगियाकाकी दाव सम्हारलनि। भरल बाल्टीन पानि आ लोटा

नेने आगूमे पहुँच गेली। पुतोहुक आग्रह देखि रधिया जहिना बरफ पानि-हवा बनि अकासमे उड़ि जाइए तहिना रधिया उड़ैत बजली-

"कनियाँक सभटा सीख-लीक खनदानीए छन्हि।"

रधियाक संग सोहनलाल आरो उड़िया गेला। उड़ियाइत बजला-

"जहिना दबो भोज्य-वस्तु, चमकैत थारीमे परोसलापर अनेरो खेबैयाक मन भरछए लगै छै तहिना घरक चिष्टे-चार ने घरकेँ घर बनबैए। ई घर कि कोनो हमरे छी आकि आब हिनके सबहक भेलनि। जेना सम्हारथि।"

ससुरक बोल सुनि सुगियाकाकीक मनमे भेलनि, जेहने परिवारमे भगवान जनम देलनि भरिसक सासुरो तेहने भेल। मोने-मन भगवानकेँ गोड़ लगिते जगलनि जे ई दलिदता केते दिन छहटा हाथ पएरक आगू ठाढ़ रहत। मुदा सासु-ससुरकेँ जे जिनगी भरिक बात पेटमे छन्हि से जाबे सुनि नै लेब ताबे बुढ़ी थोड़े कहती अपन चौथारीक गप-सप्प। तइ सुनैले तँ किछु पूजी-समए लगबै पड़त। जहिना बड़का करखन्ना बैसबैले बड़का घर बनबए पड़ै छै तहिना नम्हर गप-सप्प सुनैले बेसी धैर्यक जरूरति पड़ै छै। जइ बनबैमे किछु बेसीओ समए लागि सकै छै।

खेला-पीला पछाति सुगियाकाकी मालीमे तेल नेने सासु-ससुर लग पहुँचली। भरि दिनक थाकलक दबाइओ छी तेल। सोहनलाल रधियाकेँ कहलखिन-

"काल्हि धनरोपनी समापत भऽ जाएत। गाममे केते गिरहत तँ आठ दिन पहिने रोपनी उसारलनि। ई तँ गुण अछि जे अपना सभ केकरो बान्हल जन नै छिऐ ने तँ अपनो सबहक काज आठ दिन पहिने समापत भऽ गेल रहितए।"

आगूक बात सोहनलालक पेटेमे रहनि आकि सुगियाकाकीक हाथमे माली देखलनि। माली देखिते घरक माली -मालिक- बेटा-पर नजरि गेलनि। अपने फुड़ने बाजए लगला-

"भगवान तेहेन बेटा देलनि जेकरा ने अपन खाइ-पीबैक ठेकान छै आ ने परिवारक ठेकान छै। ओहन मनुख बुते घर चलत। अखनि

> अपने दुनू बेकती थेहगर छी, कहुना कऽ घीच-तीड़ परिवारकेँ ससारने चलै छी।''

बेटापर पिताक आछेप सुनिते रधियाक मनक महथीन बाजलि-

> ''बेटा धन छी आकि कोनो बेटी छी जे घर-अँगनाक टाटक अढ़मे नुकाएल रहत। भगवान हमरो सबहक औरुदा ओकरे दउ जे आरो बोनाएल रहए।''

ससुरक बात सुनि जहिना सुगियाक मन बिस-बिसेलनि तहिना सासुक बात सुनि मन तन-तनेबो केलनि। मुदा सासु-ससुरक बीचक बातमे नव कनियाँकेँ पड़क चाही आकि नै? मन ओझरा गेलनि। मुदा नीककेँ नीक आ अधलाकेँ अधला जौं नै कहल जाए तँ के पटकाएत तेकर कोनो ठीक छै। हँसीओ होइ छै हहासो होइ छै। गंभीरो हँसब होइ छै आ फुलहो हँसब होइ छै, मुदा से बूझत के? हँसी तँ हँसी छिऐ। मुँह खोलि बत्तीसी जोरसँ छिड़िया देलिऐ, बड़का हँसब भेल! तारतम्य करैत सुगिया सासुक विचारपर, सासु दिस घूमि, डिबियाक रोशनीमे मन्हुआएल चोकटल फूल जकाँ नै, खिलैत कली जकाँ आँखि-भौ-नाकक संग मुस्कीएली। पुतोहुक मधुर मुस्कान देखि रधियाकेँ, जहिना गोबरखत्तोक पानि धाराक संग पाबि गंगामे पहुँच गंगाजल बनि जाइए तहिना भेलनि। सौझुका बेला-बेली जहिना अपन चौंसैठो कलासँ नाचए-गाबए लगैए तहिना रधिया पतिकेँ देखबैत बजली-

> ''सोमनाथ अपन गुणक हिसाबसँ दुनियाँक गुणा-भाग जोड़ैए। जोड़ह, आरो जोड़ह। हम सभ माए-बाप भेलिऐ, जीता-जिनगी ई नै कानमे आबए जे माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ बान्हि कऽ रखने अछि।''

रधियाक बात सुनि सुगियाकाकीकेँ जहिना अपन शक्ति मुँह जगौलकनि तहिना रधियाकेँ सेहो दमपति शक्ति जगौलकनि। मंदिरक आगू दुनू हाथ जोड़ि भक्त जहिना अपन अराधना करैत तहिना अखनि धरि सुगियोकाकी हाथमे माली रखने आराधना करैत रहली। माली देखि रधिया सुगियाकाकीकेँ कहलखिन-

> ''कनियाँ, अहाँ बैसू जे सेवा सासुरक छी ओ तँ सासुरेमे ने सीखब। हम अपने अहाँ ससुरकेँ देह-हाथ ससारि दइ छियनि। ओना ससुरोक सेवा पुतोहुक करतब छी मुदा स्थान-विशेषक

> अनुकूल। पिताक सेवा आ ससुरक सेवा एक रहितो दू प्रक्रियासँ चलै छै। तहिना जन्मदात्ती माए आ पोसिनिहारि सासु-माएक सेवामे सेहो भेद होइ छै। अहाँक ससुर सन भगवान केकरा ससुर देलखिन। भगवान एहने सभकेँ देथुन।''

परिवारक -तीनू गोटेक- बीच अपन प्रतिष्ठा पबैत सोहनलालक मन सोहनगर होइत-होइत सोन्हाएल दूधक डाबाक मक्खनक सुगंध निकालि बाजल-

> ''कनियाँ, ऐठाम तीनिए गोरे छी। अहीं तीनू गोरेक ने ई घर छी। ऐ घरक भार तँ तीनिए गोरेक ऊपर अछि किने। अहूँ खनदानी घरक बेटी छी। दुनू गोरे -सासु-पुतोहु- विचारि जे कहब से मानैत चलब। सएह ने...।''

ससुरक विचार सुनि सुगिया शुभ प्रभातकेँ प्रणाम केलनि।

दोसर दिन सबेरे सासु-ससुर बोइन करए घरसँ निकलली। भानस करैसँ पहिने चाह-ताह पीला पछाति, सोलह बरखक नव कनियाँ सुगियाकाकी घरक चौकठि लग बैस अपन शक्तिकेँ खोजए लगली। हमरा सन परिवारमे जौं देह धूनि श्रम नै कएल जाएत तँ परिवारक नीवमे मजगुती नै औत। शक्तिक क्षय श्रम आ भोग दुनूमे होइ छै। यएह छी अकास-पतालक दूरी। जेतए जे होउ, आइसँ दिन-चर्या बना चलब। भोरहरबामे पाँचटा प्रभाती गाएब आ पहिल-दोसर साँझमे पाँचटा मंगल सेहो गाएब, अपना घरमे गाएब, अपन सासु-ससुरकेँ सुनेबनि। सभ अपन घरऽ देवताकेँ पूजा करैए, हमहूँ करब। तइसँ पहिने अखने चिक्कनि माटि घोरि सभ घर-ओसारकेँ ढोरब शुरू कऽ ली। सुखैओमे दू-तीन दिन लगबे करत। कहिया लेल आ केकरा लेल भित्ती-चित्रक लूरि रखब। जिनगीक ठेकान नै अछि। बिनु बँटने जे संगे जरि जाएत तँ अधरम हएत। सभ घर-ओसारमे रंग-रंगक रूप-चित्र बना लेब। कोहवर, भानस, पढ़ैक, सुतैक रूप बना नै रखब तँ लूरिओ-बुधि तँ हराइते छै, हराइते जाएत। मुदा ई सभ तँ भेल घर सजबैक। मूल तँ अछि पेट। जखनि अपना खेत नै अछि तखनि खेती केना करब। ओना नैहरमे जँ खेत छेबे करनि तैयो तँ खेती अपने नहियेँ करै छथि। ई तँ निश्चित अछि जे जखने घर-ओसारमे चित्र बनबैक लूरि अछि तँ काजो-रोजगार अछिए।

मुदा जैठाम छी तैठाम की रेडियो-अखबार छै जे लोक बूझत? लोक तँ बूझत देखिए-परेख कऽ, गाम-समाज बनत बजार। शुभ-अवसरक संग नव-नव घर बनत, नव-नव चित्रसँ घर सजौल जाएत। से नै तँ सभसँ पहिने पेटक मुँह मारैक ओरियान कऽ ली, तखनि बूझल जेतै। ने दुनियाँ पड़ाएल जाइ छै आ ने अपने पड़ाएल जाइ छी। रहैओक अछिए आ रहब तँ संगो चलै पड़त।

परिवारमे सुगियाकाकीक सासुरक जिनगीक पहिल जीत यएह भेलनि जे सबहक -परिवारक- विचारसँ घर चलत। सभ मिलि काजो-राज सिरजन करब आ सभ मिलि बाँटि करबो करब। अपन तीनू श्रमकेँ एकठाम होइते शक्तिक रूप बनल। वएह शक्ति पूजी बनि ठाढ़ भेलनि। परिवारक दिन-दशा सुधरए लगलनि। जेना-जेना अर्थक स्तर सुधरैत गेल तेना-तेना श्रमक रूप बदलैत परिवार चलए लगल। कमो अपन पूजी-श्रम-अर्थ जौं अपना मननुकूल उपयोग कएल जाएत तँ कर्कशतामे कमी अबै छै। कर्कशता ओतए विकृत रूप पकड़ैत जेतए मनकेँ प्रतिकूल श्रम करए पड़ै छै।

समए बितैत गेल। सासु-ससुर सुगियाकाकीक सहयोगी बनि एकधारामे परिवारकेँ ठाढ़ केलनि। ओना दस बरख बितैत-बितैत सुगियाकाकीक नओं-जश चरिकोसीमे पसरि गेल छेलनि मुदा एते-सघन काजक समाजमे, गाम छोड़ि अनतए जेबाक समैए ने भेटनि। एक बोनिहार परिवार समाजक ओइ मानचित्रपर पहुँच गेल जेकरा सुतिहार परिवार कहल जाइ छै।

बीस बरख पुरैत-पुरैत सुगियाकाकीकेँ पाँचटा सन्तान भेलनि। तीन बेटी दू बेटा। सासु-ससुरकेँ रहने सुगियाकाकीक काजमे ओते बाधा नै पड़लनि जेते असगरूआ परिवारक चिलकौरकेँ होइ छै। मनुख पैदा करब आ मनुख बना ठाढ़ करब, धिया-पुताक खेल नै छी। ऐ बातपर सुगियाकाकी सदति काल धियान रखै छेली। मुदा धियान रखलो पछाति दुनू बेटा मरि गेलनि। मात्र तीनू बेटी बँचलनि। समाजक लोक सुगियाकाकीकेँ जेहने गीत गौनिहारि, तेहने चित्रकार आ तेहने पाक पकौनिहारि एक स्वरसँ मानै छन्हि।

समए बितैत गेल। सुगियाकाकीक पति-सोमनाथ उड़ि कऽ बम्बई चलि गेल। ओत्तै दोहरा कऽ बिआहो कऽ लेलक। साउसो-ससुर मरि गेलनि। तीनू बेटीक संग सुगियाकाकी वसन्तपुरमे बँचि गेली। अपना जनैत

सुगियाकाकी तीनू बेटीक बिआह नीके घर जानि केलनि मुदा समैक विर्ड़ोमे उधिया तीनू जमाएओ आ बेटीओ मद्रासे-कर्नाटकमे बसि गेलनि।

अखनि पचासी बरखसँ पहिने धरि सुगियाकाकी समाजक समुद्र रूपी पेटमे हराएल रहली, मुदा सालक शीतलहरि सुगियाकाकीकेँ असहनीय बना देलकनि।



सूदि भरना

बालपनमे लगल चोट जहिना अधवेशू वा बुढ़ाड़ीमे उपकि जाइत तहिना डोमीकाकाकेँ बेटी बिआहक चोट मास दिन पछाति उपकलनि। रोगाएल अवस्थामे जखनि कियो जिनगी-मृत्युक मचकीपर झुलए लगैत तखनि जहिना धर्मराजक दरबार लगैत तहिना हुअ लगलनि। निष्पक्ष समीक्षक जहिना साहित्यक कोण-कोणक समीक्षा करैत तहिना डोमीकाका सेहो करए लगला। अन्तो-अन्त अही निर्णएपर पहुँचला जे गाममे रहने जीवन-यापन नै कऽ पएब तँए बिनु परदेश गेने जीब असंभव अछि। केना नै असंभव होएत? पाँच बीघा जमीनबला डोमीकाकाकेँ दू बीघा घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी, खरहोरिमे बरदाएल बाँकी तीन बीघा जोतसीम। समाजोक देखा-देखी आ कुटुमो-परिवारक स्तरक अनुकूल तँ करए पड़तनि। जहिना धरमोक स्वरूप समायानुसार बदलि जाइ छै तहिना ने समाजोमे जे बेसी लाम-झामसँ बेटीक बिआह आ माए-बापक सराध करैत ओ समाजमे ओते ऊपर होइत। तेतबे नै, जइ समाजमे दोससँ बेसी दुश्मन रहैत तइ समाजमे ईहो पुरौनाइ तँ जरूरीए होइत जे अनकासँ कि मोर छी।

दलानक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर चीत भेल पड़ल, दहिना हाथ मोरि दुनू आँखिपर नेने डोमीकाका परिवारक बदलैत स्वरूपपर आँखि गड़ा सोचि रहल छथि। मनमे उठलनि गलती अपनो भेल। ई तँ नजरिपर आएल जे समाज आ कुटुम-परिवारक देखौंस करब जरूरी अछि मुदा ई नै आबि सकल जे ओहूमे पतियानी लगल अछि। एकठाम सभ समटल कहाँ छथि। भैयारीओमे तँ होइते अछि जे संगे-संग जिनगी बनौनिहारि पितियौत बहिनक बीच एककेँ इंजीनियर-डाक्टर संगी भेटैत तँ दोसरकेँ ऑफिसक किरानी वा स्कूलक शिक्षक भेटैए। भूल भेल, आगू दिस तकलौं मुदा पजरबाहि आ पाछू दिस नै तकलौं। एकरा के उचित कहत जे एक-ओद्रक बेटा-बेटीक बीच इमान-बेइमान बनि जाउ। पाँच बीघा जमीन अछि चारू भाए-बहिन हिस्साक संग पाँचम अपनो दुनू परानीक हेबे करत। जौं से नै हएत तँ अपन जिनगी अनका हाथमे जेबे करत। मुदा गलती भेल, औगताइ केने। तहूमे पत्नी आरो मन घोर कऽ देलनि। ई कहू जे अर्द्धांगिनी भऽ केहेन विचार देलनि जे ऐ गाममे कर्ज नै भेटत तँ हम नैहरसँ आनि देब। एकटा मुर्गीक जौं दसठाम हलाल हुअए तँ ओकरा की कहबै?

एक तँ ओहिना परिवार महजालमे ओझराएल अछि तैपर हमरा किरतबे समाजक ऊपर आन समाजक कर्ज आबि जाए, एहेन काज जीता-जिनगी नै करब। मुदा तइमे कनी औगताइ भेल। औगताइ ई भेल जे पच्चीस-तीस हजार रूपैए कट्ठाक चीज पाँचे हजार रूपैए भरना लगा देलिऐ। मुदा बितलकेँ बिसरबे नीक। जौं से नै करब तँ भूतलग्गू जकाँ अपन देह-हाथ अपने नोचए पड़त। फेर मन भरना जमीनपर घुमलनि। केना लोक पावनि-तिहारमे सेर-पसेरी लऽ खेतो भरना लगबैए आ बेचबो करैए। मनमे खौंझ उठलनि, कानूने बनने कि सुथनी हएत जे आठ बरख पछाति भरना जमीन घूमि जाएत, मुदा होइ की अछि। तेतबे किए, जहिना महाजनीक सूदिकेँ सीमामे बान्हि देल गेल जे दोबरसँ बेसी कहियो ने हएत, तहिना बैंकक कर्जकेँ किए ने बान्हल जाइए, जे ग्रामीण-दशा (गामक लोकक जिनगी) आगू मुहेँ नै ससरि पाछुए मुहेँ ढरकि रहल अछि। जैठाम एते महग पढ़ाइ भऽ गेल अछि, लाखक इलाज (शरीरक) भऽ गेल अछि, लाखक घर बनि रहल अछि तैठाम, की उपए अछि। हँ एते जरूर हेबाक चाही जे जखनि सभ अपने छी तखनि बीचमे इमान-बेइमान नै बनए। जहिना बरसातक मासमे एक दिसुका पानिकेँ दोसर दिसुका रोकि तेसर दिसक रस्ता पकड़ैत तहिना घीचा-तीरीमे डोमीकक्काक मन असथिर भेलनि। पड़ले-पड़ल पत्नीकेँ शोर पाड़लखिन।

आँगनक ओसारक शीतल पाटीपर बैस दायरानी बिआहक उनटा गिनती करैत रहथि। फल्लांक करौछ हरा गेलै, ओकरा तँ कहब जरूरी अछि। जौं से नै कहबै तँ अनेरे ओ दस ठाम बाजत जे फल्लाँ करौछ रखि लेलक। कोन चीज छी जखनि एते खर्च भेबे कएल तखनि एकटा करौछे की छी। जिनगी बनबैमे जहिना जिनका जेहेन कठिन मेहनति भेल रहैए तहिना ने तिनकर जिनगीओ ठाढ़ होइए। जौं से नै तँ लाखक जिनगी केना पाँच-दसमे हारि मानत। फेर दायरानीक मनमे खुशी एलनि, अपना जौं बौको डाँड़ लगल तैयो बैहरी दादीकेँ नफे भेलनि।

टुटल चंगेरा लेलियनि, नवका कीनि कऽ देलियनि। केना नै दैतियनि ओ थोड़े बुझलखिन जे हमरा चंगेरामे केरा-आम छोड़ि दोसर चीज जाइबला नै अछि। ओना हमरो तँ काज चलिऐ गेल भने पुरना गेल नव आएल से नीके भेल। पतिक अवाज सुनि ओसारेपर सँ एते जोरसँ बजली जे डोमीकाकाकेँ बूझि पड़लनि जे लगमे नै कनी हटल छथि।

डोमीकाका लग तँ दायरानीकाकी पहुँच गेली मुदा मनमे अपने घिरनी नचैत रहनि। एक चालि चलि जहिना घिरनी विश्राम लैत तहिना काकीकेँ सेहो भेलनि। आँखि उठा तकलनि तँ देखलखिन जे ग्रीष्मकालीन घास-पात जकाँ कुम्हलाएल मुँह, जेठुआ गरेक मेघ जकाँ चिन्तासँ लदल आँखि, निरजन वनमे हेराएल बटोही जकाँ देखि मन सहमि गेलनि। अपन करतबक एहसास भेलनि। पियासल लेल जहिना पानि, तबधल लेल पंखाक हवाक जरूरति होइत तहिना चिन्ताएल मन लेल सेहो मीठ बोलक जरूरति होइए। आँचरसँ ढबढबाएल पतिक दुनू आँखि पोछैत बजली-

''एहेन सकल-सूरत किए बनौने छी?''

सिकीक वाण सदृश पत्नीक बोल डोमीकक्काक हृदैमे बेधि देलकनि। छटपटाइत बजला-

''उपए कथी अछि जे...?''

दायरानी पुछलकनि-

''तखनि?''

डोमीकाका कहलखिन-

''परदेश जाएब। दुनू बेटोकेँ नेने जाएब, नहियोँ कमा कऽ देत पेट तँ पालत ने। जौं दसो हजार महिना कमाएब तँ एक बरखे नै दू बरखे, पाँचो बरखे तँ खेत छोड़ाइए लेब।''

दायरानी पुछलखिन-

''तैबीच?''

डोमीकाका कहलखिन-

''अहाँकेँ जाबे धरि बरदास हएत ताबे धरि रहब नै तँ भाएकेँ नैहर समाद पठा देबनि।''

नैहरक नाओं सुनिते दायरानी बजली-

“अहाँ सभ जखनि चलिऐ जाएब तखनि घरमे कोठीए-भरली लऽ कऽ की करब। मसोमातक चुड़ी जकाँ किए ने ओकरो सभकेँ फोड़ि-फाड़ि कऽ फेकिए देबै।”

पत्नीक बातकेँ डोमीकाका ताड़ि गेला। कहलखिन-

“हँसी-ठठा छोड़ू एहेन गरूगर समए केना टपब, से विचार दिअ। आखिर अहूँ तँ अर्द्धांगिनीए छी किने?”

पतिक विचार सुनि विचारवान पत्नी जकाँ दायरानी कहलखिन-

“पच्चीस-तीस हजार रूपैए कट्ठाक जमीन अछि। दस-बारह कट्ठा बेचि लेब, भरना छूटि जाएत। बुझबै जे तीन बीघा जोतसीम नै अढ़ाइए बीघा अछि।”

अखाढ़क पहिल बर्खाक पहिल बून पड़लासँ जे माटिक सुगंध निकलैत ओहने सुगंध डोमीकाकाकेँ पत्नीक विचारमे लगलनि। मुस्की दैत आँखि-पर-आँखि गड़ा धैनवाद देलखिन।



जन्मतिथि

तीस बरख नोकरी केला उत्तर रविकान्त आइ.जी. पदसँ सेवा निवृत्ति भेला। जखनि कि रविशंकर आइ.जी.सँ आगू बढ़ि डी.जी.पी.क पदभार सम्हारलनि। साल भरि ऐ पदपर रहता। ओते नोकरीक अवधि बँचल छन्हि। तीन दिन रविशंकरकेँ पदभार सम्हारला उत्तर रविकान्तकेँ मन पड़लनि जे मीत-रविशंकरकेँ बधाइ कहाँ देलियनि। कारणो भेलनि जे पनरह दिन पहिनेसँ जे कार्य-भार दिअए लगलखिन ओ नोकरीक अंतिम दिन धरि नै फरिछौट भऽ सकलनि। मनमे एलनि जे मोबाइलेसँ बधाइ दऽ दियनि। मुदा एक्के काजक तँ भिन्न-भिन्न जुइत होइए। जुइतिक अनुकूले ने काज अनुकूल होइए, तँए मोबाइलसँ बधाइ देब उचित नै बूझि पड़लनि। ओना तत्काल जानकारीक रूपमे दऽ समए लेल जा सकै छल। मुदा से नै भेलनि। चाहक कप टेबुलपर रखि, दहिना बाँहि उठबैत पत्नी-रश्मिकेँ कहलखिन-

> “की ऐ बाँहिक शक्ति क्षीण भऽ गेल जे काज नै कऽ सकैए। मुदा...?”

रश्मि अपना धुनिमे छेली। ओना एक्के टुबलपर बैस चाहो पीऐ छेली आ मेद-मेदीन चिड़ै जकाँ मुँहमिलानी गपो-सप्प करै छेली। अपने धुनिमे मनो बौआइ छेलनि। एकठाम बैस चाह पीबितो मन दुनूक दू-दिशिया छेलनि। रश्मिक मनमे रविशंकरक पत्नी किरण नचै छेलखिन। जिनगी भरि सखी-बहीनपा जकाँ रहलौं, मुदा आइ? आइ ओ रानीसँ महरानी बनि गेली आ...? की हम ओइ बटोहिनी सदृश तँ ने भऽ गेलौं जेकरा सभ किछु छीनि घरसँ निकालि देल जाइ छै।
जहिना कोनो नीनभेर बच्चा माएक उठौलापर चहाइत उठैत, बेसुधिमे बजैत, तहिना पतिक प्रश्नक उत्तर रश्मि देलखिन-

> “ऐ बाँहिक शक्ति ओतबे काल रहै छै जेते काल शान चढ़ाएल हथियार ओकरा हाथमे रहै छै। नै तँ प्राणशक्ति निकलला उत्तर शरीर जहिना माटि बनि जाइ छै तहिना बनि कऽ रहि जाइए। हाथसँ हथिहार हटिते जिनगी हहरए लगै छै।”

पुन: चाहक कप उठा चुस्की लैत रविकान्त बजला-

“बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। खेनाइ-पीनाइ, खेलनाइ-धुपनाइ, घुमनाइ-फीरनाइ सभ संगे रहल। कहाँ कहियो मनमे उठल जे दुनू गोरेमे कोनो दूरी अछि। अपनाकेँ के कहए जे घरो-परिवार आ सरो-समाज कहाँ कहियो बुझलनि। मुदा आइ...?”

“मुदा आइ की?”

“इहए जे...। आइ बहुत दूरी बूझि पड़ि रहल अछि। बूझि पड़ैए जे जेना अकास-पतालक अंतर भऽ गेल अछि। कोन मुँह लऽ कऽ आगू जाएब, से निर्णये ने मन कऽ पाबि रहल अछि।”

“तखनि?”

“सएह ने मन असथिर नै भऽ रहल अछि। जिनगी भरिक संगीकेँ ऐहेन शुभ अवसरपर केना नै बधाइ दियनि। मुदा एते दिन बरबरिक विचार छल आब ओ थोड़े रहत। कहाँ ओ सिंह दुआरपर विराजमान केनिहार आ कहाँ हम देशक अदना एकटा नागरिक। की अपनाकेँ ओइ कुरसीक बुझी जइसँ हेट भेलौं। सीकपर रखल वा तिजोरीमे रखल वस्तु ओतबे काल ने जेते काल ओ ओतए रहैत। रविशंकर आइ ओतए छथि जेतए हमरा सन-सन जिनगी अंतिम छोड़पर पहुँचिनिहार हुनकर हुकुमदारी करैए। कोन नजरिए ओ देखै छल आ आइ कोन नजरिए देखता।”

रविकान्तक अन्तरमनकेँ रश्मि आँकि रहल छेली। मुदा जेते आँकए चाहै छेली तइसँ बेसी घबाएल माछ जकाँ अपन सड़नि बढ़ल जाइत रहनि। की आँखिक सोझक देखल झूठ भऽ जाएत। केना नै भऽ सकैए। दू गोटे बीचक बात तँ ओतबे काल धरि सत्य रहैए जेते काल धरि दुनू मानैए। काज थोड़े छी जे गरजि कऽ कहत जे तोरा पलटने हम थोड़े पलटि जाएब। मन असथिर होइते रश्मिक मनमे विचार जगलनि। दुखक दबाइ नोर छी। पैघ-सँ-पैघ दुख लोक नोरक धारमे बहा वैतरणी पार करैए। बजली-

“जहिना अहाँक मनमे उठि रहल अछि तहिना हमरो मनमे रंग-बिरंगक बात उठि रहल अछि। कहाँ रविशंकरक पत्नी किरण राजरानी आ कहाँ हम...? कहाँ राधा संग कृष्ण आ कहाँ...?

काल्हि धरि दुनू गोरे एकठाम बैस एक थारीमे खेबो करै छेलौं आ एक्के गिलासमे पानिओ पीऐ छेलौं, मुदा आइ संभव अछि? आखिर किए??''

हवाक तेज झोंकमे जहिना डारि-डारिक पात डोलि-डोलि एक-दोसरमे सटबो करैत आ हटबो करैत तहिना रश्मिक डोलैत विचार सुनि रविकान्त स्वयं डोलए लगला। एक तँ पहिनेसँ मन डोलि रहल छेलनि तैपर रश्मिक विचार आरो डोला देलकनि। अनभुआर जगह पहुँचलापर जहिना सभ हरा जाइत तहिना हराएल मोने रविकान्त बजला-

''कानसँ सुनितो, आँखिसँ देखितो किछु बूझि नै पाबि रहल छी जे की नीक की अधला। की करी की नै करी। मुदा साठि बरखक संगीकेँ एते दूर केना बूझब। मुदा लगो केना बूझब। साठि बरखक पथिक संगी जौं दू दिशामे चली तखनि केते दूरी हएत। मुदा साठि बरखक जिनगीओ तँ छोट नै भेल?''

रविकान्तक विचार सुनि रश्मि टपकि पड़ली-

''जिनगी तँ एक दिन, एक क्षण, एक घटनामे बदलि जाइए आ साठि-बरख की धो-धो चाटब।''

''तखनि?''

''सएह नै बूझि रहल छी। एतेटा जिनगी एक संग बितेलौं मुदा आइ जइ जिनगीमे पहुँच गेल छी तइ जिनगीक सम्बन्धमे किछु विचार कहियो नै केलौं।''

पत्नीक बात सुनि रविकान्तकेँ जहिना आन गामक चौबट्टी, तीनबट्टीपर पहुँचिते भक्क लगि जाइत, जइसँ पूब-पच्छिमक दिशे बदलि जाइत। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे लगलो भक्क ओहने चौबट्टी, तीनबट्टीपर खुजितो अछि। अपन भक्क तँ तेना भऽ कऽ नै खुजलनि, खाली एकटा प्रश्नेटा उठलनि जे बच्चासँ सियान भेलौं, सियानसँ चेतन भेलौं, चेतनसँ बुढ़ाड़ीक प्रमाणपत्र भेट गेल। हरबाह थोड़े छी जे अधमरुओ अवस्थामे बुढ़ाड़ीक प्रमाण नै भेटै छै। भेटबो केना करितै, प्रमाणपत्रक संग पेन्शनो ने अबै छै। मुदा मन किए धक-धका रहल अछि। जिनगीक चारिम अवस्था वानप्रस्तक होइ

छै, संयासीक होइ छै जे दिन-राति दौगैत दुनियाँक हाल-चाल जानए चाहैए। से कहाँ मन मानि कऽ बूझि रहल अछि। पतिकेँ गंभीर अवस्थामे देखि रश्मि टिपली-

> ‘‘अहाँक मनमे जे नाचि रहल अछि उहए हमरो मनमे नाचि रहल अछि। मुदा ईहो बात तँ झूठ नहियेँ छी जे जिनगीक संग बाटो बनै छै। आ बाटे संग बटोहीओ बाट बनबै छै?’’

रविकान्त पुछलखिन-

‘‘की बाट?’’

पतिक प्रश्न सुनि रश्मि विह्वल भऽ गेली। हेराइत संगीकेँ बाट देखाएब बहुत पैघ काज छी। मुदा लगले मनमे उठि गेलनि जे तखनि अपने किए एते बौआइ छी। कम-सँ-कम चाह पीऐ काल बैसारीओमे ऐ बातक विचार करैत अबितौं तँ औझुका जकाँ तँ नै बौऐतौं। जोतल आ बिनु जोतल खेतमे चललासँ जहिना पहिने धड़ियाइ छै, धड़िएला पछाति पतियाइ छै, पतिएला पछाति पेरियाइत पेरा बनै छै। वहए एकपेरिया बहुपेरिया बनैत चलै छै। रश्मि बजली-

> ‘‘अहाँ कौलेज छोड़ला उत्तर जिम्मा उठा सरकारी बाट पकड़ि साठि बरख पूरा लेलौं। ने कहियो जमीन दिस तकैक जरूरति महसूस भेल आ ने तकलौं। मुदा आइ तँ ओतइ उतरि आबि गेल छी जेकर रस्ता अखनि धरिक रस्तासँ भिन्न अछि।’’

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त मुड़ी डोलबैत आँखि उठा कखनो पत्नीक आँखिपर रखैत तँ कखनो उतारि धरतीपर दइत। आगिपर चढ़ल कोनो बरतनक पानि जहिना निच्चाँसँ ताउ पाबि ऊपर उठि उधियाइक परियास करैत तहिना रविकान्तक वैचारिक मन सेहो उधियाइक परियास करैत रहनि। मुदा जहिना पिजराक बाघ पिजरेमे गुम्हरि कऽ रहि जाइत, तहिना आइ धरिक जे मन रूपी बाघ एहेन शरीर रूपी पिजरामे फँसि गेल छेलनि जे जेते आगू मुहेँ डेग उठबैक कोशिश करथि ओते समुद्री वादल जकाँ आस्ते-आस्ते ढील होइत रहनि। आगूक झलफलाइत बाट देखि रविकान्त बजला-

> "विचारणीय बात जरूर अछि, मुदा बिनु बूझल जिनगीक संग तँ अहुँक जिनगी चलल। कहाँ केतौ बेवधान भेल। आइ जे कहलौं ओ तँ ओहू दिन कहि सकै छेलौं, जइ दिनसँ बहुत आगू धरि बढ़ि गेलौं। से तँ रोकि कऽ मोड़ि सकै छेलौं। मुदा आइ तँ जानल-बिनु (ज्ञानी-मुरूख) जानल दुनू संगे बौआए चाहै छी!"

पतिक बात सुनि रश्मि मोने-मन विचार करए लगली जे दुनियाँमे एहनो लोकक कमी नै अछि जेकरा जरूरति भरि लूरि-बुधि नै छै, मुदा ईहो तँ झूठ नै जे जेकरा छेबो करै ओइमे बेसी ओहने अछि जे या तँ उनटा वाण चलबैए वा नहियेँ चलबैए। तखनि सुनटा वाण केना आगू बढ़त जौं बढ़बे करत तँ केते आगू बढ़त जेकरा आगू दुश्मन जकाँ चौबगली उनटा वाण घेरने अछि? मुदा उपए की! शुद्ध तेल-मोबिल देल मजगूत इंजनो चढ़ाइपर दम तोड़ए लगै छै मुदा टुटलो चक्का बिनु तेलो-मोबिलक भट्ठा गरे दौगैत बिनु ब्रेकक गाड़ी जकाँ केतेकेँ जानो जइए आ केतेकेँ मुहों-कानो फोड़ैए। डेग आगू उठाएब जरूर कठिन अछि। मुदा लगले मनमे उठलनि जे जइ बाट पकड़ि आइ धरि चललौं जौं ओइ बाटकेँ छोड़ि दोसर बाट पकड़ि नव बटोही जकाँ विदा होइ, ई तँ संभव अछि। जहिना चिन्हार जगहक चोर पड़ा दूर देश जा अपन क्रिया-कलाप बदलि नव-मनुखक जिनगी बना जीबए चाहैत ओ तँ संभव छै...।

वाण लगल पंछी जकाँ पतिकेँ देखि अनुभवक सान्त्वना भरल शब्द निकालि रश्मि बजली-

> "जहिना अहाँक जिनगी तहिना ने हमरो बनि गेल अछि। जएह बुढ़ापा अहाँक सएह ने हमरो अछि। मुदा एकठाम तँ दुनू गोटे एक छी। एक्के दबाइक जरूरति दुनू गोरेकेँ ने अछि। तँए विचार दइ छी जे आब ने ओ रूतबा रहल आ ने ओकाइत, तखनि जानि कऽ जहरो-माहूर खा लेब सेहो नीक नै।"

रश्मिकेँ आगूक बात पेटेमे घुरियाइत रहनि तइ बिच्चेमे रविकान्त टिप देलखिन-

> "बेसी दुख तँ नै बूझि पड़ैए मुदा साठि बरखक प्रोढा अवस्था धरि हमरा सबहक नजरि नै गेल। सरकारीक पैघ जिम्मामे रहलौं। समायानुसार काज करितो मुदा अपन जिनगी तँ सुरक्षित रखितौं।

साठि बरख पछातिओ तँ चालीस बरख जीबैक अछि। की नै जनै छेलौं जे दरमाहा टूटि जाएत, जिनगीक आवश्यकता बढ़ैत जाएत, ओहन स्थितिमे कथी कएल जा सकै छै।''

पतिक विचारकेँ गहराइत समुद्र दिस जाइत देखि मुँहक दसो वाण साधि रश्मि छोड़लनि-

''अनेरे मनमे जुड़शीतलक पोखरिक पानि जकाँ घोर-मट्ठा करै छी। घोरे मट्ठा ने घीओ निकालैए आ अनहै सेहो निकालैए। संयासी सभ केना फटलाहा कमलक मोटरी बान्हि कन्हामे लटका लइए आ सौंसे दुनियाँ घुमैए। अहाँकेँ तँ सहजे चरि-चकिया गाड़ी चलबैक लूरिओ अछि।''

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त ओझरा गेला। एक दिस संयासीक बात बाजि कहि रहल छथि जे जहिना कानूनी अधिकारसँ जीवन-रक्षा होइत तहिना ने संयास अवस्था -वानप्रस्त- पवित्र मनुखक नैतिक अधिकार सेहो छी। दोसर दिस चरि चकिया गाड़ीक चर्च सेहो करै छथि जे भरिसक अपनो लगा कऽ कहै छथि। संगी देखि रविकान्त दहलाए लगला। जहिना कोसी-कमलाक बाढ़िमे भँसैत घरपर बैस घरवारी बंशीओ खेलाइए आ कमला-कोसीक गीतो गबैए, तहिना विह्वल भऽ रविकान्त बजला-

''हँसी-चौल छोड़ू। आब कोनो बाल-बोध नै छी। हम सभ अपन जीवन अपन सामाजिक जीवन नै बनाएब तँ देखिते छिऐ जे मनुख एक दिस चान छूबैए तँ दोसर दिस सीकीक वाणक जगह बम-वारूद लऽ मनुखक बीच केहेन खेल दुनियाँमे खेल रहल अछि। खैर, ओते सोचैक समए आब नै रहल। जेकर तिल खेलिऐ ओकरा बहि देलिऐ। अपन चलीस बरखक जिनगी अछि, ने हमर कियो मालिक आ ने हम केकरो मालिक छिऐ। भगवान रामकेँ जहिना अपन वानप्रस्त जीवनमे अनेको ऋृषि-मुनि, योगी-संयासी सभसँ भेँट भेलनि आ अपनो जा-जा भेँटो केलखिन। तहिना ने अपनो दोसराक ऐठाम जाइ आ ओहो अपना ऐठाम आबए। मुदा विचारणीय प्रश्न ई अछि जे रामकेँ के सभ भेँट करए एलनि आ किनका-किनका ओतए भेँट करए स्वयं गेला। ई प्रश्न मनमे अबिते गाछसँ खसल पघिलल

कटहर जकाँ मन छँहोछित्त भऽ गेलनि। खोंइचा-कमरी संग एक दिस तँ दोसर दिस कोह उड़ि-उड़ि कौआ आगू पहुँच जाइत। आँठी छड़पि-छड़पि बोन-झारमे बच्चा दइ दुआरे जान बँचबैत, तँ नेरहा उत्तर-दछिने सिरहाना दऽ पड़ल-पड़ल सोचैत जे जेते पकबह तेते सक्कत हेबह तँए समए रहैत भक्ष बना लैह नै तँ दुइर भऽ जाएब। रविकान्त सोचैत-सौचैत जेना अलिसाए लगला। हाफी भेलनि।

रविकान्तकेँ हाफी होइत देखि रश्मिक मनमे उठलनि जे हाफी तँ निनियाँ देवीक पहिल सिंह दुआरिक घंटी छी। भने नीक हेतनि जे सुति रहता नै तँ ऐ उमेरमे जौं नीन उड़लनि तँ अनेरे सालो-महिनेमे बदलि जेतनि। फटकि कऽ बजली-

''जेते माथ धुनैक हुअए वा देह धुनैक हुअए अपन धुनू। हमर जे काज अछि तइमे हम बिथूत नै हुअ देब। हमरा लिए तँ अहीं ने सभ किछु छी।''

तीन सए घरक बस्ती बसन्तपुर। छोट-नम्हर चालीस टा किसान परिवार शेष सभ खेत-बोनिहारसँ लऽ कऽ आनो-आनो रोजगार कऽ जीवन-बसर करैए। अनेको जाति गाममे। ओना मझोलका किसान बेसी। ओकरो दशा-दिशा भिन्न-भिन्न। तेकर अनेको कारणमे दूटा प्रमुख। जइसँ विधि-बेवहारमे सेहो अंतर। किछु जातिक लोक अपने हाथे हरो जोइत लैत आ खेतक काजो करैत जइसँ आमदनीक बँचतो होइत आ किछु एहनो जे अपने हाथसँ काज-उदम नै करैत तँए बँचत कम। कम बँचत भेने परिवार दिनानुदिन सिकुड़ैत जाइत। ओना गामक बुनाबटिओ भिन्न अछि। एक तँ ओहुना दू गामक बुनाबटि एक रंग नै अछि। तेकर अनेको कारणमे प्रमुख अछि, खेतक बुनाबटि, जनसंख्या जाति इत्यादि। बसन्तपुरक बुनाबटि आरो भिन्न। ऊँचगर जमीन बेसी निचरस कम अछि जइसँ गाछी-बिरछी सेहो बेसी अछि आ घर-घराड़ी, रस्ता-पेरा सेहो ऐल-फइल अछि।

बसन्तपुरमे दूटा नम्हर किसान बाँकी छोट। नम्हर किसान परिवार रहने गामोक आ अगल-बगलक आनो गामक लोक जेठरैयती परिवारो बुझैत आ जेठरैयत कहबो करैए। राजक जमीन्दार तँ नै मुदा गमैया जमीन्दार सेहो किछु गोटे बुझैत। तेकर कारण जे दुनूक महाजनीओ चलैत आ गामक झड़-झंझटिक पनचैतीओ करैत। कनी-मनी अनचितो काजकेँ गामक लोक अनठा

दैत। तइमे राधाकान्त आ कुसुमलाल दुनू गोटेक जमीनोक बुनाबटि आरो भिन्न अछि। चौबगली टोल सभ बसल अछि आ बीचक जे तीस-पैंतीस बीघाक प्लॉट छै ओ मध्यम गहींर अछि। जइसँ अधिक बर्खा भेने नाला होइत पानिक निकासी कऽ लैत, कम भेने चौबगलीक ओहासी एने रौदियाहो समैमे उपजिए जाइत। ओना दुनू गोरे बोरिंग सेहो गड़ौने छथि। तँए रौदियाहो समए भेने खेतक लाभ उठाइए लइ छथि। पच्चीस-तीस बीघाक बीचक दुनू किसान। मुदा दुआरपर बखारीओ आ पोखरिक महारपर दू-सलिया तीन-सलिया नारोक टाल रहिते छन्हि।

राधाकान्तो आ कुसुमलालोक परिवार बीच तीन पुश्तसँ ऊपरेक दोस्ती रहल छन्हि। ओना दुनू दू जातिक मुदा अपेक्षा-भाव एहेन जे चालि-ढालिसँ अनठिया नै बूझि पबैत जे दुनू दू जातिक छथि। किएक तँ कोनो काज-उदेममे एक-दोसराक बाले-बच्चे एक-दोसरठाम जाइत। ओना आने गामक कुटुम जकाँ दुनू परिवारक बीच कपड़ा-लत्ताक वर-विदाइक चलनि सेहो अछि। मुदा तैयो सराध-बिआह आदि परिवारिक काजमे दुनू दू जातिक परिचए देबे करैए।

नम्हर भुमकम होइसँ पहिने जहिना नहियोँ होइबला बच्चा सबहक जनम भऽ जाइ छै जइसँ दोस्तीयारेक संभावना अनेरो बढ़ि जाइए, मुदा से नै राधाकान्त आ कुसुमलाल दुनू गोटेकेँ एक्के दिन बेटा भेलनि। ओना कियो-केकरो ऐठाम जिगेसा करए नै गेलखिन तेकर कारण भेलै जे अपने-अपन घर ओझरा गेलनि। ओना पमरिया-हिजरनी महिना दिन धरि दौग-बड़हा करैत रहल। दाइओ-माइ छठियारमे रविदिन एकक नाओं रविकान्त आ दोसराक नाओं रविशंकर रखि देलकनि। अनेरे फूलक बोनमे टहलितथि आकि साँप-कीड़ाक बोनमे। बोन तँ बोने छी, दुनूक छी। तँए हरहर-खटखटसँ नीक दिनेकेँ पकड़ि लेलनि। ओना एकटा आरो केलनि जे दुनूमे सँ कियो जातिक पदवी नै लगौलनि।

सुभ्यस्त परिवार रहने तीन बरख पछातिए स्कूल जाइ जोकर भऽ गेल मुदा चारिम बरखमे दुनूक नाओं गामेक स्कूलमे लिखौल गेल। ओना जेहने सोझमतिया राधाकान्त तेहने कुसुमलालो। मुदा नाओं लिखबै दिन रविकान्तक पिता गेलखिन आ राधाकान्त अपने नै जा भायकेँ पठौलखिन आ रविशंकरक पित्ती एक बरख घटबी कऽ कऽ नाओं लिखौलखिन। ओना राधाकान्तकेँ

स्कूलपर जेबाक मनो ने होइ छन्हि। किएक तँ स्कूल सबहक जे किरदानी भऽ गेल ओ देखै जोग नै अछि। शिक्षक सभ विद्यार्थीकेँ नहियेँ पढ़ैले प्रेरित आ नहियेँ पढ़ैक जिज्ञासा जगा पबै छथि। छड़ी हाथे पढ़बए चाहै छथि।

एक तँ एक रंगाह परिवार तहूमे दोस्ती। दुनू गोरे तेहेन चन्सगर जे गामेक स्कूलसँ पटका-पटकी करैत निकलल। पटका-पटकी ई जे एक साल रविकान्त फस्ट करैत तँ दोसर साल रविशंकर ओना हाइ स्कूलमे थोड़े गजपट भेल, स्कूलक शिक्षक आँकि लेलनि जे केतबो ऊपरा-ऊपरी छै तैयो सोचन शक्तिमे दुनूमेक बीच अन्तर किछु जरूर छै। कौलेज तँ बिना माए-बापक होइए, केकरा के देखत। मुदा ऑनर्सक संग दुनू गोटे प्रथम श्रेणीमे निकलल।

आइ.पी.एस. कऽ दुनू गोटेक ट्रेनिंग आ ज्वानिंग सेहो भेल। दोस्तीमे बढ़ोतरी होइते गेल।



इमानदार घूसखोर

चुनमुन बाबूकेँ सभ जनैत, चाहे ओ आम आदमी होथि वा कचहरीक वकील, मुंशी, किरानी, चाहे इनटेलिजेन्स विभागक अफसर होथि वा प्रशासनिक, जे ओहन घूसखोर जिला भरिमे कियो नै छथि मुदा ईहो सभ जनै छथि जे जिनगीमे कहियो अपन इमान नै डिगौलनि।

जिला सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज चुनमुन बाबू छथि। ओना हुनकर असल नाओं सुरेन्द्र प्रसाद छियनि मुदा दादीक पहिल पोता रहने उपहार देल नाओं चुनमुन छियनि जे पछाति बाबू जोड़ा गेलनि। उर्फ कए कऽ अपनो चुनमुन बाबू लिखते छथि जे नेमप्लेटमे सेहो छन्हि। ओना बहुतो, प्रेमचंद आ दिनकरजी सन भेला जिनकर असली नाओंसँ बेसी लोक उपनामेकेँ जनै छन्हि।

बच्चेसँ चुनमुन बाबू इमानदारीक निर्वहन करैत आएल छथि जेकर फलाफल सेहो जीवितेमे भेट रहल छन्हि। पढ़ै-लिखैमे एते इमानदार रहला जे कहियो मौलिक रचना छोड़ि नोट-फोंटक सहारा नै लेलनि। जइसँ सभ दिन नीक रिजल्ट होइत रहलनि। ओना सुभ्यस्त परिवार रहने कहियो अर्थक अभाव सेहो नहियेँ भेलनि। मुदा अपनो पढ़ैमे एते इमानदारी रखै छला जे शिक्षकसँ परिवार धरिक नजरिमे रहला। एम.ए; एल.एल.बी. कए प्रथम श्रेणी जिला सत्र न्यायाधीश बनला।

चारि भाँइक बीच सए बीघासँ ऊपरे जमीन छन्हि जइमे तीन भाँइ नोकरी करै छथि आ एक भाँइ देवेन्द्र प्रसाद गिरहस्थी करै छन्हि। गिरहस्थीक अर्थ खाली खेतीए करब नै, बल्की परिवारकेँ संचालित करब सेहो होइत, जे छेलनि। नोकरिहरो भाँइ सभकेँ नै बूझि पड़नि जे खनदानी परिवारमे कनियोँ केतौ घून-घान आकि दिवार-गराड़ लगल अछि। परिवारक ऐ काजमे चुनमुन बाबूक विचार काज केलकनि। ओहए कहलखिन जे जखनि हम सभ तीनू भाँइ नोकरी करै छी तखनि खेत आ परिवार देवेन्द्रक भेलनि, जइ दिन हमसभ रिटायर भेलापर आएब तइ दिन अगिला विचार करब। मनमे ईहो रहनि जे जखने हम सभ खेत बाँटि लेब तखने ढेर तरहक बिहंगरा उठत। एक तँ ओहिना जमीन जाल छी तैपर भैयारीक तँ आरो महाजाल। जे सम्पति आइ धरि मान-प्रतिष्ठा बनल रहल अछि वहए गाड़ा-घेघ

बनि सभटाकेँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देत। जखनि जिनगीमे माने-प्रतिष्ठा नै तखनि जिनगीओ तँ एक्सपाइर डेटक दबाइसँ बेसी किछु नै।

एक तँ ओहुना समए निर्धारित अछि जे केते उमेरमे बेटाक बिआह आ केते उमेरमे बेटीक बिआह करैक चाही, तहूमे देहक लक्षण आगूमे ढाढ़ भऽ जाइ छै। से सुरेन्द्रक पिता गौड़ीनाथ सेहो केलनि। जखनि सुरेन्द्र प्रसाद बी.ए.मे पढ़ै छला तखने बिआह कऽ देलखिन। कहैले तँ ईहो अछि जे जखनि पढ़ि-लिखि अपना पएरपर ठाढ़ भऽ जाइ तखनि बिआह करैक चाही, मुदा जैठाम पएरपर ठाढ़ होइक बेवस्थे नै रहत तैठाम की सभ अविवाहित बनि बबाजीए भऽ जाए। कौलेजक अवस्थामे सुरेन्द्र प्रसाद रहथि मुदा मिसिओ भरि मनमे नै उठलनि जे अखनि बिआह अनुचित हएत। साहित्यसँ दिलचस्पी रहबे करनि तहूमे मध्ययुगीन साहित्यसँ बेसी रहलनि तँए मनमे चप-चपिए रहनि। पितोक मनमे कहियो दहेजक लोभ नै उठलनि जे नीक शिक्षा पाबि नीक नोकरी भेटलापर नीक दहेजो भेटै छै। सामान्य गिरहस्त परिवार जकाँ अपन दायित्व बूझि समैपर काज समेटि लेलनि किए मनमे उठितनि जे बेटाकेँ पढ़ैमे बाधा उपस्थित हेतनि। तँए मन खुशीसँ खुशिआइते रहनि।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखनि सुरेन्द्र पढ़ै छल तखनि जौंआ बेटी भेल। नैहरेमे पत्नी रहथिन। ओना साले भरिपर दुरागमन भऽ गेल रहनि। जौंआ बेटी देखि माएक मनमे तँ कनी सोगो पैसलनि मुदा नानीक मनमे तेते खुशी रहनि जे सोल्हो आना नातिने पाछू बेहाल रहए लगली। खुशीक कारण रहनि जे तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे अनेरे लोक बेटाक आशा करैए, तइसँ नीक बेटीए। जौं बेटीकेँ नाति नहियेँ देखत तैयो जौं दुनू बेटीक जिनगी-जान रहलै तँ कहियो माएकेँ थोड़े दवाइ-दारू आकि कपड़ा-लत्ताक दुख हुअ देत। अपनो पहिरन जौं दैत रहतै तैयो सभ दिन हराएले रहत। तहूमे तेहेन कपड़ा सभ बनि रहल अछि जे तीन साल तक नबे रहैए, आ चलत केते दिन तेकर कोनो ठीक छै। सुइटर बिनैक लूरि सिखा देबै, भरि बाँहिसँ लऽ कऽ अदहावाहिंक तेते दैत रहतै जे दस-दसटा साटि कऽ पहिरत। की करतै माघक जाड़। ओना सुरेन्द्रक माएक मनमे सेहो खुशीए रहनि जे भगवान अपना कोखिमे बेटी नै देलनि तँ की हेतै पोतीक कन्यादानक बाट तँ खुजिए गेल। जे नारी एकोटा कन्यादान नै केलक ओ चाहे जे हुअए मुदा माएक एक सूत्रमे कम जरूर रहत।

जिला सत्र न्यायालयक न्यायाधीश बनि जुआइन करए सुरेन्द्र प्रसाद आइ जेता। असीरवाद दैत माएओ आ पितो कहलखिन-

> ‘‘बौआ, नम्हर काजक भार उठबए जेबह तँए नम्हर बनि काज करिहऽ।’’

माता पिताक असीरवाद सुनि सुरेन्द्र किछु नै बाजल मुदा मनमे एकटा प्रश्न घुरियाए लगलनि, जे माए बूझि गेलखिन। तोसैत कहलखिन-

> ‘‘बौआ, सभ दिन एकार बनि पढ़लह-लिखलह मुदा अपन परिवार अपने आगू नीक होइ छै तँए पत्नीओ आ चारू कनटिरबीओकँ संगे नेने जाह।’’

सोझहामे गौड़ीनाथकँ देखैत तँए सुरेन्द्र किछु बाजए नै चाहैत मुदा मन गुनगुनाइत जे माए बूझि गेलखिन। बजली-

> ‘‘बौआ, अपन बच्चाकँ अपने देख-रेखमे पढ़ाएब बेसी नीक होइ छै, सेहो हेतह, आइ-काल्हि देखै छिऐ दूधे लगसँ बच्चा हटि जाइ छै। दोसर हमरा सबहक आशा केते दिन करै छह, सेहो सीखल नै रहतह तँ अगिलाकँ कथी सिखेबहक। मनमे होइत हेतह जे पिता की कहता मुदा नोकरीक अर्थ तँ ई नै ने होइ छै जे गामे छोड़ि देब, परिवारे छोड़ि देब। मौका-मुनासिब अबैत-जाइत रहिहऽ। बेटा धन छिअ, तोरा माल-जाल जकाँ थोड़े डोरी बान्हि रखल जाएत। ई होइत हेतह जे परिवार टूटि जाएत, से भ्रम हेतह। भदवारि मासमे हिमालयक पानिक मिलान समुद्रसँ भऽ जाइत अछि जे अनदिना माने आन मौसिममे धार कमजोर वा सुखने छूटि जाइत अछि मुदा फेर भदवारिमे की देखै छहक। परिवार एक धार छी जेकर प्रवाह स्वच्छ पवित्र बनि अनवरत सामाजिक दिशामे बहैत रहए यएह ने भेल। छाती सक्कत कए कऽ घरसँ जाह।’’

अखनि धरि सुरेन्द्र प्रसाद छाती सक्कत करैक अर्थ खाली कहावते धरि बुझै छल मुदा माएक असीरवादक शब्द मनमे औँढ़ मारलकै। छाती सक्कत करब बाता-बातीमे सक्कत करब आकि काजमे सक्कत करब, विचार सक्कत करब आकि पवित्र विचार सक्कत करब, पवित्र विचार संग पवित्र

जिनगी सक्कत बना चलब आकि सक्कत मनुख बनब। समुद्रक पानि जकाँ जेते डुबकुनियाँ मारैत तेते अथाह दिस डुमल जाइत। अनासुरती मनमे उठलै, आएल शुभक लगनमा शुभे हे शुभे...। माएक शुभ बात सुनि शुभेक्षु नजरिसँ दलदलाइत सुरेन्द्र बाजल-

> ''माए, तोहर असीरवाद शिरोधार्य अछि। मुदा समस्यो तँ जिनगीक बाधक बनि दानव जकाँ अबैत रहै छै।''

ओना सुरेन्द्र खुशीमे दहैल गेल छल जइसँ ऐ विचारपर नजरि नै गेलै जे बड़का जंगलक कातमे पहिने झाड़े-झूड़ रहै छै जइमे छोट-छोट जानवर बास करैए। तहिना ने मनुक्खोक बोन छै जइमे पहिने छोटका जीव-जन्तु रहै छै।

चुपचाप भेल पिताक मनमे नचैत जे जुड़शीतलक अछींजल जकाँ, घरसँ निकलि दोसराक सेवामे जा रहल अछि की ओकरा बसौत आकि उजाड़त। मुदा बिनु गहन लगने अनुमाने ने हएत।

जहिना कौलेजक पहिल दिन, सासुरक पहिल भेँट, दोस्तीक पहिल मिलन भेने स्वत: हृदए डगमगाए लगैत, तहिना सुरेन्द्रो प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचिते हुअ लगलनि। नव-नव संगी सभ आबि-आबि भेँट करए लगलनि। संगीओ बेसी ओहन नै, जे समतूल हुअए। मुदा सुरेन्द्र अवाक। सोझहे नमस्कारक उत्तर नमस्कारमे दैत रहला। मात्र हाजरी बनाएब छेलनि तँए काजक भारो बेसी नहियेँ। संगी सभ कमिते असकरे रहि गेला। मनमे परिवार आ दरमाहा, सोझहा-सोझही संगे उठलनि। दरमाहा तँ सीमित परिवारक स्तरक हिसाबसँ बनै छै, तहूमे जे देश जेहेन रहल ओकर ओइ तरहक बनै छै। पाँच गोटेक परिवारमे छह गोटे अखने छी। तहूमे चारिटा बेटीए अछि। समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सवारी कसबे करत। घर भाड़ा, बिजली-पानि, इन्कम टेक्स इत्यादि कटिए जाएत तखनि हाथमे केते औत? महगी अपना चालिए चलबे करै छै। तहूमे तेहेन लफड़ल डेग पकड़ि नेने अछि जे मध्यवर्गीय जीवन धारक मोनि जकाँ चकभौंर लऽ रहल अछि। मन विषसँ बिसाइन हुअ लगलनि। ओना काज नै रहने कार्यालय समैसँ पहिने छोड़ब पहिल दिन उचित नै हएत। कुरसीक मुरेड़ापर मुड़ी अँटकौने अकास दिस देखैक कोशिश करैत रहथि मुदा कार्यालयक छतमे रोकाएल रहनि।

चारि बजे कार्यालयसँ निकलि सुरेन्द्र प्रसाद सोझहे डेरा दिस विदा भेला। रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी रस्तामे होइत। किछु निको किछु अधलो। परदेशमे पति कमाए एला, से खुशी पत्नी सुनैनाकेँ रहबे करनि। चारू बेटीक बीच सुनैना यक्षिणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिक्षा बेर-बेर नजरि उठा-उठा करैत। ओसारपर पतिकेँ पहुँचिते सुनैना मुस्की भरल नजरिक तीर छोड़लनि। बौड़ाएल मन सुरेन्द्र प्रसादक। जिनगीक समस्यासँ बौड़ाएल। ओना कियो खुशीओसँ बौड़ाइत अछि तँ कियो दुखोसँ। मुदा सुरेन्द्र बौड़ाएल रहथि अपन आगूक जिनगीक समस्यासँ। अपनाकेँ संयमित करैत बेटीक हाथ पकड़ने कोठरी पहुँचला। पत्नी चाह अनलकनि। दुनू गोटे चाह पीऐत गप-सप्प शुरू केला। अपन आमदनी देखबैत सुरेन्द्र बजला-

"अपन परिवार भेल जेकर आमदनी सत्तरि हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा, इन्कम टैक्सक संग केतेको जमा करैक सूत्र लगल अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?"

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलनि तहिना पत्नी भोली-बौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली-

"देखू हमर कुल-खनदान एहेन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मास पछाति पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि बाप थोड़े बूझत। आकि कहियो किछु कहबो केलौं।"

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद पुछलखिन-

"कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोटे फुट-फुट इसकूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धीया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखनि देह छिपौने काज चलत?"

सुनैना अपनाकेँ कमजोर पबैत बजली-

"अहाँक जे विचार अछि से बाजू जे अनुकूल हएत मानि लेब जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि लेब।"

एक गंभीर चिंतक जकाँ सुरेन्द्र बजला-

''जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँ हाथमे दऽ देब। अपना विचारे परिवार चलाएब।''

नोकरीकेँ जिनगीक धार बूझि परिवारक सवारी नावपर चढ़ा भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलनि जे एक बेर पत्नीकेँ पूछि लियनि जे केना घर चलाएब मुदा मनकेँ मोने रोकि कहलकनि जखनि कुल-खनदानक रक्षक छथि तखनि किछु बाजब उचित नै हएत। अपना लेल सोचब नीक हएत। चलैत धारमे नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करए पड़ै छै। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत, तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जहिना समाज अपन रोग अपने अराधि लेलक जइसँ सभ रोगा गेल तखनि अपन रोग के देखत। मुदा एहनो तँ रोग होइते अछि जाधरि दोसर नै बुझैत ताधरि दोसरकेँ नै कहल जाइत। कमा कऽ परिवारमे आनब पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देखि चस्कबे करती, जेते चस्कती तेते लोक देखबे करत। कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक बिआह-दान -पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतारैक अवस्था धरि- जौं नै कऽ लेब तखनि कोन मुहेँ समाजमे जीब। नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे नै करैए, तेहने जौं उपए होइ तँ नीक हएत। नजरि काज दिस बढ़लनि। कोन एहेन कोर्ट-न्यायालय अछि जइमे काजक बोझ नै पड़ल अछि। आनसँ भिन्न अपन पहिचान बनबैक प्रश्न अछि। मनक उत्साह जगलनि। कार्यालय संग डेरामे काज करब। काज बढ़ौने जौं किछु हथियाइओ लेब तँ ओते अनुचित नै हएत। जौं से नै करब तँ परिवार साधारण नै असाधारण रूपमे ठाढ़ भेल अछि। खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ धरि तँ बेटे-जकाँ हएत। पढ़ाइ समाप्त होइते वा होइपर रहिते बिआहक भूत कपारपर चढ़ि जाएत। ई काज केकर हेतै? तखनि? जाधरि प्रतिकूलकेँ अनुकूल बना नै चलल जाएत ताधरि सड़क परहक गाड़ी जकाँ दुर्घटनाकेँ के रोकत। जहिना ओकाइतसँ भारी ढेंगकेँ बाँसक जोगार लगा उनटा-पुनटा घुसकौल जाइत अछि तहिना उनटबै-पुनटबैक जोगार करए पड़त। मुदा अनुचित रूपमे? नहि! कदापि नै!! तखनि? हँ तखनि अछि जे अपन काज की अछि? यएह ने जे लोकक झगड़ाक मुकदमाक निर्णए करब। जेकर नोकरी करै छिऐ ओकर काज अनकासँ बेसी करब। यएह जिनगीक पहिचान हएत किने। अनेरे किए एते मुकदमा कोर्टमे पड़ल अछि। महिनामे बीसटा मुकदमाक फैसला करब।

जहिना सभकेँ सभ ओझरबै पाछू लगल रहैत अछि तहिना ने कोटो-कचहरी भऽ गेल अछि। ओना काज करैक दिशा सभकेँ निर्धारित अछि तखनि किए ने अपन बाट पकड़ि तेज गतिए चलब। संकल्पित होइत मन ठमकलनि। केकर फैसला करैक अछि? ओकरे ने जे अपन बात अपने नै बूझि अनेरे ओझराइत आबि गेल अछि। एकक ओझरीसँ दोसर ओझराएल अछि। जहिना रग्गड़ करैत आबि गेल अछि तहिना हमहूँ दू-चारि रन्दा चला आरो चिक्कन कऽ देब। बीसटा केसक फैसला मासक काजक संग डेढ़ लाखक ऊपरी आमदनी सेहो करब अछि। दुनू पार्टीसँ पाइ लेबै। जेकरा पक्षमे हेतै ओ अपने भेल आ जेकरा विपक्षमे हेतै ओकर घुमा देबै। केकरो संग अनुचित नै करब। मुदा लोको तँ शेतानक चरखीए अछि, जे विचारलौं से चलए देत कि नै? किए ने चलए देत? चरखीकेँ चरखा बना घुमाएब तखनि अनेरे ने सभ सुधरि जाएत। मुदा चरखीकेँ चरखा बनत केना? हँ किए ने बनत? जखने काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथरि लग पहुँचत। हँ मास-दू-मास फोंक जाएत मुदा तेसर मास अबैत-अबैत तँ गर पकड़िए लेत। जखने केसक बहस करा फैसला करैक स्थितिमे औत, तखने ने ससारैक गर भेटत। तीन-तीन दिनपर तारीख देबै अनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कऽ लिखाइ-फीस जमा करत।

चुनमुन बाबूक दस बरख नोकरी पूरि गेलनि। अनढड़न फुलवाड़ीक फूल जकाँ चारू बेटी खिलए लगलनि। तैपर अनढड़न भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा आरो देलकनि। मुदा पति-पत्नीक बीच सिनेहमे कमीक पेंपी पोनगए लगलनि। सुनैनाक मन कनैत जे भगवान तेते धीया-पुता दऽ देलनि जे के केतए बौआएत तेकर ठीक नै। तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे निहत्था बाप-माए बेटीक पार-घाट केना लगौत। अपने (पति) कहियो एक पाइ अनुचित नै कमाइ छथि की समाज हमरा छोड़ि देत? बिनु दहेजक बिआह बेटी सबहक हएत? केतएसँ औत? ओना पत्नीक मलिन चेहरा देखि चुनमुन बाबू परखैक परियास करै छला मुदा लाख समस्याक बीच सुनैना पति लग पत्नीए जकाँ रहै छेली। काजक भार पतिपर छेलन्हिहेँ। बेसी समेओ ने भेटै छेलनि जे बेसी बातो करितथि।

दोसर साँझ, चाह नेने सुनैना पतिक हाथमे दैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। जहिना देवालयमे भक्त किछु याचना करए ठाढ़ होइत तहिना सुनैना

भऽ गेली। सुरेन्द्रक मनमे मिसिओ भरि जिनगीमे प्रतिकूलता नै। एक घोंट चाह पीब सुरेन्द्र पुछलखिन-

“मन मन्हुआएल देखै छी?”

ढलान पाबि जहिना पानि ढलकि जाइत तहिना ढलकैत सुनैना बजली-

“एक तँ भगवान बेइमान भेला जे केकरो रोटीओपर ने नून केकरो बोरे-बोरे नून दइ छथिन। नअ-नअटा बाल-बच्चाक परिमार्जन करब नान्हिटा खेल छी।”

सुनैनाक विचार मुँहसँ निकलबो नै कएल छेलनि तइ बिच्चेमे सुरेन्द्र बजला-

“खेल-खेल खेलौं।” कहि चुप भऽ गेला। आँखि उठा पत्नीक आँखिपर अँटकबए चाहै छला मुदा रोगाएल-सोगाएल-पीड़ाएल सुनैनाक आँखिमे सुखाइत जिनगीक बालुक बुरजा छोड़ि आर किछु ने देखि पड़ै छेलनि।



पटियाबला

जेठ मास, दिनक तीन बजैत। देखैमे रातिसँ बहुत बेसी नम्हर दिन बनैत मुदा जहिना कायाक संग माया आ रौदक संग छाया चलिते रहैत तहिना नम्हर दिनक संग धूपो एते बढ़ि-चढ़ि जाइत जे श्रमशक्तिक दौड़मे मझोलको दिनसँ छोट बनि जाइत। सुरूजक शक्तिवाण एते उग्र रूप पकड़ि लइत जे धरतीओ धधड़े जकाँ आगि उगलैपर उताहुल भऽ जाइत। धरती-अकास बीच लुलुआएल लू एक-ताले बाधमे नचैत। जेना राम-रावणक बीच वा महाभारतक सतरहम दिन भेल, तहिना। तेहने तीरसँ बेधित सुलेमान बेहोश भेल ओइ चिड़ै जकाँ श्यामसुनरक दरबज्जापर आबि दाबामे साइकिल ओँगठा ओसारक भुँइएपर चारू नाल चीत खसिते आँखि मूना गेलै। जहिना बन्न आखि साँस चलैत अधमरूक होइत तहिना भेल। श्यामसुनरकेँ बेरूका तीन बजेक चाह पीबैक अभ्यास। बगलक घरक ओसारपर चाह बनबैत रहथि तँए साइकिलक खड़खड़ाएबसँ नै परेखि सकला जे वाण लगल बाझ जकाँ कियो छथि। साइकिलक बात सामान्य तँए समुद्र उपछबसँ नीक जे जइ काजमे हाथ लगल छी ओकरा पूरा ली। सएह केलनि। चाह पीऐत दरबज्जापर अबिते देखलनि जे ई अधमरू भेल के छिआ। मुँह निहारलनि तँ चिन्हल चेहरा सुलेमानक। आँखि बन्न, कुहरैत मनबलाक तँ बोलीओ अस्पष्टे जकाँ भऽ जाइ छै, तँए बाल-बोध वा पशु जकाँ दुख बूझब कठिन भऽ जाइत, तथापि छाती थीर करैत श्यामसुनर टोकलखिन-

''सुलेमान भाय, सुलेमान भाय?''

पानिक तहक अवाज जहिना ऊपर नै अबैत, मुदा पानिक ऊपरक अवाज कम्पित होइत, लहरिक अनुकूल तेतए धरि जाइत जेतए ओ पूर्ण अस्थिर नै भऽ जाइत। श्यामसुनरकेँ उत्तर अबैसँ पहिनहि मन पड़ि गेलनि भिनसुरका अवाज। ''पटिया लेब पटिया, पटिया लेब पटिया।''

मुदा लगले मनकेँ नअ घंटा उचटि कहलकनि। भरिसक रौदक चोट आ मेहनतिक मारिसँ एते बेथा गेल छथि जे आँखि खोलैक साहसे नै होइ छन्हि। चिन्हल दरबज्जा आ चिन्हार बोली अकानि करोट फेड़ैत अध-खिल्लू आँखि उठा सुलेमान बाजल-

“श्याम भाय, केकर मुँह देखि घरसँ निकललौं जे एको पाइक बोहनि नै भेल। उधार-पुधार ऐ उमेरमे खाएब नीक नै बुझै छी, कखनि छी कखनि नै छी, केकरो खा कऽ मरब तँ कोसत। जलखै खा कऽ जे निकललौं, सहए छी। खाली पेटमे पानिओ भोंकबे करै छै। पेटमे बगहा लगैए।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरकेँ भेलनि जे भरिसक एकरे बिलाइ कुदब कहै छै। भुखाएल बिलाइ जहिना छटपटाइत अपनो बच्चाकेँ कंठ चभैले तैयार हुअ लगैत तहिना भरिसक होइत हेतै। मुदा रोगो तँ असान नै एक संग केते तीर लगल छन्हि। कोनो घुट्ठीमे तँ कोनो बाँहिमे कोनो छातीमे तँ कोनो माथमे। भूख-पियास, थकान इत्यादिसँ बेधल छथि। तोसैत श्यामसुनर कहलखिन-

“सुलेमान भाय, आँखि नीक नहाँति खोलू। एक्के कप चाह बनौने छेलौं जे अँइठ भऽ गेल अछि। बाजू पहिने चाह पीब आकि खेनाइ खाएब?”

पाश भरल बातमे आस लगबैत सुलेमान बाजल-

“भाय, ऐ घरकेँ कहियो दोसराक बुझलौं जे कोनो बात बजैमे संकोच हएत। देहमे तेते दर्द भऽ रहल अछि जे कनी पीठपर चढ़ि खुनि दिअ पहिने, तखनि बूझल जेतै।”

सए घरक जुलाहा परिवार गोधनपुरमे। झंझारपुरसँ पूब सुखेत पंचायतक गाम गोधनपुर। जैठाम मरदे-मौगीए मिलि बिछानक कारोबार करैए। गाम-गामसँ मोथी कीनि, अपनेसँ सोनक डोरी बाँटि बिछान बीनि, उत्तरमे अंधरा ठाढ़ी, दछिन घनश्यामपुर, पूब घोघरडीहा आ पछिम मेंहथ-कोठिया-रैमा धरिक बजार बना कारोबार करैए। ओना जुलाहा खाली गोधनपुरे टामे नै आनो-आनो गाममे अछि मुदा बिछानक कारोबार गोधनपुरे टामे होइत। शहर-बाजरमे जहिना रंग-बिरंगक वस्तु-जात बिकाइत तहिना गामो-समाजक बजारमे चलैए। जइमे रंग-बिरंगक वस्तु-जातक बिकरी-बट्टा होइए। किछु वस्तुगत अछि आ किछु भावगत।

सएओ परिवार अपन-अपन क्षेत्र बना भिनसरे जेर बना-बना निकलि जाइए। ओना कहियो काल सुलेमानो जेरेमे निकलैत मुदा, आइ असगरे

निकलल छल। अपनामे सीमाक अतिक्रमण करबो करैत आ नहियोँ करैत। खुल्ला बजार तँ ओहए ने टिकाउ होइत जे बिसवासू वस्तुक बिकरी करए। नै तँ घटिया माल आ बेसी दाममे वस्तुक बिकरी हएत। मुदा गोधनपुरक पटियाबलामे से नै एकरंगाह वस्तु एक रंगाहे दाममे बिकाइत।

पीठ-सँ-घुट्ठी धरि जखनि श्यामसुनर दस बेर बुलला तखनि सुलेमान पड़ले-पड़ल बाजल-

> ‘‘भाय, आब उतरि जाउ। एह, अरे बाप रे! ओइ जिनगीसँ घुरलौं। मन हल्लुक भेल।’’

कहि फुड़फुडा कऽ उठि बैसैत बाजल-

> ‘‘भाय, अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं। आँखि चोन्हिया गेल छेलए। सौंसे अन्हारे बूझि पड़ए लगल छेलए। ई तँ रच्छ रहल जे दरबज्जाक पछिला देबालक ठेकान रहल, नै तँ केतए बौआ कऽ मरितौं तेकर ठीक नै।’’

श्यामसुनर सुलेमानक बातो सुनैत आ मोने-मन विचारबो करैत जे हो-न-हो दरबज्जापर मरि जाइत तँ मुँहदुस्सी चिड़ै जकाँ लोक केना मुँह दुसैत तेकर कोनो ठीक नै। जैठाम घरपर चिड़ै बैसने घरक सभ किछु चलि जाइ छै तैठाम की होइत! मुदा जइ दुर्गतिक दुर्गपर सुलेमान पहुँच गेल छल ओइठाम मनुखक मनुखपना केहेन होइ, ईहो तँ अछि। सत्तरि-पचहत्तरि बरखक सुलेमान सभ दिन पचास किलो मीटर बिछानक बोझ लऽ कऽ टहलि बेचि जीविकोपार्जन करैत अछि, ओहनकेँ की कहल जाए। जे खून-पसीना एकबट्ट कऽ जीब रहल अछि। ओकर अंतीम बोलो कियो परिवारक सुनि पबितै? मन ठमकिते पुछलखिन-

> ‘‘सुलेमान भाय, आब केहेन मन लगैए, किछु खाइ-पीबैक इच्छा होइए?’’

मुस्की दैत सुलेमान कहलकनि-

> ‘‘भाय, आब जीब गेलौं। आब खेबे करब किने। किछु दिन औरो दुनियाँक खेल-बेल देखि लेब।’’

जहिना गुड़-घाउक टनक जेते बहैसँ पहिने रहैत अछि मुँह बनि निकलिते किछु बेसीआ जाइत मुदा मूल-खिल निकलला पछाति सुआस पड़ए लगैत, जइसँ रूप बदलि जाइ छै, पाशा आस लगबए लगै छै, तहिना सुलेमान बाजल-

''भाय, सरेलहा भात-रोटी खाइक मन नै होइए।''

''तखनि?''

''टटका जे गहुमक चारिटा रोटी भऽ जाइत तँ मन तिरपित भऽ जइतए। ताबे नहा सेहो लेब।''

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर कहलखिन-

''कल देखल अछि? बाल्टीन-लोटा आनि दइ छी, नीक नहाँति नहा लेब।''

श्यामसुनरक बात सुनि हँसैत सुलेमान बाजल-

''भाय, एना किए बजै छी। पचासो दिन पानि पीने हएब, आ केतेको दिन नहेने हएब, तखनि कल देखल नै रहत। लोटा-बाल्टीन कथीले आनब, आँगनमे काज हएत। हम सभ तरहक लूरि रखने छी ओहुना ठाढ़े-ठाढ़ वा बैस कऽ नहा लइ छी आ जौं सासुर-समधियौर गेलौं तँ लोटो-बाल्टीन लऽ कऽ नहा लेलौं। ओना, भाय की कहूँ लोको सभ अजीब-अजीब अछि। ने माल-जाल जकाँ नागरि छै आ ने मनुखपना छै। एक दिन अहिना रौदमे मन तबधि गेल। एक गोरेक दरबज्जापर कल देखलिऐ, साइकिल अड़का नहाइले गेलौं। मन भेल पहिने चारि घोंट पानि पीब ली। तही बीच एकटा झोंटहा आबि झटहा फेकलक जे कल छूबा जाएत।''

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरक मनमे वाल्मीकि आबि गेलखिन। तमसा नदीक तटपर वाण लगल क्रोंच पक्षी। मुदा अपनाकेँ सम्हारि कहलखिन-

''अहूँ सुलेमान भाय कोन खिस्सा भुखाएलमे पसारै छी। झब दनि नहाउ, आँगनमे ताबे रोटी बनबबै छी।''

सुलेमान कल दिस आ श्यामसुनर आँगन दिस बढ़ला। जहिना भोजनक पूर्व स्नानसँ खुशी होइत तहिना सुलेमान कल दिस बढ़ला। मुदा श्यामसुनरक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलनि। पहिल प्रश्न उठलनि जे मृत्युसज्जापर पड़ल यात्रीकेँ वा फाँसीपर चढ़ैत यात्रीकेँ पूछि भोजन देल जाइत अछि तैठाम अपना मुहेँ सुलेमान कहलक जे गहुमक रोटी। बिनु मेजनक गहुमक रोटी ओहने होइत जेहेन डम्हाएल मालदह आम। जौं सोझहे रोटी कहैत तँ मरूआ रोटीक मेजन अचार, पिआजु, नून-मिरचाय, तेल सेहो होइत, मुदा टटका गहुमक रोटी केहेन हएत? सभकेँ अपन-अपन प्रेमी होइ छै। जौं से नै होइ छै तँ जुड़शीतलमे बसिया अरबा चाउरक भात लेल पहिने लोक तरूआ-भुजुआ किए बना लइए मुदा तँए कि मोटका चाउरक बसिया भातक प्रेमी नून-पिआजु-अँचार नै हेतै। मुदा जेते जल्दिबाजीक जरूरति अछि -जल्दिवाजी ऐ लेल जे भुखाएल पेट स्नान पछाति दोसर रूप पकड़ैत- तइमे रसदार तरकारी बनाएब संभव नै, तँए दूटा घेरा पका चटनी आ रोटीसँ काज चलि सकैए। सएह केलनि।

स्नान कएल नोतहारी जकाँ दरबज्जापर अबिते सुलेमानक भुखाएल मन प्रेमी भोजनक बाट तकए लगल। बेर-बेर आँगन दिस तकैत।

आगूमे थारी देखिते सुलेमानक मन सौनक सुहावन जकाँ हरषि उठलनि। रोटीक पहिल टूक चटनीक संग मुँहमे अबिते दँतिया कऽ दाँत पकड़ि जीह रस चूसए लगलनि। रस पबिते बिहुँसैत सुलेमान बाजल-

> ''भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छै। छै सबटा अपना मनमे। जाबे आँखि तकै छी ताबे बड़ बढ़ियाँ, आँखि मुनिते दुनियाँ धिया-पुताक खेल जकाँ उसरि जाइ छै। अपने मुइने सृष्टिक लोप भऽ जाइ छै।''

सुलेमानक गंभीर विचार सुनि श्यामसुनरक मनमे उठलनि जे भोजैत जौं भोजहरिक रसगर बात सुनै छै तँ ओ आरो बेसी आनन्दित होइ छै। मुदा अपन बात तँ बिनु प्रश्न पुछने नै हएत। द्वैतमे दुनियाँ हेराएल छै। बाढ़ि आएल धार जकाँ केतए-सँ-केतए भँसिया जाएत तेकर ठेकान रहत। श्यामसुनर पुछलखिन-

> ''सुलेमान भाय, ऐ उमेरमे एते भारी काज किए करै छी?''

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जिनगीक हारल सिपाही जकाँ तरसैत बाजल-

"भाय, जखनि अहाँ घरक बात पुछिए देलौं तखनि किए ने सभ बात कहिए दी।"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बूझि गेला जे बरियातीक भोज हुअ चाहैत अछि, से नै तँ चरिया दियनि-

"सुलेमान भाय, कहने छेलौं जे गरम-गरम रोटी खाएब सराएल नै खाएब आ अपने गपक पाछू सरबै छी?"

श्यामसुनरक बात सुनि हाँइ-हाँइ दूटा रोटी आ अदहा चटनी खा एक घोंट पानि पीब सुलेमान कहलकनि-

"भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भंडारसँ हाट धरिक कारोबार छल।"

श्यामसुनरक मनमे उठलनि- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक केतौ ठेकान नै। भरि पेट अन्न नै, फटलो वस्त्र नै, छुच्छहो घरमे सबुर केना फड़ि जाइ छै!! सुलेमानक परिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर जिज्ञासा केलनि-

"ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ। मेहनतो आ आमदोक खियालसँ तँ निके छेलए?"

बामा हाथ चानिपर ठोकैत सुलेमान कहलकनि-

"गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भंडारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे की करितौं।"

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन-

"कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?"

सुलेमान कहलकनि-

"पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।"

डुमैत नाव देखि जहिना नैया -नाविक- निराश भऽ जाइत जे जौं जिनगी बँचिओ जाएत, तँ जीब केना। तहिना सुलेमानक तरसैत मन काँपए लगल।

आगू बढ़बैत श्यामसुनर पुछलखिन-

"ई तँ धिया-पुताक खेल भेल, जाए दियौ।"

श्यामसुनर सुलेमानकेँ तँ कहि देलखिन मुदा मन ठमकलनि। काजक रूपमे समाज बँटल अछि। ओइ काजक लूरि तँ ओकरा लेल सुरक्षित अछि। जौं कागजी ज्ञानक अभावो रहतै आ विकसित बेवहारिक ज्ञान देल जाइ तँ की घर-घर पाठशाला नै बनतै। जरूरति छल समायानुकूल ओकरा बनबैक। से नै भेल।

तेसर रोटी खाइत सुलेमान बाजल-

"भेल तँ सहए, मुदा परिवार बिलटि गेल।"

परिवारक बिलटब सुनि श्यामसुनर आगू बढ़ि पुछलखिन-

"अपन परिवारक कारोबार मरि गेला पछाति की केलिऐ?"

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि उत्साहित होइत सुलेमान बाजल-

"की केलिऐ! हमरो जुआनीक उठानि रहए। मनमे अरोपि लेलिऐ जे दुनियाँमे केतौसँ कमा कऽ परिवार जीवित रखबे करब।"

सुलेमानक संकल्पित बात सुनि वाह-वाही दैत श्यामसुनर पुछलखिन-

"दोसर कोन काज केलिऐ?"

सुलेमान कहलकनि-

"गाम-गामक कपड़ा बुनिनिहार बम्बई चलि गेलिऐ।"

"बम्बईमे केतए?"

"भिवंडी। भिवंडीमे लूम चलै छै। ओइमे कपड़ा बुनाइ होइ छै। गमैया लूरि तँ रहबे करए, लगले नोकरी भऽ गेल। ओना मजदूरी रेट कम रहए मुदा काजक माप सेहो रहै। जेते करब तेते हएत।

जुआन-जहान रहबे करी दिनकेँ ने दिन आ रातिकेँ ने राति बुझिऐ। खूब कमेलौं।''

श्यामसुनर पुछलखिन-

''तखनि ओकरा किए छोड़ि देलिऐ?''

श्यामसुनरक बात सुनि सुलेमानकेँ ओहिना भेलनि जहिना चोटेपर दोहरा-तेहरा कऽ चोट लगलासँ होइत। कुम्हलाएल फूल जकाँ मुँह मलिन आ ठोरमे फुड़फुड़ी आबए लगलनि नम्हर साँस छोड़ैत बाजल-

''भाय, चारि साल खूब कमेलौं, पाँचम साल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नै उठल केतेकेँ जान गेल, केतेकेँ बहु-बेटी छिनाएल, केतेकेँ कमाइ लूटाएल। सभ किछु छोड़ि जान बँचा गाम आबि गेलौं।''

तैपर श्यामसुनर फेर पुछलखिन-

''गाममे आबि फेर की केलिऐ?''

सुलेमान कहलकनि-

''तेही दिनसँ पटियाक ई कारोबार शुरू केलिऐ। सभ परानी लगल रहै छी, घीचि-तीड़ि कऽ कहुना दिन बितबै छी।''

''सुलेमान भाय, हम ई नै कहब जे अहाँ नै काज करू, मुदा काजक ओकाति तँ देखए पड़त किने। कहुना-कहुना तँ चालीस-पचास किलोमीटर साइकिल चलबिते हेबै?''

''हँ से ने किए चलबिते हेबै। आब की ओ कोस रहल जे घंटामे एक कोस लोक चलै छेलै।''

''एक तँ ओहिना शरीर ढील भऽ रहल अछि तैपर साइकिल चलबै छी। तेतबे नै, हो-न-हो केतौ रस्ता-पेरामे गीरिए परब आ हाथ-पएर टूटि जाएत तँ के देखत?''

एक तँ सुलेमानक जरल मन ठंढ़ाएल तैपरसँ परिवार लेल हाथ-पएर टुटब सुनि बाजल-

"भाय, केतबो अन्हारमे अनचिन्हार लोक ढेरिया किए ने गेल, मुदा हमहूँ कोनो समाजक लोक छी तँए सभ समाज अपन-अपन धर्मक पालन करैए। तहूमे हम तँ चिन्हार छी, गोटे-गोटे अनठा कऽ आगू बढ़ि जाइत मुदा सभ तेहने तँ नहियेँ अछि। तहूमे जागल लोककेँ थोड़े विनास होइ छै।"

सुलेमानक जागल बात सुनि श्यामसुनर ठमकला। बात तँ बड़ सुनर अछि मुदा जागलक की अर्थ बुझै छथि, से बिनु जनने बात नै बूझि सकब। एक्के चीजक नाओं-शब्द ढेर अछि, नाओंक संग काज जुड़ल अछि। तैठाम बिनु पुछने काज नै चलत। पुछलखिन-

"भाय, जागल केकरा कहै छिऐ?"

जेना सुलेमानकेँ रटले होइ तहिना धाँइ-दऽ बाजल-

"भाय, जखनि आँखि मूनल देखै छिऐ तँ बूझि जाइ छिऐ जे सूतल अछि आ आँखि तकैत रहैए तँ बूझि जाइ छिऐ जे जागल अछि।"

फेर ताकब आ मुनबक ओझरी श्यामसुनरकेँ लगलनि। मुदा ओझरीमे नै पड़ि आगू बढ़ैत पुछलखिन-

"केते गोटेक परिवार अछि।"

सुलेमान कहलकनि-

"अछि तँ बहुत मुदा चारू बेटीकेँ सासुर बसने अखनि तीनिए गोरेक अछि।"

श्यामसुनर पुछलखिन-

"बेटासँ ने किए ई काज करबै छी। ओ तँ जुआन हएत?"

बेटाक नाओं सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जेना केतौ सुख-दुख दुनू बहिन गारा-जोड़ी कऽ सामाक गीत गबैत तहिना सुलेमान बाजल-

"भाय, उमेरक ढलानेमे बेटा भेल। सभसँ छोट अछि। ओकरो दू अक्षर नै पढ़ा देबै, तँ लोक की कहत?"

लोक लाज सुनि श्यामसुनर हरा गेला। एहनो जिनगीमे लोक-लाज जीवित अछि। बिहुँसैत पुछलखिन-

"मन लगा कऽ पढ़ैए किने?"

केकरा मनक बात ऐ युगमे के कहत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। सुलेमान बाजल-

"भाय, से तँ ओकरे मन कहतै जे मन लगा कऽ पढ़ै छी आकि मन उड़ा कऽ पढ़ै छी।"

"अहाँ की देखै छिऐ?"

"भाय, हम तँ अपना धंधामे लगल रहै छी। तखनि केना देखबै?"

"संगी-साथी सभ कहैत हएत किने?"

"हँ, से तँ कहैए जे जाइए पढ़ैले आ चलि जाइए सिनेमा देखए, मैच देखए।"

"परीछामे पास करैए किने?"

"हँ से तँ ढौऔ-कौड़ी लगने पास कइए जाइए।"

"तब तँ आशा अछि?"

"हँ, से तँ ओकरेपर टक लगौने छी। जौं कहीं नोकरी भेलै तँ दिने बदलि जाएत।"

बेटाक बात छोड़ि श्यामसुनर पुछलखिन-

"घरवाली की सभ करै छथि?"

पत्नीक नाओं सुनि सुलेमान पसिज गेल। पत्नी, पत्नी रहल। संग चलनिहारि, काँट-कुशक परवाह केने बिना कखनो गुरुक काज करैत तँ कखनो संगीक, कखनो प्रेमीक, जिनगीक अंतिम क्षण धरि रहैक प्रतिज्ञा...। बाजल-

"भाय, कहुना कऽ बुढ़िया भानस भात कऽ लइए। बेचारी दम्मासँ पीड़ित अछि।"

‘‘इलाज किए ने करा दइ छियनि?’’

‘‘गरीब घरक लोकक इलाज की हेतै। जेते पथ होइ छै तइसँ बेसी कुपथ होइ छै। तखनि तँ चाहै छी जे बेचारी पहिने मरए।’’

पहिने मरए सुनि श्याम सुन्दर पुछलखिन-

‘‘से किए?’’

‘‘एतेटा जिनगीक सभ कमाइ लूटा जाएत, जखनि हम मरि जेबै आ ओइ बेचारीक भीखक कलंक लगत।’’

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर गुम भऽ गेला। किछु काल पछाति कहलखिन-

‘‘आइ रहि जाउ। काल्हि ऐम्हरेसँ बेचैत-विकनैत चलि जाएब।’’

हँसैत सुलेमान बाजल-

‘‘भाय, जेना आइ एको पाइ बोहनि नै भेल तेना नीके हएत। मुदा, बेमरयाह घरवालीकेँ एक नजरि नै देखि लेब से केहेन हएत।’’



सनेस

लक्ष्मण रेखाक बीच सीता नहाँति बैसल सनक काका, प्रेम रस पीब प्रेमीक संग अधरूपिया चालि पकड़ि, अधखिलू फूलक गंधमे गमियाइते मुँहक मुस्कीया सौझुका सिंगहार जकाँ महमहेलनि। अजीब ईहो दुनियाँ अछि। ने सतीए अछि आ ने वेश्ये अछि। बनौनिहारकेँ धैनवाद दी जे एक दिस विवेकक विन्यास बाँटि पाँतिए-पाँति, पाते-पात परसि देलनि तँ दोसर दिन-राति बना आगूमे ठाढ़ कऽ देलनि। धरमक संग पाप, सुकर्मक संग कुकर्म, विद्वानक संग मुरूख आ पुरुष मौगीक जोड़ा लगा-लगा, पतियानी बीच पात्रेक पत्ते-पत्ते सेहो परसि देलनि। जेते आगू दिस सनक काका देखै छला ओते छगुन्ता लगै छेलनि। एक दिस पानिक ठोप चन्द्रोदक कहबैत, तँ दोसर दिस असीम अथाह क्षीरसागर, मुदा चन्द्रोदको तँ केतौ दूधक तँ केतौ पानिक तँ केतौ दूधपनिया सेहो होइते अछि। कहू जे ई केहेन दुनियाँक खेल छी जे कियो असकरेमे सोलहो ताल धऽ नचबो करैत, गेबो करैत आ देखबो करैत तँ कियो भीड़-भाड़ तकैत। जेते देखिनिहार तेते नीक नाच। दुनियाँक चक्कर-भक्कर देखि सनक कक्काक मन तरे-तर उदास भेल जाइत रहनि। जहिना घुमती बरियाती रंग-रंगक बात करैत तहिना मनमे उठैत रहनि। अनेरे मनुख बनि जनम लेलौं। मनुखपना जखनि एबे ने कएल तखनि मनुख किए भेलौं। मुदा पना औत केना? बाँसक पना ओधि होइत अबै छै, केरा-मोथी-अड़िकोच इत्यादिक सेहो ओहिना अबैत, मुदा मनुखमे से कहाँ भेल। बिनु पनेक मनुख ठाढ़ हएत। ठाढ़ तँ हएत मुदा शुद्ध ठाढ़ हएत आकि अशुद्ध? जखनि जानवरोमे फेंट-फाँट होइते छै, तखनि अपन हिस्सा मनुखे किए छोड़ि देत। अनेरे दुनियाँक महजालमे फँसि मरैले छड़पटाइ छी। दुनियाँमे के एहेन अछि जे सुख-सागरमे बैस आनन्द नै चाहैए मुदा दुनियाँ तँ दुनियेँ छी किने? रंग-बिरंगक सागर सभ सेहो बसल अछि। क्षीर सागर, सुख सागर, लाल सागर, कारी सागर। सनक कक्काक मन ठमकलनि। जीबैतमे जेतए बौआइ मुदा समाधि तँ ठौरपर लेब। जौं से नै तँ हिटलर जकाँ थूकक धारमे भँसियाइत रहब। उदास मन, बिरहाइत बगए सनक कक्काक रहनि। तखने भातीज-मनमोहन पोलीथिनक झोरामे अदहा किलो किलो अंगूर आ सेब आगूमे रखि देलकनि। झोरा आगूमे देखिते ठहाका मारि काका हँसला। कक्काक

ठहाकाक चोट मनमोहनकेँ नै लगलनि, जेना आमक गाछपर गोला फेकलापर कोनोकेँ खसने गोलवाहकेँ खुसी होइत सहए खुशी मनमोहनकेँ भेल। मुदा निशान साधल आमक महत किछु आरो। ठहाका मारि बाजल-

"काका, ई अहींक सनेस छी।"

सनेस सुनि सनक काका चौंकला जे सनेस कहि की कहैए। पुछलखिन-

"केतक सनेस छी?"

मनमोहन कहलकनि-

"कश्मीरी सेब छी आ पूनाक चमन अंगूर।"

सनक काकाकेँ मन तरे-तर सनकल जाइत जे ई छौड़ा कि बूझि मजाक करए आएल। जहिना बाप एकोटा कुकर्म नै छोड़लकै तही उतारक अपनो भेल अछि आ सेव-अंगूर देखबए आएल अछि। तामसकेँ तरेमे दबैत काका कहलखिन-

"हौ मनमोहन, एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की! बच्चा सभकेँ दऽ दिहक। अपने अनरनेबा आ लताम दुइर होइए। जेते तोहर लेब तेते अपन दुरिए हएत। अच्छा बौआ, एकर भाउ की छै?"

"एकर भाउ बुझैक कोन जरूरति पड़ि गेल काका?" मनमोहन कहलकनि।

मोने-मन सनक काका सोचलनि जे छौड़ा नम्हर छिनार-लूटार जकाँ बूझि पड़ैए। कहलखिन-

"बौआ, आब तँ सहजे चल-चलौए छी मुदा अपनो देश-कोसक हाल बूझब कोनो अधला हएत?"

एक तँ सनक कक्काक बदनामी शुरूहेसँ रहलनि जे घरो लोक सनकले कहै छन्हि। केना नै कहनि सभ अपन परिवारक बाल-बच्चा लेल करैए आ ई सनक काका से बुझबे ने करै छथि। परिवारोमे सनक कक्काक

सनकी यएह रहनि जे अपन-परिवार आ दोसर परिवारमे भेदे नै बुझथिन। जहिना अपन परिवार तहिना दोसराक। अखनि धरि मनमोहन यएह बुझैत जे परिवारोसँ बाड़ले-बेरौले छथि तँए सभ चीजक दुख-तकलीफ होइते छन्हि। मनमोहनक नजरि करुआए लगल। सनक काका बुझैक कोशिश करए लगला, कारण की छै। मनमे मिसिओ भरि सन्देह अपनापर नै भेलनि। मन गवाही दैत रहनि जे निनानबे प्रतिशत राक्षसक देश लंका तैठाम विभीषण केना भक्ति-भजन करैत जिनगी गुदश करै छला। केहनो सघन बोन सुकाठ-कुकाठक किए ने होउ मुदा आमक गाछ आम आ लतामक गाछ लताम फड़ब बिसरि जाएत! दोहरा कऽ मनमोहनकेँ पुछलखिन-

''हौ बौआ, जहिना एक्के गोरे डाक्टरो आ इंजीनियरो नै भऽ सकैए किएक तँ दुनूक दिशा अलग-अलग छै। मुदा सेबक जगह जौं अपनासँ नीक लताम आ अंगूरक जगह अनरनेबा नेने अबितह तँ फले नै बीओ रोपि देतिऐ।''

सनक कक्काक प्रश्न सुनि मनमोहन उछलैत कहलकनि-

''काका, दुनियाँ आब घर-आँगन बनल जा रहल अछि। आ अहाँ पुश्तैनी विचार रखनहि छी।''

मनमोहनक साँसक गरमीकेँ अंकैत सनक कक्काक सनकी तेज नै भेलनि। मिड़मिड़ाइत कहलखिन-

''बौआ, जौं दुनियाँ घर-आँगन बनि गेल तँ ओ नीक बात छी, मुदा ई तँ नीक बात नै जे कियो नौड़ी-छौड़ी बना भाषा, साहित्य-संस्कृतिकेँ ओझरा मटिया मेट कऽ दिअए। से कनी बुझा दाए जे की भऽ रहल छै?''

गुम्हरैत मनमोहन कहलकनि-

''काका, दुनियाँ आब नव पीढ़ीक अछि तँए केतबो दुसबै ओ चढ़बे करत।''

मनमोहनक प्रश्नसँ सनक कक्काक सनकी पाछू मुहेँ ससरलनि। पछुआ पकड़ि पुछलखिन-

> ''बौआ, जर्मनी-जापानी आ अंग्रेजी शब्द ऐ लेल चढ़-चढ़ौ भऽ गेल जे ओकर विकास अगुआ मशीनमे पहुँच गेल आ मशीनक नाओं रखि-रखि अहाँक घर-अँगनामे छिड़िया देलक। अहाँ ऋृषि-मुनिक राज मिथिला कहि-कहि ओतए पहुँच गेलौं जे ओ सभ की कहलनि तेकर डिक्शनरीए चोरा लेत। तखनि अहाँ बुझबै जे केहेन नव युगक नव लोक बनि गेलौं?''

सनक कक्काक बात सुनि मनमोहन ठमकल मुदा पाछू हटैले तैयार नै भेल। बाजल-

> ''काका, बजारमे अखनि एक-सँ-एक खाइओ-पीबैक आ फलो-फलहरी तेहेन आबि गेल अछि जे अपना ऐठामक फल-फलहरीकेँ के पूछत?''

मनमोहनक प्रश्न सुनि सनक कक्काक, सनकी आगू मुहेँ ससरिते, कहलखिन-

> ''बौआ, कोनो देश-कोसक विकासमे ओइठामक माटि, पानि, हवा इत्यादि पंच भूत मुख्य तत्व भेल। अनुकूल गतिए सृष्टि चलैए। अपना ऐठामक लताम वा कोनो आन फल अछि, ऐठामक काल-क्रियाक गतिए जे जरूरी छल ओ प्रकृति पैदा केलक। अपना ऐठाम एकरे अभाव भेल, जइसँ पहाड़ी फलकेँ मैदानी क्षेत्रमे नीक मानल जाइए।''

अपनाकेँ मनमोहन निरुत्तर देखि मैदानसँ हटैक विचार करए लगल। मुदा सेव-अंगुरक पोलिथीन बीचक सीमा बनल। रूमाल चोर जकाँ सीमा पहिने के टपत। पाछू हटैत मनमोहन बाजल-

> ''काका, आशा लगा अनने छेलौं जे काकाकेँ नीक फल खुएबनि।''

मनमोहनक बात सुनि सनक काका तारतम्यमे पड़ि गेला जे अखनि धरि जे हम बुझै छेलिऐ तइसँ भिन्न ने तँ मनमोहन अछि। आशाक दोहाइ लगा बजैए जे आशा लगा अनने छेलौं। आशा तँ सभकेँ अपन-अपन होइ छै। सबहक देहेटा अलग-अलग नै अछि, मनक उड़ान सेहो होइ छै। पिजरामे बन्न सुग्गोकेँ पोसिनिहार सिखबैए जे आत्मा राम पढ़ू- चित्रकूट के

घाटपर, भए संतन के भीड़। तुलसी दास चानन रगड़े, तिलक करे रघुवीर...। मुदा सेहो तँ ने बूझि पड़ैए। तखनि? ओ तँ पुछनहि पता चलत। पुछलखिन-

''हौ बौआ, जहिना घरक लोक हमरा बताह कहैए तहिना ने ओकरो सभकेँ सनकपनीए फल खुएबै।'' कहि मोने-मन सोचए लगला। भाँग पीब कियो बाजि चुकल छथि आकि असथिर मोने सोचि कहने छथि जे जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मन। मुदा अहू छौड़ाकेँ तँ छिछा-बीछा नीक नहियेँ छै। भरि दिन देखै छिऐ जे ऐठामसँ ओइठाम, ओइठामसँ ऐठाम ढहनाइते रहैए। तैपरसँ दिनो-दिन आगूए मुहेँ ससरि रहल अछि। से केना? बहुरूपिया ने तँ छी! सलाइ रिंच जकाँ सभ नट पकड़ै बला! तही बीच मनमोहन बाजल-

''काका, अहाँ अपने हाथे बाँटि दियौ।''

मनमोहनक बात सुनि सनक काका ठमकि गेला। जहिना कोनो टपारि कुदैले दू डेग पाछू हटि दौग कऽ टपि जाइत तहिना काका पाछूसँ आगू बढ़ि कहलखिन-

''हौ बौआ, बतरसिया हाथ भऽ गेल, ओहुना हरिदम थरथराइए तैपर कोनो काज करै काल तँ आरो बेसी थरथराए लगैए। अपन चीज जे थोड़-थाड़ छिड़िआइओ गेल तँ नै कोनो, मुदा तोहर जे एकोटा अंगुर खसि पड़त तँ तोरे मन की कहतह। यएह ने जे सनकाहक ठेकान कोन। तँए हमरा चलैत तोरा मनकेँ ठेँस लगऽ से नीक नै बुझै छी।''

कक्काक बात सुनि मनमोहन बाजल-

''तँ की काका, घुमा कऽ लऽ जाइ?''

अनेरे ओझरीमे ओझराएल अपनाकेँ देखि सनक काका, ठाँहि-पठाँहि कहलखिन-

''ई तोहर खुशी छिअ जे घुमा कऽ घरपर लऽ जा वा दोकानदारेकेँ घुमा दहक वा रस्ता-पेरामे कोनो धिए-पुतेकेँ दऽ दहक। हम किछु ने कहबह। एते दिन पछाति दरबज्जापर एलह सहए खुशी अछि।''

सनक काकक बात सुनि जहिना जाड़सँ कठुआ कियो देह-हाथ तानि अचेत भऽ जाइत तहिना मनमोहनकेँ भेल। मुदा...?

❍ ❍ ❍

उलबा चाउर

अगहनक पूर्णिमाक दिन। काल्हि पूस चढ़त। अदहा-अदहीपर जाड़ औत। महिना दिन पछाति पूर्णिमा औत। संक्रान्तिकँ पूर्णिमासँ कोनो सरोकार नै छै। सरोकारो केना रहतै, एकटा दिनक हिसाबे चलै छै दोसर मासक हिसाबे। ओना दुनू दिन-राति संगे चलैए, संगे रहैए मुदा कखनि के अगुआ जाइ छै आकि पछुआ जाइ छै से ओ जानए। मुदा आब अगहनुआँ जाड़ थोड़े रहल, तहूमे ऐबेरक अगहनमे तेहेन शीतलहरि भेल जे माघोक कान काटए लगल। जहिना कोनो खेल आकि काजमे हानि-लाभ संगे चलै छै मुदा के कखनि अगुआइ छै आ के कखनि पछुआ जाइ छै से जानब सबहक काज थोड़े छी। जौं से रहैत तँ एक्के भैयारीमे कियो वर-बिमारीक तर पड़ि तरोटा बनि जाइ छै आ कियो बेटाक दहेज लऽ कऽ उपरोटा बनि जाइ छै। एक कील रहने की हेतै। तरोटा ने साधल रहत उपरौटा तँ छुट्टे रहत। तहिना जाड़ोक भेल। अगहनक शीतलहरि, समैसँ पहिनहिए माघकँ बजा अनलक। पूस तँ बिच्चेमे रहि गेल। अगहन-माघकँ भैंट भेने पूस हरा गेल। किएक तँ जहिना गोटे-गोटे गाएओ-महिंसकँ आ मनुखोकँ समैसँ पूर्ब जुआनीक सभ वयकरन अपने आबि जाइत तहिना जाड़ोक भेल। पल-पल ओस पला पाला बनबै करत। लतड़ि-लतड़ि गोरा रोपि लतड़बे करत। अनुकूल अवसरो भेटलै। कश्मीरी वर्फवारी संगबे भऽ गेलै। समैसँ पूर्व भेनौं आम जकाँ ने कोलिफट्ठू भेल ने रसफट्ठू आ चोकरेबो नहियेँ कएल। मुदा एते तँ भेबे कएल जे पछिया अगते पकड़ने ओसो मोटा-मोटा पाला बनि पलड़बे करत। जे हवा संग चलै छल ओ ओसक बून बनि टप-टप नाकपर होइत खसबे करत। मेघौन नै रहितो सुरूज तेना झँपाएल रहैत जे दिनो रातिए जकाँ भऽ गेल। भरिसक दशतारक ने तँ छी!!

जाड़क बैसारी भेने घूरोक चलती आएल आ गपो-शपक, पोथीओ-पुरानक। पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोक बीच शास्त्रार्थ चलए लगल। कियो ग्रह कहैत तँ कियो ग्रहक करतूत। मुदा गपक गरमी ओतए मद्धिम पड़ि जाइत, जेतए निर्णए होइत, जौं अपना बड़दकँ कुड़हरिएसँ कियो नाथत तँ अनका की। तइले हम सभ अनेरे मुहाँ-ठुठी कऽ कऽ फूला-फुली किए करब। जाड़ेक मसिम छिऐ ओकरो तिहाइ हिस्सा तँ छइहे। ओकरा जे मन फुरतै,

जेना मन हेतै तेना अपन करत। अपने केने ने कियो जीबैए। ओहिना तँ नै कहल गेल अछि जे अपने मुइने जग मरए।

बूढ़-बुढ़ानुसक बीच तेसरे झमेल ठाढ़ भेल। कियो कहैत जे पूस-माघमे शीतलहरि तँ देखैत एलौं, अगहनमे तँ नै देखने छेलौं। मुदा हिनको सबहक गप ओइठाम जा अँटकि जान्हि जेतए जुग-जमानाक चर्च उठि जाइत। बापेक-बेटाक सम्बन्ध जे बनि गेल ओ केते उचित छै, जखनि जुगे बदलि गेल तखनि की बदलत आ केते बदलत तेकर कोनो ठेकान छै। समुद्रक भँसियाएल नाव, लहड़िक धक्का सहत तखनि ने किनछरि धड़त। नै तँ केकर मजाल छी जे नावकेँ बँचा लेत। मुदा गाम-घरक बात उठिते सभ गप तर पड़ि जाइत। समस्या ठाढ़ भऽ कहैत जे केना बाधक लक्ष्मी एहेन समैमे घर औती। नै औती तँ उसनियाँ केना हएत आ के करती। उसनियाँ नै हएत तँ उसना चाउर केना बनत। नै बनत तँ सुपच्च खेनाइ केना हएत। अरबा-अरवानि तँ राजा-महाराजाक छिऐ, किसान परिवारक तँ उसने छिऐ ने। भलहिं नोकरिया-चकरिया अपन्आ नेने हुअए। परिवारक ओ औरत जे जेते परिवार लेल करैत ओ ओते ओइ घरक गिरथानि होइए किने। जहिना खेतक धान, पानिक संग चुल्हिपर चढ़ि अपन व्याकरण बदलि उसनल धानसँ उसना चाउर बनि उसना भात बनैत जे सुस्वादुक संग सुप्पचो होइत अछि, तहिना ने घरक लक्ष्मीओ होइ छथि।

पनरह-बीस दिनक शीतलहरि भरिसक छँटत। पोह फटिते रविया एकचारिक घूर लग बैस पीढ़िएपर खुरपी लऽ कऽ तमाकुल मिलौल गाँजा कटैत। पनरह-बीस दिनक परता भेने खुरपीओ अधबिज्झू भऽ गेल। जहिना चालि कमने पएरक होइ छै तहिना धार मोटा गेल। लेटौल गाँजापर खुरपीक बेंटकेँ जोरसँ दबिते मनमे उठलै। बुदबुदाएल-

> "केते दिनसँ निआरै छी जे गुलाब-तख्ती आ प्रेमकटारी लेब से तेहेन ने समए भऽ जाइ छै जे की लेब। बुझै छिऐ जे अपन प्रेमकटारी आ गुलाब-तख्ती खुरपीए-पीढ़िया छी।"

घूरसँ खड़ौआ जौड़क गूल निकालि चीलममे चढ़ा भोग लगबैत मंत्र पढ़लक-

> "जीवैत-मरैत जे जेतए छह आबि जाह।"

पढ़ि दमसा कऽ दम मारलक। जहिना चारक वा भीतक दाबसँ घरक मुँहक चौकठिक केबाड़ कसकसा कऽ बन्न रहैत मुदा जोरसँ धक्का पाबि खुजि जाइत तहिना रवियाक कपाट खुजल। बाजल-

''दिलरामक माए, कनी एम्हर आउ?''

जड़ाएल पतिक अवाज सुनि रूपनी सिड़सिड़ाइत आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। ने दोहरा कऽ रविया किछु बजैत आ ने रूपनी। एक रंगक रोगी दोसराक की हाल-चाल पूछत। मुदा नहियों पुछने तँ नहियेँ हेतै। मुँहक काजे की छिऐ। खाइए कालमे ने कनी, बाँकी तँ बैसारीए रहै छै किने। तहूमे बैसारीओ की एक रंगक होइ छै, केतौ खेलहा तँ केतौ बिनु खेलहा सेहो होइ छै। तैबीच तँ बीचमानि तखने चलत किने जखनि दुनूकेँ नीके कहत। जौं से नै कहत तँ मुँहक मानिए की भेल? मुदा विहंगरो कम रहै तखनि ने जे दुनूकेँ अगल-बगल जोड़िओ कऽ चलत। जैठाम अकासे फटल छै तैठाम दरजीए बेचारा की करत, केते करत! कियो खाइक रोगसँ पीड़ित भऽ सुखाइत तँ कियो भूखक रोगसँ। मुदा तहूसँ नम्हर बिहंगरा तँ ओतए उठैत जेतए भुखेलहासँ बेसी भुखाएल-खेलहाक खेल चलैए।

दुनू परानी, रविया-रूपनी एक दोसरपर आँखि अँटकौने जेना आगू-पाछू दुनू दिस दुनू दुनूकेँ देखैत। मुदा गाँजाक चढ़ल मन रविया अपन मौन तौड़ैत बाजल-

''बुझलौं की, से किने से, आइ खिचड़ी खाइक मन होइए। तिलासंकान्तिक भरोसे की रहब।''

पतिक बात सुनि रूपनी किछु बाजल नै। मुदा रूपनीकेँ अनसोहाँत जकाँ रीब-रीब लगल। रीबरीबाइत बाजलि-

''एना किए अहाँ तिलासकराँइतक खिदहाँस करै छी। सोझ मुहेँ कहू जे खिचड़ी खाएब।''

पत्नीक बात रवियाकेँ कंठक निच्चाँ नै उतरल। गल-गलबैत बाजल-

''एकटा खिस्सा कहै छी। एगो रहै अन्हरा एगो रहै डिठरा। दुनू मिलि कातिकमे एकटा खत्ता उपछलक। तइमे फँसल एकटा अन्है। डिठरा कि केलक जे नांगरि दिससँ अन्हराकेँ पकड़बैत जहाँ

उधडरेड़पर आएल आकि जोरसँ कहलकै। छोड़-छोड़ ने तँ धाए लेतौ साँप छिऐ। ओ छोड़ि देलकै। से हम थोड़े छी। अहीं कहू जे आब लोक दुरागमन करैए आकि माल-जाल फड़िछबैए छै। हे मानि लेलौं जे बर-कनियाँक दुरागमन भेल। मुदा बेटा-बेटीक की हएत। घरेक काजमे एना दू रंग किए भेल जाइ छै?''

रवियाक बात सुनि रूपनी पघिल गेली। विस्मित होइत बजली-

''उसना चाउर अइछे कनी नून दऽ कऽ टभका लेब। कचका मिरचाइ चीर कऽ दऽ देबै। तइले अहाँ किए लल-वेकल छी।''

जहिना ठीकेदारकेँ बिल-भुगतानक दिन होइत जे रोहू लेब कि मुंगरी, तहिना रवियाकेँ भेल। गरीबक गोनरि जहिना दुनू कात चिकने होइ छै तहिना दुनू परानीक भेल। रविया बाजल-

''अरबा चाउरक प्रेमी छिऐ दूध-चीनी आकि नून छिऐ। मुदा अपन सबहक तँ नूने छिऐ किने? जखनि खिचड़िए भेल तखनि चाउर, पानि, नून-मिरचाइ पड़बे कएल, एते जइमे पड़त से खिचड़ी केना नै भेल।''

खाइक ओरियान देखि रवियाक मन घूमल, गंभीरता देखबैत असथिरसँ बाजल-

''बाध गेना बीस दिनसँ ऊपरे भऽ गेल। बाधमे की भेल हएत की नै। तहूमे तेहेन ने सिल्लीक उजैहिया आएल अछि जे सभटा धान चाभि देने हएत।''

पतिक बात सुनि रूपनी अगुअबैत बजली-

''पछिला बेर देखलिऐ जे बीघा भरि सोनाइ कक्काक सूर्यमुखी फूलकेँ सुग्गे खा गेलै। बेचारे केते आशा लगा खेती केने छेलखिन।''

पत्नीकेँ भँसियाइत देखि रविया लोहछैत बाजल-

''हमरा एते सौंसे गामक हिसाब-बारी जोड़ैक काज नइए। हम माल-जालक ओगरवाहि करै छिऐ आकि चिड़ैओ-चुनमुनीक। खेलकै तँ गिरहतक खेलकै। हमर बड़ खेलक तँ राखी।''

साक्षात् वैरागी भेल निर्विकार पतिकेँ देखि रूपनी सुरूजक धाही देखिते चड़ियबैत बाजलि-

''हम चुल्हिक ओरियानमे जाइ छी। अहाँ झब दनि बाध चलि जाउ। नै तँ गिरहत अबलट जोड़त। जौं पहिने चलि जाएब आ गिरहतकेँ देखब तँ अगुआइए कऽ कहबै जे तेते ने सिल्ली आबि गेल छै जे एको कनमा धान नै होइबला अछि।''

पत्नीक विचार रवियाकेँ जँचल, मुदा भरल पेट जहिना ओछाइन दिस तकैत तहिना एक तँ घूरक अगियासीक ताउ तैपर गाँजाक रंग, उठैक मन नै भेलै। मुदा आगिओक तँ अपन गुण होइ छै, चाहे तँ उपयोग करू नै तँ घर जरौत। मुदा से रवियाकेँ नै भेल। मन छड़पलै। फुसफुसाएल-

''कोनो गामक नइँर-गइँर नीक नै छै। कहू जे जखनि एक्के नाओं सबहक अछि गाम, तखनि किए कोनो गामक बाधक रखवारि बीघामे दस धूर छै तँ कोनो गामक पाँच धूर। कोनो गामक चारि धूर छै तँ कोनो गामक दू धूर। मन ठमकलै। अनेरे कोन चक्करमे चकराइ छी। ई तँ रखवारिक भेल। जेकरा ने माए छै आ ने बाप। मुदा माएओ-बापबला कैँ तँ देखिते छिऐ जे कोनो गामक लग्गी (खेत नपेबला लग्गा) साढ़े छह हाथक छै तँ कोनो गामक पौने सात हाथक। कोनो गामक साढ़े सात हाथक छै तँ कोनो गामक नअ हाथक। धूउ अनेरे अनकर रोग अपना सिर सिरजै छी। साबे बोझ जकाँ सदिकाल गरमुराहे होइत रहैए तखनि तँ कहुना कऽ सम्हारि खड़िहाँन पहुँचू जे पसारि कऽ सुखा लेब। बड़-बड़ लीला सभ छै। केते देखब। जखनि एक्के गामक एक्के आड़िक खेतक मलगुजारी बढ़मोत्तर कहि रेन्ट मुक्त अछि तँ बगले बलाक ओते अछि जे मलगुजारी भुगतानपर बटाइ खेत रहै छै।''

अगिला बात मनमे अबैसँ पहिने रविया फुड़फुड़ा कऽ उठल। शीतलहरिक चलैत अगते कुतरूमोमे फूलक कोढ़ी आबि गेल, से रविया देखने। पत्नीकेँ कहलक-

> "वाड़ीसँ कुतरूम आनि लेब। बाध दिससँ भेल अबै छी।" कहि रविया बाधक रस्ता धेलक।

करीब अस्सी बीघाक दछिनवरिया बाध। जेकर रखवारि रविया करैत। संयोग नीक भेल जे तीन साल पहिने पछिला रखबार पंजाब गेल जे रवियाकेँ बाधक भार देने गेल। पचास बीघासँ ऊपर जमीन निच्चाँ आ पच्चीस-तीस बीघा ऊपरक बाध रहए। तइमे बीघा पाँचेक उस्सर, जइमे भरि-भरि जाँघक कुश उपजल। परदेशीया सबहक किरदानीसँ पान-सात बीघा छाहेँ भऽ गेल। तैपर रौदी भेने उपराड़ि खेत अबादे ने भेल। खोपड़ी लग पहुँचिते रवियाक मनमे उठल, अनेरे एहेन ठंढ़ामे पएरमे बेमाए किए फटाएब। तइसँ नीक जे खोपड़ी अपन छीहे। आगि सुनगा घूरे तापब। उपराड़ि चौरक बीच परतीपर रवियाक रखवारिक खोपड़ी।

घूर पजारि रविया बैस गेल हाथ-पएरक कन-कनी कमिते रवियाक मनमे उठलै। अनका जे होउ, मुदा भगवान पक्षक काज केलनि। उपराड़ि नै उपजल तँ नै उपजल, निचला तँ उपजल अछि। नै साल भरि तँ छबो मासक बुतात तँ हेबे करत। मुदा गामेमे देखै छी जे अही चौरीटा मे नहर नै भेनौं नहरक पानि एलै। बाँकी गाम तँ रौदियाहे भऽ गेल अछि।

सिताएल नढ़िया जकाँ सुरूज तँ उगल मुदा सिरसिराइत। नव विहान देखि गिरहस्तक बीच चलमली आएल। धान (पानिक धान)मे कनी ठंढ़े ने लगत मुदा सुरूजोक तँ धाही छइहे। हो-न-हो कहीं पूस-माघ अगुआएल अछि जौं कहीं पछिला डेग नपलक तँ फेर ओहिना भऽ जाएत। एक तँ रौदियाह समैक अन्न, तेकरो जौं जानि कऽ छिजानैत करब तखनि तँ आरो केतौ भऽ कऽ नै रहब।

किसानक चलमली देखि रूपनी हाँइ-हाँइ भानस केलक। आठ बजैत-बजैत हँसुआ नेने सभ निकलि गेल। जन-गिरहतसँ बाध भरि गेल। अपने रूपनी दिलरामक संग खा पति लेल बाधे खाएक लऽ विदा भेल। सात बरखक बेटा दिलराम अँगनासँ निकलिते रूपनी बेटा -दिलराम- केँ कहलक-

‘‘बौआ, आइ उलबा चाउर खाएब।’’

आगू-आगू दिलराम आ पाछू-पाछू रूपनी बाध दिस विदा भेल। किछु दूर गेलापर रूपनीक मनमे उठल। भगवान कूह फेड़लनि। नै तँ कोनो दशा बाँकी नै रहितए। जहिना अन्नक गति होइत तहिना जारनिक। ओहो तँ माघ लेल रखने छेलौं जे पार लगल। नै तँ कठुआ कऽ मरैमे कोनो भांगठ छेलए।

गाँजा पीऐत रविया आगू-आगू बेटा आ पाछू-पाछू पत्नीकेँ अबैत देखि, बुदबुदाएल-

‘‘जे जीबए से खेलए फागु। हमरा सबहक जिनगीए की अछि जे अगिला आशापर जीब। जहिया हेतै तिलासकराँइत तहिया होउ। अपन तँ आइए छी।’’

मुदा लगले मन ठमकि गेलै। आन पावनि खीरक होइ छै आ तिलासंक्रान्ति किए खिचड़ीक होइ छै। तहूमे उजरा अरबा चाउरक संग करिया तिल-गुड़-पानिक संग परसाद किए बनै छै...?

आँखि मूनि रविया विचारिते छल आकि रूपनी लगमे आबि टोकलखिन-

‘‘जहिना गामपर रहै छी तहिना बाधोमे भकुआएले रहै छी?’’

रवियाक बनल मन बाजल-

‘‘गामपर तँ अहाँ देखि भकुआ जाइ छी मुदा बाधमे तँ अपने देखै छी किने।’’

तैबीच बीघा दुइए हटि धानक खेतमे कटनिहार सबहक बीच हल्ला भेल। हल्लाक कारण रहै एक भाग सिल्ली धान चाभि देने रहै। धान नै देखि जन-सबहक बीच पाहि धड़ैक हल्ला रहए। हल्ला देखि रूपनी पतिकेँ कहलक-

‘‘कनी जा कऽ देखियौ, जे किए झगड़ा होइ छै।’’

गाँजाक असकताएल मन रवियाक, बाजल-

‘‘हम बाधक रखबार छिऐ आकि गामक पंच छी? अपन गिरहत फड़ियाबह...।’’

रवियाक बात रूपनीकेँ जँचलनि। आगूमे थारी बढ़बैत बजली-

"बेटाकेँ आइ उलबा चाउर खुआइओ देबै आ मोटरीओ बान्हि देबै।"

उलबा चाउर सुनि रविया विस्मित भऽ गेल। मन पड़लै अपन माए। माए मन पड़िते मनमे उठलै ओ दिन, जइ दिन दियारी पावनि रहै। धान अधपक्कू भऽ गेल रहै, मुदा सुभ्भर नै पाकल रहै। लक्ष्मी पूजा दिन रहने वएह अधपक्कू धान काटि, पएरसँ मीड़ि खापड़िमे भूजि चाउर कूटि भात खेने रही। हाथ-मुँह धोय रविया दिलरामकेँ कहलक-

"बौआ, अहूँ कनी खा लिअ।"

भरल पेट दिलराम नकारैत बाजल-

"नै, खिचड़ी नै खाएब, उलबा चाउर खाएब।"

उलबा चाउर सुनि रवियाक मनमे खीझ उठल। बाजल-

"उलबा चाउर लगले केतएसँ औतै। बड़ अगुताएल छँ। के तोरा मन पाड़ि देलकौ?"

निष्कपट दिलराम बाजल-

"माए कहलक।"

माएक नाओं सुनि रविया ठमकि गेल। जहिना मंदिर जाइसँ पहिनहि ने भगवान आबि राशि लगा लऽ जाइ छथिन, तहिना ने गाछोक पीपही रोपिते-काल पाकल आम आगूमे आबि जाइ छै।

फेर दोसर खेतमे हल्ला उठल। पानिक तरमे आड़ि डूमल। खाली आड़िक खरही टिक-टिक करैत। मुदा सभ ठामक ओगरवाहि की बन्दूके हाथे होइ छै। खरहोरिक कड़ची केना ओगरवाहि करैए। झगड़ाक कारण रहै एकटा खेतक धान चतड़ि-लतड़ि दोसरा खेतमे चलि गेल। पहिने तँ रवियाकेँ सोझ-साझ बात बूझि पड़लै, मुदा लगले मन ठमकि गेलै। पानिक संग माटिक प्रश्न उठि गेलै। ई केहेन होइ छै जे लोक कलम-गाछी लगबै-काल आड़िक कातमे झमटगरहा गाछ लगा दइ छै जे नमड़ि कऽ दोसरा खेतक उपजा खा जाइ छै। बूढ़-बुढ़ानुसक सेहो कहब छन्हि जे घर लग बाँस नै

लगाबी, एक तँ लत्ती-गाछक सीमापर बसल अछि दोसर तेहेन सिराह होइए जे जेते दूर ओकर छाँह जाइ छै तेते दूर ओकर सीरो जाइ छै। जौं जेबेटा करितै तखनि तँ नै कोनो, मुदा तरे-तर तेहेन खच्चरपनी करै छै जे जेते दूर जाइ छै दोसराक बास नै हुअ दिअ चाहै छै। खिचड़ीसँ मन भरिते रविया पत्नीकेँ कहलक-

''हमरा अड़ौस-मड़ौस करैक मन होइए, अहाँ बाध घुमने आउ।''

पतिक समरपन देखि रूपनी बजली-

''थाल-पानिमे बौआकेँ केना लऽ जेबै। एतै छोड़ि दइ छिऐ।''

खेते-खेत रूपनी टहलि घूमि कऽ आबि पतिकेँ कहलक-

''बलौकिया धान छोड़ि सभ ऊपरा-ऊपरी छै।''

बजैत-बजैत मनमे उठलै, घरमे कोठी-भरली तँ नहियेँ अछि एते धान रखब केतए। आब कि धान-चाउरक चोर रहल जे कियो चोरा लेत। आब तँ हिस्सा-बखराक चोरि देखाइओ आ छिपाइओ कऽ होइ छै।

रविया पुआरक ओछाइन सेरियबैत निनियाँ देवीक स्तुति करिते छल आकि पत्नीक बुदबुदाएल बात सुनि गेल। मन मुरुछि कऽ तुरुछि गेलै-

''बड़ लाल बुज्झकरि बनै छथि, अच्छा एकटा कहू जे जइ गाममे सभटा चोरे रहत ओइ गाममे चोर के भेल?''

पतिक बिगड़ैक कारण बूझि रूपनी नहाएल आ बिनु नहाएल अवस्थामे पड़ल जकाँ बजली-

''पड़ू-पड़ू। लाउ घुट्ठी दाबि दइ छी।''

पियाससँ पहिने पानि, भूखसँ पहिने अन्न जहिना आगू एलासँ क्षुधाक धार रोकाइ छै तहिना दू-अढ़ाइ बजिते धान कटनिहार सबहक शक्ति सिहरए लगल। एक तँ मरियाएल रौद तैपर जट्टर पानिक संग पछबाक लहकी। एक्के-दुइए धानक बोझ लऽ लऽ खेतसँ निकलए लगल। बोझ देखि रूपनी पतिकेँ पुछलखिन-

''हम राखी कटने अबै छी।''

पेमेंट, वेतन, महिना, पगार, तलब, तनखा आकि दरमाहा उठैकाल जहिना नोकरियाक मनमे तरंग उठै छै तहिना रूपनीक मनमे उठए लगल। तेते खेत कटाएल जे एते राखी काटब पार लगत। तहूमे बेरो खसल आ जाड़ो बेसीयेबे करत। लगले मन मानि गेलनि जे कोनो कि जमा-जिगिर अछि जे एते पुरेबे करत। जेतबे सम्हरत तेतबे काटब। बाँकी आन दिन काटब। एते दिन कियो चोरेबे ने केलकै आ एक-दू दिनमे उनटन भऽ जाएत। सोचिते-विचारिते पहिल खेत रूपनी पहुँच गेली। आँखि उठा हिया कऽ देखलनि (पानिक दुआरे) जे कोन कोणमे राखी अछि। दुइए धूर हएत तइसँ की, हएत तँ कोनो कोणेपर। मुदा नम्हर खेत रहने अदहोसँ कम खेतक धान कटाएल, तखनि राखी केना बनत। दोसर-तेसर-चारिमो खेत तहिना। पाँचम-टामे राखी बेड़ाएल। धान देखि रूपनीक मनमे सबुरक सबुरदाना छिड़िया गेलनि। पाँजो भरि धानक आँटी बान्हि माथपर उठौने धानक गदियाएल पानि देहपर टघरैत रहनि। समुच्चा देह भीजल रूपनी खोपड़ी लग पहुँचली। अरामसँ पति आ पुत्रकेँ देखि विभोरसँ विसरभोर भऽ गेली। मोने ने रहलनि जे माथपर धानक भारी आँटी अछि। धानक आँटी देखि रविया मुस्की दैत पुछलकनि-

> ''एहेन जे अहाँ छी जे बेटा-दिलरामकेँ बाधे अबैकाल उलबा चाउर गछि लेलिऐ आ अखनिसँ जे छाल-छोड़ौत से केहेन लगत।''

बिहुँसैत रूपनी बजली-

> ''जइ बेटाकेँ गछलिऐ तेकरा पूरा कऽ छोड़बै। ऐठामसँ जाएब, एक पाट हएत मलि लेब। चुल्हि पजारि गरमा लेब। साँझे परतै तँ कि हेतै, कोनो कि अनका आँगना जाएब जे भरली साँझ नै कुटए देत। अपने ढेकी अछि जखनि पलखति हएत तखनि कूटब। तँए कि बेटाकेँ...।''



बलजोर

राज-दरबारसँ घूमि कऽ अबिते बड़का-भैया हाँइ-हाँइ बैग रखि जुत्ता निकालि बेसुधि जकाँ पलंगपर चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेला। एतेक सुधि नै रहलनि जे तरबा पसीनासँ पसीज पैताबाक संग देहक घामक भीजल गोलगला निकालितथि। आँगनमे बड़की-भौजी चुल्हि लग बैस भानस करैत पुतोहुकेँ कहैत रहथिन-

> ''कनियाँ, भगवान जौं ससुर देलनि तँ अहाँकेँ देलनि, अपनो ऐ बुढ़ाड़ी तक पहुँचैमे कहियो खाइ-पीऐ आकि कोनो मन-मनोरथक दुख बेकल नहियेँ भेल अछि।''

सासुक (बड़की-भौजी) बात सुनि पुतोहु (रेखा) जे तिलकोरक पात छाँटि-छाँटि तहिया-तहिया सासु-ससुर लेल रखि अपना लेल लोहियामे देल उनटबैले छोलनी दिस आँखि उठबैत बजली-

> ''कहै तँ छथिन बड़ सुन्नर बात माए, मुदा गाममे हिया कऽ देखथुन जे हिनका एते उमेरक केते गोटे घरक गारजनी अपना हाथे चुहुटि कऽ पकड़ने अछि। खाएल-पीअल पोसल देह छन्हि नोकरनी जकाँ रखने छथि। ई कहाँ कहियो मनमे होइ छन्हि जे पोता-पोती बिआह-दुरागमन करै जोकर भऽ गेल। अपनो उमेर पचास-पचपनक तँ भइए गेल हएत मुदा हाथ-मुट्ठी केना चलै छै से सोचै-विचारैक मौका अखनि तक कहाँ देलनि। जहिना दुरागमन कऽ ऐ घर प्रवेश केलौं तहिना अखनो छी। पाकल आम जकाँ दुनू बेकती भेली, कखनि ढन दे आँखि मुनि लेती तेकर कोनो ठीक छन्हि। किछु दिन पछाति बेटा-पुतोहु घर सम्हारत। तखनि यएह कहथु जे हिनका जकाँ कहिया हएब?''

अपन मलिकियतपर पुतोहुक व्यंग्यवाणक आक्रमण देखि बड़की भौजी तिलकोर उनटबैत पुतोहुक बोल सुनि तिलमिलाए लगली। ढोढ़ साँप जकाँ मन सनकए लगलनि मुदा विचार रोकि मनमे उठलनि, घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे, तइले लक्कड़-झक्कर करब नीक नै। चारि पएरक हाथी हूसि जाइए मनुख तँ सहजे दुइए पएरक होइ छै। आगिक ताउ लग मन तबधि गेल हेतनि, भरिसक तँए एहेन बात बजली। मुदा लगले विचार घूमि गेलनि।

एहेन बात पुतोहुकेँ बाजक चाहियनि? एतबो नै होश रहलनि जे मुँहपर एहेन बात बजली। घर-दुआर केतौ पड़ाएल जाइ छै। एहेन उचित भेल जे पाकल आम जकाँ बुझै छथि? जिनगीक कोनो ठेकान छै, जौं कहीं हमरासँ पहिने अपने चलि जाथि तँ पोत-पुतोहुक गारजनी केहेन हएत? छौड़ा-मारड़िक गारजनी आ पटुआ सागक झोरमे की भेद छै। मुदा किछु बजली नै। नजरि दुनूक तिलकोरक तरूआपर सेहो रहनि, एहेन ने हुअए जे कोनो लहकि जाए आ कोनो असिझू भऽ नरमे रहि जाए। एक हुकुमदारनी दोसर केनिहारि।

बड़का-भैयाक असल नाओं सुलोचन आ बड़की भौजीक शान्ती छियनि। परिवारक बाबा समाजक भैयारीमे सुलोचन बड़के भैया आ शान्ती बड़कीए भौजीक रूपमे रहि गेली। ओना दुनू बेकतीक उमेर अस्सीसँ ऊपरेक छन्हि। मुदा ऊपरका खाड़ीक लाटमे धियो-पुतो बड़के-भैया आ बड़कीए भौजी कहै छन्हि।

सुलोचनक पलंगक मचमचीक अवाज आँगन धरि पहुँच दुनू बेकतीक कानमे ओहिना पहुँचल छल जहिना मलकार किसान परिवारमे बाधसँ अबैत माल-जालक आवाज अबैत। अकानि-अकानि अनुमान लगौली जे भरिसक बुढ़ा पहुँच गेला। अनुमानो ठीके रहलनि।

बड़की भौजी रेखासँ बेसी पनिगर। देहो हल्लुक। तँए जाबे रेखा छोलनी रखि पल्था सम्हारि दुनू हाथ रोपि उठैत-उठैत ताबे बुढ़ी (बड़की भौजी) तीनिए डेगमे पति -बड़काभैया- लग पहुँच गेली। पहुँचिते आँखि मूनि चारूनाल चीत, दुनू हाथ सिरमा दिस बढ़ौने देखि अर्द्धचेत जकाँ हुअ लगली। मुदा होश सम्हारि दहिना हाथक आँगुर नाक लग भिरौलनि। साँस नीके चलैत रहनि मुदा रस्ताक झमारसँ किछु गरम तँ रहबे करनि। पंखा हौंकलासँ भक्क टूटि जेतनि। पाछू उनटि तकली तँ डाँड़पर हाथ नेने रेखाकेँ मौकनी हाथी नहाँति लुदुर-लुदुर अबैत देखलनि। लग अबैसँ पहिनहि जोससँ हुकुम फेकलनि-

"कनी पंखा नेने आउ।"

एक तँ राकश दोसर नतल, दस डेग आगू बढ़बसँ रेखा हुकुमेकेँ नीक बुझलनि। घूमि तँ गेली मुदा मन बिसाइन जकाँ हुअ लगलनि। जेते विष-विस्सी बढ़ल जान्हि तेते मनक हौंर सेहो तेज होइत जाइ छेलनि। ई केहेन

भेल जे नैनसँ देखैक बदला पंखा अनैले घुमा देलनि। भलहिं डाक्टर नै छी मुदा डाक्टरक परिवारक बेटी तँ छीहे। पढ़ल-लिखल छीहे, तखनि किए बुढ़ी अपचंग भेल छथि। एक तँ बुढ़ा खेलाड़ जे एते दूरसँ पएरे एला से भेलनि मुदा बजितथि से नै भेलनि। लोककेँ कोनो बिमारी होइ छै तँ बजैए आ हिनकर पहने बकारे बन्न भऽ गेलनि। तेहने खेलाड़ि बुढ़ी छथिन। जेना लूटि लैतियनि तहिना दुरेसँ हुकुम चला देलनि। हमरासँ बेसी पनिगर तँ अपने छथिए किए ने दौग कऽ पंखा लऽ गेली। मन ठमकलनि। परबस जीव...। मनमे ठहैकिते रेखाक सभ विचार, पानि पड़ल झोलीक आगि जकाँ सिमसि गेलनि। जौं बात कटितियनि तँ पीड़ित-सँ-विपरीत भऽ जइतथि, जौं नै कटलियनि तँ बुढ़ाक जान-परान निकलि रहल छन्हि। अजीब लीला बुढ़ीक छन्हि। हड़पटाहि गाए जकाँ दूधक काल छड़पि उठती आ डोरी तोड़ि आड़ि-धूर कुदि कऽ टपै बेर खलीफा भऽ जेती। इहए छी परिवार? बाबा-दादी, बाबी-दादी, दीदी-पीसा, मौसी-मौसा, काका-काकी, भाय-भौजाइक सम्बन्धक कोनो महत नै, मुदा...। केतए बिला गेल बाबा-दादीक सम्पतिक गुण, जे पेट-काटि उपार्जित केने रहथि। उचित-अनुचित जिनगीक दिशा बोध करबैत अछि तैठाम मंत्र बनि ढोलक-झालिक संग हवामे रमैत रहै छै।

पंखाक आदेश पुतोहुकेँ दैत बड़की-भौजी कान लग मुँह सटा बड़का-भैयाकेँ पुछलखिन-

"किछु खेबो-पीबोक मन होइए?"

बड़की-भौजीक आवाज कानमे पैसिते ढोढ़ साँप जकाँ बड़का-भैया फुफकार छोड़लनि-

"की खाएब की पीब, अह्लादि कऽ पुछै छथि, बड़ हएत तँ यएह ने हएत जे एते दिन छानि-छानि खाइ छेलौं आब झाड़ि-झाड़ि खाएब।"

तरे-तर जे बड़का-भैया बजैत रहथि से बड़की-भौजी नीक जकाँ नै सुनि पौलनि। अह्लाद-सँ-अह्लादित होइत हाथीक सूढ़ जकाँ मजीराक ध्वनिमे बड़की-भौजीक गछाड़ देखि बड़का-भैयाक मन सुगबुगेलनि। बजला-

"कनी थम्हू। आँखिक पल उठबे ने करैए।"

भक्ति भावसँ बड़की भौजी धड़-फड़ाइत बजली-

''अच्छा, पानि आनि आँखि पोछि दइ छी।''

कहि बड़की-भौजी जुआनीक जोशमे पलंगसँ कुदि पानि आनए दौगली। चौकठिक अढ़मे पुतोहु पंखा नेने अबैत रहथिन, अकासमे उड़ैत बड़की-भौजीक नजरि रेखापर नै पड़लनि। एक गोटे असथिरसँ अबैत दोसर कुदैत-फुदैत निकलैत, मोखे लग भिड़ंत भऽ गेलनि। कोनो एक-दोसर परिवारक भिड़ंत नै तँए ने बड़की-भौजी किछु बजली आ ने पुतोहु-रेखा। मन दुनूक टाँगल बुढ़ाक कोसलपर। चलचलौ जकाँ छथि, अखने जे पाबि लेब से पाबि लेब। बड़की भौजीक औगताइ देखि रेखाक मनमे उठल, शान्त-चित्त रहैबला बुढ़ा एना विस्मित जकाँ किए कऽ रहल छथि। जिनकामे एते दूरसँ अबैक शक्ति छेलनि मुदा घरक लोककेँ कहितथिन से होश नै रहलनि। जरूर कोनो राजरोग छियनि। (राजरोग ओहन बिमारी होइत जे जड़ि-मूल नै छुटैत मुदा पथ-परहेजसँ जिनगी देने रहैए।)

राजरोग मनमे अबिते विचार फुद-फुदाए लगलनि। जहिना छठी रातिक दूध जिनगीक अंतिम क्षण धरि स्मरण रहैत, जेकर सफर जिनगीमे सभसँ नम्हर होइ छै। किछु रोग एहनो होइ छै जे चटपट जिनगीकेँ तोड़ि दइ छै आ किछु एहनो होइ छै जे मुसकारीक मूस जकाँ कुहि-कुहि जिनगी लइ छै। भरिसक बुढ़होकेँ ने सएह पकड़ि लेलकनि।

चून जकाँ मन चुनिया गेलनि। ओना जखनि दुनू गोटेक (सासु-पुतोहु) कानमे बुढ़ाक पहिल ध्वनि एलनि तखनि दुनूक अपन-अपन उत्साह रहनि। बड़की-भौजीक उत्साह रहनि जे राज-दरबारसँ घुमलाहेँ। नीक जकाँ परिवारक विदाइ भेले हेतनि, देखा चाही चाइन केहेन चमकैए।

रेखा कोठरी पहुँच बुढ़ा लग बैस किछु पुछैक ओरियान करिते रहथि आकि बड़की-भौजी लोटामे पानि नेने पहुँचली। मनमे शंका जगलनि। शंका ई जे बुढ़ासँ किछु कहा ने नेने होथि। मुदा बिनु सुनल बात बाजबो उचित नै। तहूमे एक दिस मालिक (पति) छथि दोसर दिस पुतोहु। जौं कहीं दुनू एकदिशाह भऽ जाथि तखनि अपन गति की हएत? गाड़ी उनार भेने चढ़निहारक जान थोड़े बँचै छै। जौं बँचबो करै छै तैयो अबाह बनाइए दइ छै। मुदा मनक ताप-संताप बनले रहलनि। पुतोहुकेँ कहलखिन-

''कनियाँ, अहाँ उन्टा घुट्टी ऐँठ दियनु।''

घुट्टीक भार देला पछाति बड़की-भौजीक मन रमकलनि- ओह, लगले दोहरा कऽ अढ़ाएब नीक नै तहूमे तीन गोटेक बीचमे। नै तँ करू तेलसँ तरबा रगड़ब नीक होइतनि। पानिसँ चानि धुआ जइतनि आ तेलसँ तरबा रगड़ा जइतनि तँ अनेरे होशमे आबि जइतथि। खैर, जे हूसल से हूसल। चानिपर पानिक फुहार पड़िते बड़का-भैया आँखि खोललनि। आँखि-पर-आँखि पड़िते बड़की-भौजीक आँखिमे ललकारीक रेगहा जगलनि। जगिते सहमि गेली। अनेरे बुढ़ाड़ीमे घी-ढारीक बात मन पाड़ै छी। लोककेँ अपनो उमेरक ठेकान करैक चाही। दुनियाँ तँ अजीबे छै, दुनियाँक एको प्रतिशत लोक एहेन नै अछि जे अपने माए-बहिन जकाँ दुनियोँक माए-बहिनक चर्च नै करैत अछि मुदा एते अपराध किए होइ छै। नैतिकताक महत जौं नै होइतै तँ माए-बहिनिक अपराध कहाँ केतौ होइ छै।

पतिक थरथराइत मन छाती डोला देलकनि। पँजरा उनटि तकली तँ पुतोहुकेँ उन्टा घुट्टी जोर-जोरसँ ससारैत देखली। मुदा शंका भेलनि, शंका ई जे जरूर कोनो बात हेतै। बुधियार आदमी काजे देखि आदमी चिन्हैए। जौं कहीं घुट्टीए पकड़ि घोलटिया लेलकनि तखनि अपने तँ बिच्चेमे रहि जाएब। पुरुखक ठेकाने कोन। साँढ़-परा जकाँ कखनि की करत तेकर कोन ठेकान। कखनो भगत सिंह बनि जान फूकत तँ कखनो वेश्यालयमे दिने-देखार लूटत-लूटाएत। मन पड़लनि घी-ढारिक मंत्र। मुदा आब ओ मंत्रक समए कहाँ रहल। गाछपर सँ खसैत लोक जकाँ भौजीक मन झुललनि मुदा थाकल ठेहियाएल पतिक सेवाकेँ प्रथम प्रश्रय दैत अपन बेथा बिसरि भौजी पति (बड़का भैया) केँ कहलखिन-

> ''लोककेँ सौंसे देह गुड़-घा रहै छै से बरदास कऽ समैपर नहेबे-खेबे करैए आ अहाँ मुरदा जकाँ आरो धड़ खसौने जाइ छी।''

भौजीक बात भैयाकेँ कठानि नै लगलनि। पुरुखपना जगलनि। मरितो धरि पत्नी लग झूकि जाएब तँ केहेन पुरुख हएब। फुड़फुड़ा कऽ चिड़ै जकाँ, उठि बैस भौजीकेँ कहलखिन-

''कनी कुर्ताक बटम खोलि दिअ।''

''अहिना उनटा-पुनटा बुझै छिऐ।''

झपटैत पतिकेँ भौजी कहि रेखाकेँ आदेश देलखिन-

“पहिने पएरक पैताबा कनियाँ निकालि दियनु।”

ओना बड़का-भैया रंगा रूपैआक मुस्की देलनि मुदा मनमे उठि गेलनि पत्नीक बात ‘उनटा-पुनटा काज।’ बजला किछु ने। सभ बात स्त्रीगण लग बाजब उचित नै। जौं ओकरा नाक नै रहितै तँ की-की ने करैत। मुदा छाती राँइ-बाँइ भेल जाइत रहनि। कुर्ताक बटम खोलिते बड़की-भौजी राँइ-बाँइ भेल हृदए देखलनि। बजली किछु ने। देह खलिआइते बड़का-भैया बजला-

“कनी लेटरीनो जैतौं आ नहाइओ लैतौं।”

एक राकश दोसर नोतल भौजी आदेश फेकलनि-

“कनियाँ, अहाँ चौका सम्हारू हम बाथ रूप सम्हारने अबै छी।”

दुनू गोटे माने साउसो आ पुतोहुओ अपना-अपना मोने खुशी जे खेबे कालक गप ने रस पाबि मिठौंस होइ छै। दुनूकेँ खुशी देखि बड़को-भैया खुश। परिवार खुश तँ अपनो खुश। जौं खुशी नै तँ बजार घुमैकाल ओहिना बाप बेटाकेँ आ माए बेटीकेँ कोरामे लऽ घुमैत रहैए?

कोठरी छोड़ैक विचार तीनू गोटे करिते रहथि आकि शिवशंकर पहुँच गेलखिन। किनको लजेबाक प्रश्ने नै। बड़का-भैया बड़के-भैया भेला, भौजी भौजीए भेलखिन आ रेखा अंगीतेक बेटीओ आ कौलेजक विद्यार्थीओ। कोठरी प्रवेश करिते शिवशंकर पूछि देलखिन-

“भाय, केहेन यात्रा रहल?”

जहिना मुर्दा ऊपर अस्सी मन जारनि लादि जरौल जाइत तहिना अस्सी मन पानिमे डुमल बड़का-भैया मिरमिराइत कहलखिन-

“अशुभे रहल।”

भैयाक बात सुनि शिवशंकर कहलकनि-

“पहिने फ्रेस भऽ जाउ, नहा-खा लिअ तखनि निचेनसँ आगूक गप हेतै। ताबे हम बैसै छी।”

शिवशंकरक मनमे रहनि जे नव-नव रचना अनने हेता, सेहो देखि लेब आ दरबारक कागतो-पत्तर देखि लेब। एक्के वस्तुकेँ एक स्तरसँ गिरौलापर अनेक तरहक दबाब पड़ै छै। असथिरसँ गिरौलापर नरमो वस्तुकेँ बँचैक संभावना रहै छै, जखनि कि जोरसँ गिरौलापर कड़ो वस्तुकेँ टुटै-फुटैक संभावना भऽ जाइ छै। बड़का-भैयाक स्थिति सएह रहनि। मुदा दबाबो देब उचित नै बूझि शिवशंकर चुपे रहला मुदा रेखाकेँ कहलखिन-

''पान सए नम्बर जर्दा देल पान खुआ दिअ। एक झपकी ताबे मारि लेब।''

जेते काज बड़का-भैया अदहा घंटामे करै छला तेतबे करैमे घंटोसँ ऊपर लागि गेलनि। जहिना पएरमे जात बान्हि वा जहलमे डंडा-बेड़ी..., मुदा से शिवशंकर नै बूझि सकला। कारण भेलनि जे रेखा कौलेजमे खेल-कुदमे नम्बर एक छल आइ उठबो-बैसबोमे असोकर्ज भऽ रहल छन्हि। मनमे उठलनि अखराहाक खलीफा पहिने डण्ड-बैसक कऽ लपटैए, तखनि कुश्ती लड़ैए आ तेकर पछाति छोट-छोट खलीफाकेँ लपटाबैए। पछाति सवारी कसि परीक्षा लइए। जिनगीओक अवस्था अहिना होइ छै। बड़का-भैया ऐमे चुकला। भोगी-विलासीक परिवार बना लेलनि आ आशामे जीबै छथि जे चाननक गाछी लगौने छी। सोचिते-सोचैत आँखि बन्न भऽ गेलनि। भकुआइत ओंघा गेला।

बड़का-भैयाकेँ पहुँचिते बड़की-भौजी पनबट्टी नेने पहुँच गेलखिन। दुनू गोटे पान खेलनि। शिवशंकर पुछलखिन-

''अशुभ की कहलिऐ?''

शिवशंकरक प्रश्न सुनि बड़का-भैया झमान भऽ जेना हजारो हाथ ऊपरसँ खसला-

''मिसिओ भरि जेकर आशा नै छल से भेल मुदा...?''

खेतक अकटा-मिसियाकेँ कियो अन्न मानबे ने करैत तँ कियो सागो आ रोटीओ बना खाइए। खेती भलहिं नै होउ मुदा ओहो (अकटा-मिसिया) मैदानमे डटल अछि। जौं कनियोँ नजरि नै रखब तँ जजातेक छातीपर चढ़ि धरतीकेँ अन्नमंडल बना दइए। बाट-घाट रोकने तीर्थ यात्रीकेँ किछु नै बिगड़ै छै, देखै-सुनैक नव-नव स्थान भेटै छै। मानियौ वा नै मानियौ समैक शक्ति सबल होइ छै।

बड़का-भैयाक चेहराक क्रिया देखि शिवशंकर सोचथि जे चेहरा कहि रहल छन्हि जे जेना धमसुरक चोट लगल होन्हि। जटा-जटीनक बेंगकेँ जहिना कुटनी कूटि पेटसँ पानि निकालि पानिक संग मुइल बेंगकेँ मटकुरमे नेने गीत गबैत केकरो ऐठाम फेक भरि दिन फौतली सुनैक रस्ता बना लैत तहिना गसिया कऽ शिवशंकर पकड़लनि। मुदा मनमे ईहो होन्हि जे धमसुरक चोट कनियाँ खड़खड़ाएल नै। एकाएक एना किए भेल। जाबे अकासमे पानि पानिसँ नै टकराएत ताबे बिजली केना बनतै आ बिजली नै बनत तँ ठनका केना बनत। भलहिं अहाँ ओकरा सोनोसँ अमूल्य बुझैत होइऐ मुदा ने राधाकेँ नअ मन घी हेतनि आ ने राधा नचती। केकरा बुते हएत जे ओकरा पकड़ि हाथमे आनत। ओकरा पकड़ैले गोवरधन जकाँ गोबरक ढेरी बनबए पड़त, तैपर फुलही थारी राखए पड़त तखनि जब समए औतै समुद्रसँ करिया हवा उठि अदलि-बदलि वादल बनि दोसर वादलसँ टकराएत, ओही टक्करसँ बिजली बनि ठनका बनै छै। तखनि जा कऽ ओइ थारीपर ठनका खसत। केतबो ठनका जोर करतै मुदा गोबर की ओकर शक्तिकेँ शक्ति मानतै? रस्ता रोकतै? भलहिं अश्वमेघ युद्ध किए ने होउ!!

जहिना छातीपर बैस कंठ पकड़ि बलजोर मुँहसँ बजबा लैत, तहिना बड़का-भैया बजला-

''आशाक विपरीत अपना हाथे केलौं।''

बड़का-भैयाक बात सुनि शिवशंकर विर्ड़ोक मोड़मे पड़ि गेला। पुछलखिन-

''एना किए?''

''तीन गोटे कारबारी छेलौं। दू गोटे शिकारी छेलौं आ एक गोटे अनाड़ी छला। हुनका लिए दिन-राति बारहे-बारहे घंटाक होइ छै सहए बुझैत रहथिन। ओना जहिना आदि ऋृषिका सबहक परिवारकेँ जौं कोनो परिवार कहि देबै तँ ई जल्दिवाजी भेल। इंजिन निर्माताक परिवार जौं इंजिन निर्मितक शक्ति नै रखत तँ वंशक रक्छा केना हेतै।''

''हँ तखनि?''

“प्रस्ताव देलिऐ। दोसरो प्रस्ताव एलै। मुदा जेकर कल्पना नै छल से भेल!”

“से...।”

“प्रस्ताव दइते जे दोसर छला, जिनकासँ मिसिओ आशा नै छल जे ठनका जकाँ बनि जेता। जहिना अकासमे उड़ैत गीध अपन सहयोगी चीलकेँ देखा दैत आ हरड़ी-विदेशरक मकड़क मेलामे अरबा चाउरक चिक्कसमे, इनहोर देल पानिसँ बनल रोटी आ तैपर पँचफोरना देल अल्लूक दमक संग हाथमे रोटी लऽ मेलो देखैत आ खेबो करैत रहैए आ तखने जहिना हाथक रोटी झपटि चील पोखरिक महारक पीपरक गाछपर बैस कुचड़ए लगैए, तहिना भेल। तेना झपटलक जे छाती छँहों-छित्त भऽ गेल। केतबो अपनाकेँ असथिर करी मुदा नै भऽ सकल। अन्त भेल जे संदेश तँ समाजमे जेबे करत। मुदा-संदेशो तँ सनेसे छी। केम्हर केहेन बिलहाएत से के कहलक।”

“आब?”

“देखार होइ दुआरे बहुमत नै हुअए देलिऐ। सर्वसम्मति कऽ जान बँचा लेलौं।”

सुनि दुनू गोटे मर्माहत भऽ गेला। मुदा दुनूक मनमे दू तरहक विचार नाचए लगलनि। बड़का-भैयाक मनमे उठैत रहनि जे ई उमेर सन्यासक छी। हमरा कोन ऐ दुनियाँ-दारीसँ मतलब अछि जे अनेरे...।

शिवशंकरक मनमे उठैत रहनि जे जाधरि समए नै पकड़ि चलब ताधरि समए संग नै चलि सकब। विकासोक प्रक्रिया छै। ओहीमे गति-मति संगे चलै छै। से नै भेल।



(**“बलजोर” कथा** डाक्टर **प्रेम शंकर सिंहकेँ लेल...)**

बेटी हम अपराधी छी

सही समैसँ सालभरि पहिने मनोहरकँ सेवा मुक्तिक चिट्ठी ऑफिसमे थम्हा देलकनि। थम्हबैक कारण रहनि काजक गजपटी। काजक गजपटीक कारण रहनि मनक संताप। ऑफिसक सभ मानि लेलकनि जे मनोहरक मन चढ़ि गेलनि तँए समुचित काज करए जोग नै रहला। ऑफिसेक कुरसीपर बैसल रहथि आकि चपरासी आबि हाथमे चिट्ठी थम्हेलकनि। पहिने तँ नै बूझि सकला जे सेवामुक्त भऽ रहल छी मुदा पढ़ला पछाति केकरोसँ पुछौक जरूरति नै रहलनि। कोनो लेन-देनक कारण नै बतहपनीक कारण स्पष्ट लिखल रहनि। जहिना बर्खा होइकाल अनासुरती मेघ ढनढ़नाए उठैत तहिना एकाएक मनोहरक मनमे भेलनि। जेकरो कहबै सेहो बताहे बूझि सुनबो ने करत। तखनि कहबे किए करबै। अनेरे मुहोँ दूरि करब। मनोहरक मन जेना बेर-बेर चनकए लगलनि। टुकड़ी-टुकड़ी भेल मनमे उठलनि जे सभटा कागत-पत्तरकँ छीट-छाटि दिऐ, टेबुल-कुरसीकँ उनटा-पुनटा दिऐ आ निकलि जाइ। मुदा मनक लगामकँ बुधि पाछू खिंचलकनि। बदलैत सोच विचार केलकनि जे एक तँ लिखतन बताह बनाइए देलक तैपर एहेन काज जौं करब तँ थियोरी-प्रेक्टीकल संग भऽ जाएत, तखनि बतहपनीक सजाक हकदार बनैमे केते देरी लगत। कुरसीसँ उठि सोझहे घरमुहाँ रस्ता पकड़लनि। डेराक सुधिए ने रहलनि जे भड़ो-किराया फड़िछा लितथि। बेसुधि मनमे बेठेकान सोच उठनि आ पानिक बुलबुला जकाँ फूटि जान्हि।

गामक सीमा परहक बड़क गाछ देखिते भकइजोत जकाँ भेलनि। भकइजोतेमे देखलनि जे इएह गाम अपन छी। मनमे अप्पन अबिते पएर जवाब देलकनि-

"आगू नै बढ़ब। गाममे मुँह देखबैबला नै छी।"

मुदा तपाएल मुँह लगले पएरकँ कहलकै-

"ईह बूड़ि रे, मुँह देखबैबला नै छी! ई समाज मुँह देखबैबला नइए! हरिदम विवेक-विवेकक भाँग घोड़ि-घोड़ि इनारेक निशाँएल पानि बना देने अछि आ निर्लज जकाँ बजैमे लाजे ने होइ छै, सुझबे ने करै छै जे जखनि पाइक हाथे शिक्षा विकाइए ओ शिक्षा पाइबलाक हएत

आकि बिनु पाइबलाक। जइ समाजमे रोग-वियाधि पाइक हाथे छोड़ौल जाइ छै तइ समाजमे बिनु पाइबलाक गति-मति की हेतै। रौद-बसात, जाड़, पानि-पाथरक रक्छा केना करत। अदौसँ अबैत नर-नारीक सम्बन्धक बीच जखनि दान-दहेज एहेन बड़का मोनि घारक पेटमे फोड़ि देने अछि, जइ टपानमे केते हाथीओ-घोड़ा फँसि जान गामा रहल अछि। तइ मोनिमे अदना-अदनीक अह्लादे केतै कएल जा सकैए। महिंसक आगू वीणक कोन मोल छै।''

मोने-मन मनोहर घर दिस बढ़बाक हूबा करथि मुदा पएर उठैले तैयार नै होन्हि। जौं पएर थोड़े तैयारो होन्हि तँ आँखि साफे नै। धरतीपर ओंघराएल मनोहरक सभ सुधि-बुधि हरा कऽ छिड़िया गेलनि।

मोबाइलक जुग रहने समाचार पसरैमे देरीए किए लगत। गाम-समाजक बच्चा-बच्चा बूझि गेल जे मनोहर बताह भऽ गेला, नोकरीसँ निकालि देलकनि। पेन्शनो आने-आन लूटतनि।

पत्नी-सुनैनाकेँ पहिने बिसवास नै भेलनि। आइ धरिक जे पति-प्रेम मनोहरसँ भेटल छेलनि ओ अनकासँ बहुत बेसी छेलनि। मुदा जानकीक काँच बुधि मानि गेल रहै जे पिता पागल भऽ गेला, नोकरीसँ भगा देलकनि।

गामे लोकक जेर संगे दुनू मायधी अर्थात् सुनैना आ जानकी, विदा भेली। लोकक बीच रंग-रंगक घौचाल चलैत। कोनो निको मुदा बेसी अधले। घौचाल सुनि दुनू मायधीक मन विचलित हुअ लगलनि। बेटीक मुँह सुनैना निहारैत आ माएक मुँह जानकी। पोखरि घाटपर जहिना रंग-रंगक चालि रंग-रंगक भुरही-माछ चाल दैत तहिना रंग-रंगक चालिक बात दुनू गोटे सुनैत। कचकूह मन जानकीक तँए बेसी विचलिते होइत गेलै। बताह भऽ बाबू छोड़ि पड़ाए जेता, समाज सहजे हमरा सन-सनकेँ भगाइए रहल अछि। तखनि माएक की गति हेतै।

अधबटिया पछाति सुनैनोक मन मानि गेलनि जे पति पगला गेला। जानकीपर नजरि अँटका मोने-मन सोचए लगली जे बाइस बरखक कुमारि बेटीक मुँह सिंह दुआरिपर केना देखब। की दुनियेँ उजड़ि रहल छै आकि उजाड़ि चढ़ा देलक अछि? एको बीत धरती नै बँचल अछि जेतए नोरक धार सुखौल जाएत।

जहिना दंगलक खलीफा पटका चारू नाल चीत खसैए तहिना मनोहर बड़का गाछक निच्चाँ जिनगीक अखड़ाहापर चारूनाल चीत भेल पड़ल मोने-

मन सोचथि, अपन जिनगीक हारिक कारण अपने छी तँए पत्नीओ आ बेटीओ लेल अपराधी छी। मुदा फेर मन कहनि जे अपराध कथी केलौं जे अपराधी भेलौं। भवसागरमे डुमल मनोहरक शरीर चेतनशून्य भेल रहनि। तखने पत्नीओ आ बेटीओ लग पहुँच मुँह निहारए लगलनि। दुनूक मन कहलकनि मुँहक रूखि कहाँ कहै छन्हि जे कोनो रोग छन्हि। रणभूमिक हारिक रोग आ बिमारीक रोग अपन बात अपने चिकड़ि-चिकड़ि कहै छै जे की छी। मुदा बन्न मुँह देखि मनोहरक छातीपर दुनू गोरे अपन-अपन सती हाथ रखलनि। छातीक धुकधुकी समतूले बूझि पड़लनि। मुदा आखिर किछु छथि तँ एकक पिता दोसराक पति छथि ने। दुनूकँ अपना-अपना बिसवासमे शंका भेलनि। शंका होइते एक-दोसराक मुँह दिस तकलनि। आँखि-आँखिक बीच पुल-सड़क बनल। सुनैनाकँ सान्त्वना दैत जानकी बाजलि-

"माए, हृदए तँ ओहिना पवित्र देखै छियनि।"

कदमक गाछक झूला जकाँ आस मारि सुनैना कहलखिन-

"बेटी, पुरुखक छातीपर बहुत भार छै। जेकरा माथपर जारनिक बोझ आकि अन्न-पानिक बोझ पड़बे ने कएल ओ ओइ बोझ उठबैबला छातीक धुकधुकी गनि केना सकैए। से नै तँ छातीए डोला कऽ देखहुन जे मुँहसँ केहेन बकार निकलै छन्हि।"

माएक विचार सुनि जानकी आरो जाँच-पड़ताल करब नीक बुझलक। जहिना कलियाएल अड़हूल फुलाएल रहैए आकि कलीक अवस्थामे रहैए तहिना जानकीक मन छातीसँ ससरि हाथ दिस बढ़ल। केना नै बढ़ैत कहुना अछि तँ छातीक ऊपरेसँ ने लटकल अछि। बाजलि-

"माए, से नै तँ छातीक धुकधुकीसँ अपनो मन धुकधुकाइते अछि। हाथक नारी पहिने देखि लहुन।"

नारी तँ नारी छी। एक पुरखियाह। छाती जकाँ दुनू गोटे एक्केबेर थोड़े पकड़ि सकै छथि। मुदा पहिने के देखत, दुनूक बीच ओझरी लगि गेलनि। एक पुरुष हजार रूप। की मनोहर जानकीओ लेल वएह छथि जे सुनैना लेल? मुदा की मनोहर सुनैनाक छियनि आ जानकीक नै? तखनि? जानकी सुनैनाकँ कहलक-

“माए, छातीक धुकधुकी तँ जोरसँ चलै छै, गनल भऽ जाइए मुदा हाथक नारी आइ धरि कहाँ गनलौं हेन।”

बेटीक बात सुनैनाकें सोहनगर लगलनि। ऐठाम कियो आन अछि जे अछिओ ओ तमसगीरे अछि, उकटा-चाल करत। बामा हाथसँ तरहत्थी पकड़ि दहिना हाथ सुनैना मनोहरक बाजूपर देलनि। आँगुरसँ नारी पकड़िते कानमे झड़झड़ाए लगलनि-

“सुनैना, बहुत आशा जिनगीसँ केने छेलौं। मुदा, टूटि कऽ सभटा छिड़िया गेल। समाजक डर हमरा नै होइए मुदा अहाँ पत्नी छी तँए कहै छी। बताह बना बतहपनीक फड़मान हाथमे धरा देलक। कमेलहो खेलक आ अगिलो कमाइ मारलक। जखने घरसँ निकलब धिया-पुता जानि-जानि देहपर कियो गोला फेकत, कियो काँट फेकत, कियो गोबर माटि फेकत। केकरा की कहबै, हमरा बातकें कियो कान धड़त। आइ दस बरखसँ जानकीक बिआहक पाछू पड़ल छेलौं, मास दिन पूर्व जवाब भेटल जे वैवाहिक सम्बन्ध भंग भऽ गेल!”

आरो कान लगमे आनि सुनैना मनोहरक हाथ उठा कानमे सटौलनि। धड़धड़ाइत सुनए लगली-

“हम ओइ जुगलासँ पुछै छिऐ जे कोन बुधिए जमाए बना एते सेवा करौलक। बाइस बरखक बेटीक मुँह देखल जाएत। जखनि घरक भार उठबैमे अक्षम भऽ गेलौं अनेरे जीविए कऽ की करब। मुदा परिवार? सेहो कहाँ रखि पौलौं। दस बरखक अवस्थामे बेटी कन्यासँ कनियाँक रूप धारण करए लगैए तैठाम जानकीक बिआहक चर्च पत्नी दस बरख पूर्व बारह बरखक अवस्थामे केलनि। अपनो ओइ पाछू पड़लौं। काजोक अगुताहत नहियेँ बूझि पड़ल किएक तँ समयानुसार परिवर्त्तन हेबेक चाही। बीस-बाइस बरखक बच्चिया समाजक कुमारि बच्चिया छी तँए समाजमे केकरो चहु अलगबैक अधिकार नै छै जे ओकरा अलग बुझए। जौं जमीनो बेचि जानकीक बिआह कऽ लइ छी, तँ की समाज भार उठौत जे एहेन काज आगू नै हएत?”

विस्मित भेल सुनैनाकेँ देखि जानकी बाजलि-

''माए, कनी हमरो बाबूक नारी देखए दे।''

जानकीक बोल सुनि सुग्गाक लोल सुनैना निहारए लगली। यएह अवस्था छी, लोक सती बनैए। यएह अवस्था छी, लोक वेश्या बनैए। यएह अवस्था छी, जइमे लोक मातृ-पितृ भक्त बनि भगवत भजन करैए। मुदा जानकी...?

पतिक हाथ सुनैना जानकीक हाथमे दैत कान ठाढ़ कऽ मुँह निच्चाँ गोड़ि लेलनि। पिताक कब्ज पकड़िते जानकीक कानमे घनघनाइत आएल-

''बेटी जानकी! हम अपराधी छी। हमरासँ अपराध भेल।''

''नै बाबूजी नै, सौंसे दुनियाँ भलहिं कहए मुदा अपन जुआन नै निकलि सकैए। चौथारि सीमा धरि आबि अहाँ परिवारक सेवा करैत रहलिऐ। दुनियाँ बौक कहए आकि बताह कहए, कहऽ दियौ। मुदा अपन इमान कखनो धरमसँ विचलित नै हएत। हम मिथिवाला छी, हमरा वाजूमे शक्ति अछि। जहिना अपन कालखंड इमानदारीसँ टपलौं तहिना अगिला खंड हमरो छी। अपना दरबज्जापर बैस भगवत भजन करैत रहब, देहक चिन्ता नै करब। हमहूँ तँ सन्ताने छी किने। बेटा रहैत तँ बहिन बनि भार दैतियनि। मुदा जखनि भाए नै अछि तखनि तँ हमहीं ने बेटा-बेटी भेलौं। ई प्रश्न हमरो भेल किने? बिआह हएत, सासुर बसब मुदा अहाँकेँ ऐ अवस्थामे छोड़ब केते उचित हएत। नीक-बेजाएक भार के उठौत। अपना जीबैत अपन माए-बापक एहेन गति भऽ जान्हि जे अनसोहाँतो-सँ-अनसोहाँत भऽ जाए, ई दोख केकरा सिर सवार हएत। मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे छातीक कोन बात कोढ़-करेज धरि खोखड़ि-खोखड़ि खाइते आएल आ रहत। हे शिव, एहेन धनुष उठबैक भार जौं अपने नै लेब तँ की ई समाज उठा सकैए? की मिथिलांगना अखनो धरि ई नै बूझि सकली जे माए-बाप जनमदाते टा नै छथि जिनगीक हारि-जीतक सूत्रधार सेहो छथि, जौं से नै तँ सासु पुतोहुकेँ भिखमंगनी बेटी कहि किए मुड़ी गोंतबै छथिन। जरूरति अछि समायानुसार शक्ति उपका संचय करैक। जाबे तक से नै हएत

ताबे तक पुरुखक नजरि निच्चाँ केना कऽ पाबि सकै छी। देखए पड़त अपन भूत आ भविस। जाधरि अपन भूत-भविस देखि नै लेब, अपन-अपन बीर्तमानक लक्ष्मण रेखा खींच रक्षाक भार स्वयं नै उठा लेब ताधरि ॠृषिका, सती-सध्वी, पतिव्रता आदि-इत्यादि शब्दक साकार जिनगी केना बनि सकत?''

जहिना नट-नटीनक नाचमे दर्शक चारू दिस घेरि बैसैत आ बीचमे दुनू अपन जिनगीक राग अलापति तहिना समाजक लोकक बीच मनोहर, सुनैना आ जानकी, जिनगीक राग अलापि घर दिस विदा भेली। आगू-आगू सुनैना-जानकी मनोहरक दुनू हाथ पकड़ने आ पाछू-पाछू धिया-पुतासँ चेतन धरि।

घरक मुड़ेरा देखिते मनोहर दुनूक हाथ झमाड़ि बाँहि छोड़ा बमकि बजला-

''बिसवासघात..., बिसवास घाती छी...। समाजमे जेहने मनुख रहत तेहने ने बनत। यएह बिसवास देने छल जे बुढ़ाड़ीमे अहाँ गर्त्तमे खसब। ओ सभ पागल बना देलक।''

पुन: झोंकमे-

''नै सुनत दुनियाँ नै सुनह मुदा जाबे घटमे प्राण-घटवार रहत ताबे यात्रीकेँ कहबे करबै। कहिते रहबै।''

सातम दसकमे मनोहर जिला-कार्यलयमे किरानीक नोकरी शुरू केलनि। समाजक पहिल विद्यार्थी जे पहिल श्रेणीसँ मैट्रिक पास केलनि। कौलेज लगमे नै रहने आगू पढ़ैक आशा तोड़ि जिनगीक मैदानमे उतरल। मुदा रिजल्टक कागत आँखिक सोझ अबिते मनमे उपकि गेलै जे जहिना प्रथम श्रेणीक फल भेटल तेहने फलक गाछ रोपि ओकर सेवा टहल जिनगी भरि करैत अपनो आ समाजोकेँ नीक फल खुएबनि।

एक तँ सरकारी कार्यालयमे काज नै जे पढ़ल-लिखलक अँटाबेस होइत, दोसर स्कूलो-कौलेज कम रहने लोक पढ़िओ ने पबै छल। संयोग नीक बैसलै जिलाक कृषि विभागमे किरानीक नोकरी मनोहरकेँ भऽ गेल। जहिना दशमीमे दुर्गास्थान साँझ दिअ जाइसँ पहिने साँझ-देनिहार अपन-अपन घरक भगवतीक आगू साँझ दऽ लइए तखनि ने दसनामा देवालयमे जाइए,

तहिना मनोहर नोकरीपर जाइसँ पहिने माता-पिताक असीरवाद लऽ लेब जरूरी बुझलक। खुशी तीनू गोटेक मनमे। मुदा तीनूक तीन रंगक। किए ने तीन रंगक होइत। हजारो रंगक फूलमे सुगंध होइ छै, सभकेँ अपन-अपन सुगंध सिरजन कऽ पसारैक हक छै।

दलानक ओसारपर सतदेव कोदारिमे पच्चर लगबैत रहथि। मनोहरकेँ खुआ आँगनमे माए असीरवाद देलक। आँगन-दलानक बीच मनोहरक मनमे उठल ओह, माएकेँ तँ कहि देलियनि जे नोकरीपर जाइ छी, ओ असीरवादो देलनि जे आब तोंही सभ ने ऐ घरक खुट्टा भेलहक। हम सभ तँ पाकल आम भेलौं। मुदा से नै जौं माएक एक रूप छन्हि, पिताक एक रूप छन्हि तँ तैबीच एकटा संयुक्तो रूप तँ छन्हिहेँ। तँए दुनू गोटेक ओइ रूपकेँ प्रणाम कऽ असीरवाद लेब। डेढ़िए परसँ बाजल-

''माए, कनी एम्हर आ।''

शुभ काजमे विलमैक दोख अपनापर माए केना लेती। अँइठे हाथे दरबज्जपर पहुँच बजली-

''की कहलह''

पिता-सतदेवकेँ मनोहर गोड़ लागि बाजल-

''बाबू, नोकरी करए जाइ छी।''

'नोकरीपर' कानमे पड़िते सतदेवक मन खुशिया गेलनि। सुगंधित फूलक फुलवाड़ी आ बिनु सुगंधक फुलवाड़ीक हवा जहिना दोरस रहैत तेना नै बूझि पड़लनि। असीरवाद दैत सतदेव मनोहरकेँ कहलनि-

''बौआ, डिक्शनरी जकाँ जौं तीनिए टा शब्दक कोष बना लेबह तँ मुइला पछातिओ बेर-बेर दर्शन होइते रहबह। भरल-पूरल देखि आत्मा जुड़ाइते रहत।''

सिनेह सिक्त सतदेवक शब्द सुनि मनोहर सहमि स्वीकारैत पुछलकनि-

''ओ तीन शब्द की छिऐ?''

"बौआ, झूठ नै बजिहऽ। दोसर, केकरोसँ एक्को पाइ डाँड़िहक नै। तेसर, दरबज्जापर जे मनुख-शक्लक आबथि हुनका एक लोटा पानिक आग्रह जरूर करिहनु।"

पिताक शब्दकेँ गुरु-पित वचन बूझि तत्काल तँ मनोहर गीरह बान्हि रखि लेलक, रखबो जरूरी छेलै। एगारह बजे ऑफिस पहुँचक छेलै। मुदा पिताक वचनकेँ हास्य शब्दकोषमे नै हहासक डरसँ चाइलेंजकोषमे लऽ अंगीकार केलक।

दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनोहर अपन उपस्थिति दर्ज करा, सभकेँ प्रणाम-पाती करैत, कोहवर जकाँ असकरे कुरसीपर बैस गेल। कोनो काज नै देखि चुनौल तमाकुलक गीरह जकाँ गामक गीरह खोलए लगल तँ भक्क दऽ पिताक असीरवाद मन पड़लै। होइतो अहिना छै जे जखनि रॉकैट तैयार भऽ उड़ैक रूप धारण करैए तखनि धरती छोड़ैसँ पहिने उनटा जाँच-पड़ताल होइ छै। मनोहरोकेँ जिनगीक पैछला कोनो बात मन नै पड़लै, पहिने पिताक वएह तीनू शब्द मन पड़लै जे तीन प्रश्न बनि जिनगीक आगूमे ठाढ़ भेल। जौं अपन प्रश्नक जवाब दइ जोकर नै छी तँ कोनो लजेबाक बात नै जे अपन कमजोरी केना सुहकारी। जाबे तक कोनो खेतमे नव सिरासँ जोति नव बीज नै देल जाइ छै ताबे नव फलक आशा केना हएत। कुरसीपर बैसल मनोहरक मनमे पिताक असीरवादक तीनू शब्द तीन प्रश्नक गाछ रूपमे ठाढ़ भेल। कुशल माली जहिना सभ फूलक अपन-अपन पतियानी हियबैत तहिना मनोहरो अपन तीनू शब्दक पाँति हियाबए लगल। मुदा सतरंगा मकान बनौनिहार इंजीनियर जकाँ गुनियाँ-परकालसँ नै गुनि, संकल्प बूझि विचारए लगल। ओना विचारक खण्डन-मण्डन जेते बेसी होइ छै ओकर बीज-स्वरूप दूधक मक्खन जकाँ ओते भेटै छै। मुदा मात्र दू घंटा ऑफिसमे रहैक छै। डेरो-डंटा ठीक नहियेँ भेल छै, तीन घंटा रस्ता काटि गामो जेनाइ छै। तँए जेते खण्डन-मण्डन हेबाक चाही तेते तँ नै मुदा तात्विक विचार जरूर केलक। ओना हनुमानजी जकाँ कखनो अकास मार्गपर नजरि पड़ै तँ विहाड़ि जकाँ भऽ जाइ, मुदा लगले महावीर जकाँ बदलि लिअए। 'झूठ नै बाजब।' कोन बड़का प्रश्न भेल। नान्हिटा प्रश्न अछि। ने हमरा एक सेलक जीवाणुक इतिहास देखक अछि आ ने सोनाक लंका। चौबीस घंटाक दिन-रातिमे जे समए संग अबैत जाएत आ विवेक कहैत जाएत तेतबे करबाक अछि। मनमे खुशी भेलै। जहिना तीन प्रश्नक उत्तरमे एक प्रश्न हल भेने पास नम्बर चलि

अबैत तहिना मनोहरक मनमे पासक आशा जगलै। पास बदलि पासापर दोसर आस मारलक। 'दोसरकेँ नै डाँड़ब।' ईहो बड़ भारी प्रश्न कहाँ अछि? अपन खर्चमे कमी-बेसी भेने ने लोक करजदार होइए आकि कर्जदाता। जौं सरपट चालि पकड़ि चलब तँ किए दुनूमे सँ कियो भेँट हएत। मुदा समाजक बीच परिवारकेँ रहैक छै। सोल्हन्नी सरपट नै देखि मनोहरक मन अँटकल मुदा लगले घोड़ा जकाँ मन हीहीएलै-

> "खगताकेँ जेते तक पचा सकब ओते पचाएब। आ बढ़ता लेल समाज अछि।"

दू-तिहाइ अंकक आशा नहियोँ देखि मनोहरक मन मानि गेलै जे कोनो बेसी ओझरी नहियेँ अछि। तेसर प्रश्न 'दरबज्जापर एक लोटा पानि' पर नजरि पड़िते मन ठमकि गेलै। अपने घरसँ तीन घंटाक रस्ता दूर रहब, दरबज्जापर बारह बजे दिन आकि बारह बजे राति जौं कियो आबि जाथि तखनि अपना बुते की हएत। अखनि माता-पिता जीबै छथि तँ अपन दुआर-दरबज्जाक मुड़ेरा अकास ठेकेता मुदा परोछ भेला पछाति की करबै? जौं अखनि नै विचारि बाट पकड़ि लेब तँ बेर-विपत्ति पड़लापर तँ सहजे लोकक बुधि हरा जाइ छै, तखनि विचारि पएब? वस्त्रक एक-एक सूत विलगा-विलगा जखनि मनोहर देखए लगल तँ बूझि पड़लै जे प्रश्न भारी कहाँ अछि। पीसक हले-हल बनबैक जन्मभूमि मातृभूमि भेल, सेवाभूमि कर्मभूमि भेल। मातृभूमि कर्मभूमि चलए तेतबे विचारैक अछि।

नोकरी भेलाक पनरह बरख पछाति मनोहरक माता-पिता मरि गेल छेलनि। अखनि धरि मनोहर अठवारे गाम-अबै जाइ छल। गामक तसवीर तँ तेना भऽ नै सुधरल मुदा अपना घरसँ खा-पी कऽ बच्चा बी.ए. तक पढ़ि सकैए। घंटा बितैत-बितैत डाक्टर ओइठाम पहुँच सकैए। तखनि गाम छोड़ब-तोड़ब नीक नै। जहिना माता-पिताक समए अबै जाइ छेलैं तहिना अगिलो परिवार सेने रहब। यएह सोचि मनोहर अपन परिवारकेँ गाममे रखलनि।

जोडा बड़दक जोत परिवार सतदेवक छेलनि। ओना जोड़ा बड़दक जोतक अर्थ विकृत भऽ गेल अछि। विकृत ई भऽ गेल अछि जे सए-सए बीघा जमीनबला खुट्टा उसरन कऽ लेलनि! तर्क देता ट्रेक्टर-थ्रेसरक मुदा अपने परदेशसँ अगहने-अगहन गाम पहुँचता। से नै, सतदेव मेहनती गिरहस्त

छला। गिरहस्तीकेँ सभ रूप सजौने छला। कलमी-सरही आमक गाछी पाँच कट्ठा छन्हिहेँ। दू कट्ठा बँसवाड़ि, एक कट्ठा करजान, पाँच कट्ठा घराड़ीओ छन्हिहेँ। तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ वाड़ी-झाड़ी छन्हिहेँ। पानिक अपन बेवस्था केनहि छथि। जेहने सासुक चालि-चलनि तेहने पुतोहु-सुनैनोक भऽ गेलनि। गिरहस्तीओ काज सतदेवकेँ बँटाएले जकाँ रहनि। अढ़ाइ बीघा बाधक खेती अपन रहनि। तीमन-तरकारी, वाड़ी-झाड़ी-फुलवाड़ीक भार पत्नीक रहनि। जे सुनैनाक हृदैक रूप बनि गेलनि। मुदा सासु-ससुरकेँ परोछ भेने घरक सोल्हनी भार सुनैने उठा नेने छेली। सुनैनाक अभ्यन्तर कहनि जे ऐ घरक सोल्हन्नी कर्ता-धर्ता अपने छी। तेकरा जौँ अपना जकाँ नै रखि बिनु आड़ि-मेड़क घर बना लेब तखनि किए कहै छिऐ जे नारी शोषण होइए। की एहेन नारी नै छथि जे पुरुखसँ मालिस करबै छथि। मुदा से नै ई भेल गप-सप्प।

जिला कार्यालयमे की खाली सरकारीए काम-काज होइए आकि जिला भरिक कथा-कुटुमैती, गाए-बड़द महिंसक खरीद-बिकरी, राजनीति कूटनीति, छलनीति, दुर्नित सभ कथुक जिला छी। भलहिं कामकाजी लोक काजक औगताइमे तारिकोपर जेता मुदा पाछूसँ वारंट नेने औता। मुदा तेतबे तँ नै अछि, कचहरी जाइ छी, भरि दिन केतए बैस समए गमाएब। तइसँ नीक किए ने पूर्बा हवाक गरपर बैस गाँजाक गंध पसारि सभ गजेरीकेँ एकठाम समेटब नीक। एक चेहरा अनेक रूप दुनियाँक नव हाल भऽ गेल अछि। के अपराधी आ के अपराध रोकिनिहार। विचित्र स्थिति अछि। जौँ दू-तीन-चारिक जोगकेँ खिचड़ी कहब तँ चाउर, दूध, चीनी, मसालाक जोग खीर केना भऽ गेल। जौँ से नै चाउर-दालि-अल्लू-पानिक बीच चीनीओ दऽ दिऐ तखनि की भेल। तँए सोझहे नून-चीनीक बात नै अछि।

सिंचाइ विभागक बड़ाबाबू छला जुगल किशोर। आब सेवा निवृत्ति भऽ गेला। इलाकाक एक्के जातिक नै अधिकांश जातिक पजियारीक पेशा सेहो अपनौने। कार्यालय सभमे अहिना होइ छै एक चिन्हारे भेने तीन दिनमे हजार चिन्हरबा भऽ जाइ छै। सरकारीए काजक भाषामे जुगल किशोर निपुण नै, घटकैतीक भाषाक सेहो पाकल पड़ोर छला। हुनके भाँजमे मनोहर पड़ि गेला।

जखने जानकी एगारहम बरख टपि बारहममे पएर रखलक तखने सुनैना मनोहरकेँ जानकीक बिआहक भार सुमझा देलखिन। अखनि धरि मनोहरकेँ कथा-कुटुमैतीक बोध नै। भाँज लगलनि जे जुगल-किशोरक हाथमे

छपड़िया पैकार जकाँ सएओ जोड़ा बड़द-गाए रहिते अछि। जिला कार्यालयमे मनोहरकेँ अपन पहिचान छेलनि। जइसँ काजक बोझो कम रहै छेलनि। एक दिन चारि बजे छुट्टी होइते जुगल किशोरसँ भेँट करैत अपन बात जानकी बिआहक रखलनि। जेना जुगल किशोरकेँ जीएपर रखल रहनि तहिना मनोहरकेँ कहलखिन जे कृष्णकान्त बी.ए. पास कऽ नोकरी लेल बौआइए मुदा लेन-देन दुआरे काज नै भऽ पबै छै। से जौं अहाँ अपनेसँ जा कऽ कहियनि तँ ओहिना माने बिनु लेन-देनेक काज भऽ जेतनि आ अहूँकेँ बिआहमे लेन-देनक भार नै पड़त। मनोहरक मन मानि गेलनि जे एक परिवारकेँ ठाढ़ होइक प्रश्न छै से जौं कहलासँ भऽ जेतै तँ उचित-उपकार दुनू भेल। अपनो काज ससरि जाएत।

बीचमे एकटा बाधा ठाढ़ भेल, ओ ई जे पहिने नोकरी होइ आकि बिआह। घटकैती भाषमे जुगल किशोर कहलखिन-

> “मनोहर बाबू, अहूँ सभ दिन कागतेमे ओझराएल रहलौं, एतबो ने बुझै छिऐ जे जइ घर बेटी जाएत तेकरा घरो ने छै। दू-चारि मास कमा कऽ घर बनौत तखनि निचेनसँ बिआह हेतै। अखनि एगारहे-बारहे बरखक बेटी अछि, आब कि कोनो उ जुग-जमाना रहलै, आब तँ बीस-बाइसक चलनि भऽ गेल अछि। निको अछि।”

सोझमतिया मनोहर जुगल किशोरपर सोल्हनी बिसवास कऽ लेलनि। समए बितैत रहल बितैत रहल मनोहर निचेन जे बीस-बाइस बरखक बीचक काज टरि गेल।

स्थायी रूपे जखनि कृष्णकान्त बेवस्थित भेल तखनि जुगल किशोर अपन बेटीक बिआह कृष्णकान्तसँ पाँच लाख नगद गनि करा लेलनि। कृष्णकान्तो अपन पूर्व जन्मक कमाइ बुझलक। एक पट्टीमे नोकरी, दोसर पट्टीमे पाँच लाख संग कनियाँ। के हमरा सन भागमन्त हएत।

जानकी जखनि बाइसम बरखमे पहुँचल, तखनि सुनैना अंतिम वारनिंग मनोहरकेँ देलखिन। तखनि मनोहरकेँ चाँकि जगलनि। धर्म-कर्म बूझि मनोहर जुगल किशोरक गाम पहुँचला। तीन साल पहिने जुगल किशोर सेवा-निवृत्त भेल रहथि। दरबज्जापर बैसल जुगल किशोरक मन मनोहरकेँ किछु मोट बुझहेलनि। मुदा अपन काज तँ पहाड़ी इलाकामे लोक गदहो चढ़ि कऽ

लइए। खैर, हमहूँ कोनो कुटुमैती करए थोड़े एलौं जे मान-रोख रखब। काजे एलौं काज करब जाएब तैबीच समैए कखनि बँचत जे पहुनाइ करब। बुढ़िओ बाघीन तँ फेर बाघीन छिऐ किने। मनोहरकेँ देखिते जुगल किशोर चपाड़ा दैत अभिवादन केलकनि-

"आउ-आउ मनोहरबाबू, आब तँ भेँटो दुर्लव। केम्हर-केम्हर...?"

मनोहर कहलकनि-

"जानकी बाइस बरखक भऽ गेल, सएह काजे आएल छी।"

अखनि धरि मनोहरकेँ नै बूझल जे कृष्ण कान्तक बिआह जुगल किशोरेक बेटीसँ भऽ गेलनि। मुदा ई दुनियाँक खेल छी जे दुनियाँमे रहितो लोक दुनियाँकेँ नै जानि पबैत अछि। जुगल किशोरक मनमे भेलनि जे मास दिन पहिने काज भेल आ आइ ई ताना-मारए दरबज्जापर चलि आएल। अपना सीमा कुकुरो बताह। जुगल किशोर सोझहे कहलखिन-

"ऐठामसँ चलि जाउ, नै तँ पुलिसकेँ बजाएब!!"

ओना जुगल किशोरक बात मनोहरकेँ तेते कठानि नै लगलनि जेते लागक चाही। किएक तँ अपन दरबज्जापर उचित-अभ्यागत लेल पुलिस आनी, सएह तँ मिथिलाक दरबज्जा छी। मुदा पुलिस नाओं सुनि मनोहर भरमे-सरमे घरमुहाँ भेला।

तही दिनसँ ऑफिसक काजमे उन्टा-फेड़ हुअ लगलनि। जइसँ पागल घोषित कऽ देल गेला।



बगबारि

अदरा अपन चौदहम दिन बिता काल्हि चलि जाएत। बहुत दिन पछाति अदराकेँ एहेन जश भेल। जशो केना ने होइत, पहिल दिन अबिते बरिस गेल जइसँ धू-धू जरैत धरतीकेँ असमानी पानि भेटिते मन तिरपित भेल तँ दोसर दिस पछिला सात साल पछाति एहेन आम-कटहरसँ भेँट भेलै। तहूमे पछिला सालक छगाएल मन आमक अभावमे रहने आरो बेसी सिनेहासिक्त भऽ गेल। दोसर साँझ जारनि-काठी चुल्हि लग ओरिया फुलिया पति-हराननकेँ अदरा नक्षत्रक अंतिम दिन मन पाड़ैत कहलखिन-

''काल्हिए भरि अदरा अछि, तँए...?''

फुलियाक बात सुनि हरानन ओहिना मनमे औँटए-पौड़ए लगला जहिना नेबोरस, चीनी आ पानिकेँ औँट-औँटि शर्बत बनौल जाइ छै। बातकेँ औँटैत-पौरैत हरानन बजला-

''काल्हि जाए कि परसू जाए, आकि नहियेँ अबितए-जइतए तइसँ अपना की। ने आम-कटहर अछि आ ने खुट्टापर लगहरि गाए-महिंस। तखनि अदराकेँ एने आ गेने की?''

हराननक बात फुलियाकेँ आन घरक जनिजाति जकाँ छुलकनि नै बल्की पतिक विचारकेँ गौर केलनि। कहै तँ ठीके छथि मुदा साल भरिक पावनि छी, बाल-बच्चा घरमे केना छोड़िओ देब। एकबेर छुटने तँ जिनगीए भरि छूटि जेतै। बजली-

''नै पान तँ पानक डंटिओसँ पावनि नै करब से केहेन हएत?''

फुलियाक आग्रह सुनि हरानन सामंजस करैत बजला-

''घरमे रहने सभ दिन पावनिए-पावनि होइ छै आ नै रहने पावनिओ फोंक भऽ ओहिना चलि जाइ छै जहिना आन दिन जाइ छै।''

फुलिया मुड़ी डोलबैत कहलखिन-

''हँ, से तँ जाइ छै मुदा पावनिक अपन 'रूपं मधुरम् तिलकं' मधुरम होइ छै।''

फुलियाक बात सुनि मुस्की दैत हरानन बजला-

"हँ से तँ होइ छै। मुदा एहनो तँ होइ छै जे सालक सत्ताइस नक्षत्रमे अदरो एकटा छी। जे पनरहो दिन अरबा चाउर, दूध-चीनी, आम-कटहरसँ पूजल जाइए आ दोसर एहनो नक्षत्र तँ होइते अछि जेकरा एको दिन पूजन-पावनि नै होइ छै। तँए कि ओ सालक नक्षत्र नै भेल?"

"भेल किए ने, मुदा सभकेँ लौल रहै छै किने जे आगत-भागत हुअए।"

फुलियाक बात ओराएलो ने छेलनि कि बिच्चेमे हरानन टपकला-

"लौलो-लौलमे भेद होइ छै। कियो अपन सेवा कएल छागड़ बलि चढ़बैए आ कियो नगद नारायणसँ कीनि चढ़बैए, चढ़बैत तँ दुनू अछि। मुदा अहीं कहू जे दुनू एक्के मोने चढ़बैए?"

"जखनि घरमे अरबा चाउर नै अछि, दूधक जोगार नै अछि, ओहो जे बगबारिमे आम-कटहर होइ छेलए सेहो छीना गेल, तखनि तँ ठीके...। छुछ मुहेँ शंख बाजत?"

"हँ से तँ नै बाजत। मुदा...?"

साठि बरखक हरानन अपन अंतिम हार पछिला साल तखनि मानि गेला जखनि अपन लगौल-सजौल गाछी-कलमक टुकलोसँ बंचित भेला।

पिता परोछ भेला पछाति हरानन पाँच बीघा चास, तीन कट्ठा बास आ आठ कट्ठा गाछी-कलमक रक्षक छला। ओना चास-वास अरजैमे हराननक कोनो योगदान नै छेलनि मुदा आठ कट्ठा गाछी-कमल लगबैमे तँ छेलनिहेँ।

दस-बारह बरखक जखनि हरानन रहए तखने पिता-रूपलाल अपन पुरना गाछी उपटबैक विचार केलनि। उपटबैक कारण रहनि जे एक तँ आम सभ नीक नै अछि दोसर जेहो छेलै से पुरान भेने या तँ फड़बे नै करैत या तँ फड़ला पछाति रोगाइए जाइ छेलै। रूपलालक मनमे उठलनि जे गाछी-कलम कि लोक अपना नापसँ लगबैए जे हम तीस बरख जीब तँए आमो गाछ तीसे बरख रहत। तीन-तीन-चरि-चरि पुश्तक गाछी-कलम, पोथी-कलम सभसँ परिवार सुख करैए। से नै तँ दस बारहे बरखक हरानन अछि तइसँ

कि मुदा अपना संगे ओकरो किछु भार देबै। दुनू बापूतक सीमानपर एकटा गाछीओ रहत। पुरना गाछीक गाछ हटा रूपलाल पाँच बरख जोत-कोर केलनि। अन्न उपजौलनि। गाछी लगबैसँ पहिने हराननकेँ कहलखिन जे बौआ नीकहा आमक आँठि बीछि एकठाम रोपिहऽ आ कलम लगबैले सहरगंजा एकठाम। हाथ-हाथ भरिपर रोपि दिहक जे उखाड़ैमे असान हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अधिक बिसवासू होइए। समए तेहेन भऽ गेल अछि जे बिसवास अपन चेहरे बदिल लेलक। जे नर्सरी गाछी-कलम, वाड़ी-फुलवाड़ीक बीआ बेचैए ओहो ओहन भऽ गेल अछि जे कहत सागवानक गाछ छिऐ आ भऽ जाइए वौनैया काँट। खैर जे होउ, अपन गाछी अपने लगाएब।

सालभरि पछाति आँठीसँ डेढ़-डेढ़, दू-दू हाथक गाछ भऽ गेलै। सरहीकेँ मुसरा काटि, बड़द जकाँ सुरेब बनैले थल्ला उखाड़ए कहलखिन। अपने आगूमे आबि केना खुरपी उनटा-सुनटा चलत तइ ताकमे बैसला। आठे कट्ठा कलम-गाछी लगत तइमे गाछे केते रोपल जाएत। तहूमे नवका बौना किस्म नै, बड़का किस्म छेलै। मेल-पाँच कऽ सरही एक भाग आ कलमी एक भाग लगेनाइ नीक हएत। सएह केने रहथि। अपन खेती-पथारीक जिनगी हराननक तँए झूठ-फूससँ कम भेँट।

एक्कैस बरखक अवस्थामे हराननकेँ बेटा भेलनि। तीन मास पछाति बच्चाक माथ नम्हर हुअ लगलै। साल भरि जाइत-जाइत असर्द्ध देखैमे लगए लगलै। दुनू परानी हरानन विचारलनि, कोखिक पहिल सन्तान छी। केना छोड़ि देब। जमीन-जत्था लोक किए रखैए। से नै तँ जाबे तक जीबैक आशा रहतै ताबे तक तकतियान करबै। तइले जे होउ। खेत-पथार रहौ आकि चलि जाउ। जौं मनुख बँचत तँ ओहूसँ बेसी अरजि लेत आ जौं मनुक्खे ने रहत तँ खेते-पथार कोन काजक। गणेशजी माथ सन ओइ बच्चाक माथ भऽ गेलै। एनमेन हाथी माथ सदृश।

समाजक चलैनानुसार हरानन दुनू दिस बढ़ल। एक दिस गामक डाक्टरी-इलाज तँ दोसर दिस झाड़-फूक, टोना-टापर। बिमारीक चक्रमे पड़ने दुनू बेकतीक जीवनचक्रे बदलि गेलै। एक दिस हरानन भरि-भरि दिन झाड़-फूक केनिहारक भाँजमे बौआइत तँ दोसर दिस फुलिया घरेक आइ-पाइमे समए गमबए लगली।

एक दिस सौनक बून जकाँ खर्च बरसए लगलनि तँ दोसर दिस खेती-पथारीसँ विमुख भेने आमदनी हराए लगलनि। छह मास बितैत-बितैत तीन बीघा बिका गेलनि। मुदा अखनो आशा ओहने बनल छन्हि जहिना छह मास पहिने छेलनि। जे कियो डाक्टरसँ लऽ कऽ झाड़-फूक केनिहार धरि देखैत ओ कियो ने कहैत जे रोग नै छूटत। एते बोल-भरोष दैत जे रोग निश्चित भगबे करत। जइ खेतक अन्नसँ हराननक परिवार चलै छेलनि वएह खेत बेचि-बेचि अपनो खाए लगला। ठाकुरक बरियाती जकाँ सभ ठाकुरे-ठाकुर। उचित-अभ्यागतक भाँजमे अपनो दुनू परानी हरानन सएह बनैत चलि गेला। खेत बीक रहल अछि आ रोगो बढ़ि रहल अछि। समुद्रमे भँसैत नाव जकाँ केतए जाएत कोनो ठीक नै। बिनु महारक पानिमे अहिना होइ छै।

दस मास पुरैत-पुरैत बच्चा मरि गेलै। बच्चा तँ मरि गेलै मुदा परिवारोक कोनो तन-भगन नै रहए देलकै। खेतक लूट भऽ गेलै। कियो उचित मूल्य दऽ लेलनि, तँ कियो हथपैंच एकक तीन केलनि। घराड़ी छोड़ि हराननकेँ किछु ने बँचलनि। खाली एतबे जे चास बटाइ करता आ गाछी-कलम ओगरवाहि।

बेटो-मृत्यु तँ सबहक एक्के रंग नै होइत। कियो जनमिते मरि जाइए तँ कियो रोग-वियाधिसँ चट-पटा मरैए। मुदा तइ संग ईहो ने होइ छै जे कियो जनमरोगी बनि जीबैए तँ कियो रोगाएले जिनगीक आनन्द लुटैत जीबैए। जहियासँ हरानन बेटाक बिमारीक इलाजक पाछू बढ़ला तहियेसँ दुनू बेकतीक मन-मोटाउ सेहो बढ़ए लगलनि। मन-मोटाउक कारण रहनि दुनूक दू धारणाक धारा। हराननक मनकेँ पकड़ने जे डाक्टरी इलाजसँ रोग भागत। मुदा फुलियाक मन झाड़-फूकमे पकड़ाएल। जेकर फलाफल डाक्टर आ झाड़-फूक केनिहारकेँ एलापर स्पष्ट देखि पड़ैत। जैठाम हरानन डाक्टरक आइ-पाइ नीक जकाँ करै छला तैठाम फुलिया झड़निहार-फूकनिहरक। काजक दौड़मे परिवारोक बीच अहिना होइ छै। कियो काजकेँ काज बूझि करैए आ कियो काजकेँ काज बुझैए। भलहिं कियो काजक आ कियो अकाजक किए ने बनि जाए। बिलाइक झगड़ामे बानर पंच। जखनि मंतरिया अबैत तँ घंटो बैस डाक्टरी इलाजकेँ अदखोइ-बदखोइ करैत। दुनूक बीचक लट-पट-सट-पट दुनू बेकती हराननक विचारपर सेहो पड़िते छेलनि। रोगकेँ कमैत नै देखि दोसर-तेसर साँझमे सभ दिन दुनूक बीच एक आखर होइते छेलनि। एक दिस खेत बोहाइत देखि हरानन झाड़-फूककेँ अनुचित खर्च बूझि झपटथि तँ दोसर दिस

फुलिया डाक्टरी इलाजकेँ। पंच कियो ने। दुनू पार्टी लड़िए कऽ फड़ियेता। जे दसम मासमे निर्मूल भेल।

हरानन बोनिहार-बटेदार नै किसान-बटेदार बनि नव जीवन धारण केलनि। जिनगी बदलने बहुत किछु बदलैओ पड़ै छै आ बहुत किछु अपनो बदलि जाइ छै। हराननक अपन खड़िहाँन उसरि गेलनि। खेतक उपजा अदहा-अदही सेहो अपना मोने ने लगा सकै छी, ने काटि सकै छी आ आमक बगबारि कलमी चारिमे एक आ सरही तीनमे एक भेटतनि। भलहिं कलमीसँ सरहीए किए ने नम्हरो आ गुदगरो हुअए।

वसन्त पंचमीक दिन। सरस्वती पूजाक संग किसान हरो ठाढ़ करता। जोड़ा बड़दक बटेदार किसान रहितो हरानन हर केतए ठाढ़ करता। किसान तँ अपन ओजार -हर-कोदारि-खुरपी-हँसुआ- बड़ही ऐठामसँ सान करा अपना घरमे पूजा करत आकि अपन हाथ आ हाथक ओजार अनका घर? हर ठाढ़ केतए करब, हराननक मनकेँ हौँड़ि देलकनि! सतंजा अन्न सतंजा तीमन-तरकारी जकाँ हरानन बेड़ा नै पाबि रहला जे की कथी छी। अपन रंगे बदलि नेने अछि। खेतमे मेहनति ओतबे करब मुदा उपजा अधिया हएत। जइ साल रौदी-दाही हएत तइ साल बटेदारक खर्च जाएत आकि खेतबलाक खेत। मुदा उपाएओ तँ दोसर नहियेँ अछि। फेर मन घुमलनि, किछु खेती जोति-कोरि होइ छै आ किछु ओहुना -छिटुआ- सेहो होइ छै, तइमे की नीक? आगू सीमा घेरल अछि। अधिया। जखनि अदहे हएत तखनि किए ने लागतमे कटौती कएल जाए। ओते तँ बँचत हेबे करत किने। मुदा जौँ बीए खा जाएब तखनि खेती कथीक करब। श्रमक ह्रास मन्थर गतिए नै दुरूत गतिए भेल। जहिना सौनक झटकीमे पानिक नम्हर-नम्हर बूनक संगबे हवा भेने आरो दगनियाँ रूप पकड़ि बरिसैए तहिना श्रमक ह्रास भेने रंग-बिरंगक रोग श्रम-शक्तिकेँ धेलक। केतौ श्रमक चोरि तँ केतौ श्रमक बेइमानी, केतौ अनदेखी तँ केतौं बलजोर!

तेसर सालक पंचायत चुनाव हराननकेँ आरो धकियौलकनि। जिनगीमे दुनू परानी हराननकेँ छल-प्रपंच, गरीब भेनौं नै छूबि सकलनि। भगवानक लीला बूझि सभ दुख-सुखकेँ दुनू परानी घोंटि गेला। मनो मानि लेलकनि जे जहिना बेटा आएल तहिना गेल। दुनियाँ थोड़े दोखी बनाएत जे बेटाक तकतियान नै केलिऐ। धर्म-कर्म धने ने सुधन कहबैए। की ई हमर सफलता

नै जे बेटा लेल अपन सर्वस्व गमा लेलौं। मुदा दोखोक तँ एक नै अनेक कारणो छै। जेकर फलो सोझहेमे अछि।

तीन गोटे पंचायतक मुखिया लेल उम्मीदवार रहथि। तीनूमे के नीक ओ विचारि दुनू परानी हरानन भोँट देलखिन। जिनका हाथे गाछी-कलम बेचने रहथि आ अखनि हुनके बगवार बनि गाछी ओगरवाहि करै छला। अपन बगवार बूझि हराननकेँ अपन भोँटर बुझै छला कुलानन। चुनावक हारि हराननक कपारपर हड़हड़ा कऽ खसौलकनि।

अँगनाक ओसारपर दुनू परानी हरानन अपन दीन-दुनियाँक गप-सप्प करैत रहथि। साठि बरखसँ ऊपरेक दुनू बेकती। जिनगीक संगी खाली लभे-मैरेजक नै, चलैत-फिड़ैत समाजोक बन्धन तँ छिऐ? एहेन स्थितिमे दू-दिलक दिलराजक बास केतए हएत? ओहुना लोक बुझैए जे ओल्ड बेटल, ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ बेसी चसगर होइ छै। दुनू परानी फुलियाक अवस्था चेहराक रूपे-रंग बिगाड़ि देने अछि। फुलियाक मुँहमे तीनटा चहु बँचल आ हराननकेँ सेहो नै। बिनु दाँतक मुँहसँ अदन्त बच्चा जकाँ गुलावी हँसी हँसैत हरानन फुलियाकेँ कहलखिन-

> ''आब ऐ दुनियाँमे रहैक मन नै होइए। होइए जे जल्दी मरि जैतौं जे अपनो भार हटितए आ दुनियोँक भार घटितै।''

जिनगीक तीत-मीठ जे फुलिया आ हराननकेँ पति-पत्नीक रूप बिगाड़ि देने छल ओ ठमकि पुन: जिनगीक धार लग पहुँच गेल। एक तँ उमेरक उपजा दोसर संगी बनि संग-संग चलैक। बजली-

> ''कहलौं तँ बैस बात मुदा एते दिन जे केलौं से केलौं। जहिना अहाँ केलौं तहिना हमहूँ केलौं, मुदा आबो जे ओहिना पहुलके जकाँ करब से थोड़े मानि लेब?''

फुलियाक बात सुनि हरानन ठमकला। ठमकैक कारण भेलनि पछिले जकाँ आब नै जीबए चहै छथि। वैचारिक मेल-मिलानक मन बना जीबए चहै छथि। पुछलखिन-

> ''एना किए करुआएल बात बजलौं?''

पतिक शान्त भाव देखि फुलिया सह पौलनि। भरियबैत कहलखिन-

> ''जखनि दुनू बेकती संगीए नै अर्द्धांगिनीओ छी तखनि एहेन बात बिना विचारने किए बजलौं जे मरि जाएब। अहाँकेँ जीबैक मन नै अछि? अकछि गेलौं तँ मरि जाउ! मुदा हमरा जे मारब से दोखी के हएत?''

विधवो नारी तँ अधमौगैते जिनगी जीबै छथि। तहूमे फुलिया-हराननक उमेरक दूरी मात्र साले भरिक। तहूमे साल भरि फुलिया आरो निच्चे। गुम्म भऽ हरानन विचारिते रहथि आकि कुलानन बेधड़क आँगन पहुँच हराननकेँ दबारैत मना केलखिन-

> ''हमरा गाछी भीर काल्हिसँ कियो नै जइहऽ। देखि लेलिअ जे केहेन हितैषी बगवार छह।''

जहिना ध्वनि साधनाक समए बमक अवाज साधनाकेँ भंग करैत तहिना फुलियाक बात बिसरि हरानन कुलाननकेँ उत्तर देलखिन-

> ''बेटा चलि गेल से छातीए लगा मारलौं आ बगबारिक जे आमे चलि जाएत तेकर सोच अछि? जे मन फुडए से करब।''

हारैत-हारैत हरानन जिनगी हारि चुकल छला। मिसिओ भरि कलेज निरोग कहाँ रहि गेल छेलनि जइसँ हूबा कऽ बजितथि जे अही हाथक लगौल गाछी-कलम छी, हिस्सेदारी टूटि गेल मुदा अखनो ओहिना मन अछि जे लोटे-लोटा जड़िमे पानि देने रहिऐ।



मुइलो बिसेबनि

काल्हि भोरेसँ केत्ताबेर लुटनी भौजी धीरू भैयाकेँ खोज करए एली मुदा भेँट नै भेलखिन। ओना लुटनीओ भौजी अपने मनक लोक, खोज करए तँ अबै छेली मुदा परिवारक कोनो सदस्यकेँ सोझहे पूछि दइ छेलखिन-

''धीरू बौआ आँगनमे छथि?''

तँ उत्तर भेटै छेलनि-

''नै।''

'नै' सुनिते घूमि कऽ चलि जाइ छेली। दोहरा-तेहरा खड़ियारि कऽ ऐ दुआरे नै पुछै छेलखिन जे अपना घरक बात सभ लग बाजब नीक नै। ओना किछु मानेमे निको छेलनि। नीक ऐ मानेमे जे झगड़ा-दनक बात जखनि लोक बाजए लगैए तँ केते रंगक बात बजा जाइ छै तइसँ समैओक बेरबादी आ झगड़ा सेहो टरल रहैए। मुदा सातम बेर एलहा लुटनी भौजीकेँ सुतरलनि। धीरू भैया गंगा नहा कऽ आएले छला आकि लुटनी भौजी आबि गेलखिन। गाड़ी-सवारीक झमारल धीरू भैया, तँए आन गप करैक मन नै होइ छेलनि। किएक तँ अपनो घरक तीन दिनक समाचार पछुआएले छन्हि। आनठामसँ एला पछाति कियो पहिने अपन परिवारक हाल-चाल ने बुझए चाहैए जे कोन काज अगुआएल, कोन पछुआएल आ कोन ठमकले रहि गेल। मुदा जखनि लुटनी भौजी अपन दुखनामा कहए एलखिन तखनि नहियोँ सुनब उचित नै। अपन परिवारसँ बेसी महत जौं आन परिवारकेँ नै देनाइ तँ सुआरथीएक काज भेल। मुदा अपन काज छोड़ि जौं दोसरेक काज करए लगब तँ की दोखी नै हएब? केना नै दोखी हएब। सभकेँ अपने अधिकारो आ करतबो छै जौं तेकरे छोड़ि देब तँ करब की? खैर जे होउ...।
एक तँ धीरू भैया रस्ताक झमारल तैपरसँ दोसर झमार दैत लुटनी भौजी कहलकनि-

''पहिने सभ काज छोड़ि हमर पनचैती कऽ दिअ, तखनि आन काज करब?''

ओना गंगा स्नान केला पछाति धीरू भैयामे किछु संकल्पो आ किछु काज करैक नव उहिओ आबि गेलनि आ किछु छोड़बो तथा बदलबो केलनि।

लुटनी भौजीक बात सुनि मनमे उठलनि जे अखनि दूर-दराजसँ आएल छी, लगले पनचैती करए बैसब, तहूमे मनो थाकले आ गरमाएलो अछि। समैक हिसाबसँ नीक केना हएत? कोनो पोखरिसँ अछींजल भरब तखनि ने उचित होइ छै जखनि जल असथिर रहल, जइसँ ने चहल-पहल रहत आ ने गादि-गंधक संभावना रहत। मुदा लुटनी भैजीकेँ टारबो असान नै।

एक कालखंड धीरू भैया आ लुटनी भौजी गामक नेतागिरी कऽ चुकल छला। ओना लुटनी भौजी बिनु पेनक लोटे जकाँ छेली मुदा जासुसी लेल तँ ओहने फूटल-फाटल, पचकल-पुचकलक ने जरूरति होइ छै। तइमे लुटनी भौजी सोल्हन्नी उपयुक्त छेलखिन। ओना, सभ बुझै छला जे लुटनी भौजीक बात आ उनटा गाड़ीक चालि, दुनू बरबरि मुदा तैयो गाममे ओहएटा मरदक बेटी छथि जे थनो-पुलिसक आगूमे ठाढ़ होइ छथि। जेहने रकार-तकार पुलिसक बोल तेहने तँ लुटनीओ भौजीक रेकार-तेकार छन्हिहेँ। गामक लोक जे बुझनि मुदा सरकारी जासूससँ तँ नीक चरित्रक छथिए। केना नै छथि, गाम-घरक जासूसी मुखौती चलै छै मुदा सरकारीक तँ लिखौती चलैए। मलकारे ने महिंसिक घीकेँ गाएक घी आ गाएक घीकेँ महिंसिक घी मुखौतीओ बना लइए। आकि कीनिनिहार बनौत? कीनिनिहारकेँ जे जरूरति रहलै ओ मांग करैए। मलकारकेँ जेते जल्दी घी बिकाएत ओते पहिने ने काजसँ छुटकारा भेटत। जखनि सभ अपने लाभक रोजगार करैए तखनि मलकारेकेँ किछु कहब उचित हएत। लिखौतीए जासूसीमे ने कोनो कारखानासँ लाखक माल सैकड़ा बनैए आ सैकड़ा-लााख बनैए। भलहिं बीचमे इन्कम-टैक्सक जे करामात होउ। एहेन जासूसी लुटनी भौजी कहियो ने केलनि आ ने अखनो करै छथि। ओना केतबो माहिर लुटनी भौजी किएक ने बूझल जाथि मुदा सभ घरक जासूसी करैमे खिलैच जाइ छथि। जे पुरुख कोट-कचहरीक गप अपन जनानाकेँ कहि दइ छथिन, ओइ बुझैमे लुटनी भौजीकेँ बेसी भांगठ नै होइ छन्हि मुदा जइ घरक जनानाकेँ अपन घरक बात केतए बाजी, केते बाजी, केतए नै बाजी इत्यादिक ज्ञान छन्हि, ओइ घरक भाँज बुझैमे भौजी हारि जाइ छथि। जराएल मन भौजीक रहबे करनि। कंठ फाड़ि दोहरी अवाजमे प्रश्न दोहरबैत बजली-

> ''हमरा बातपर कान किए ने दइ छी जे मने-मन गुड़-चाउर फँकै छी?''

जहिना आमक डारिकेँ दोहरी दोम पघिलल, घुलल आ कठगर तीनूकेँ झखबए लगैए तहिना धीरू भैयाकेँ लुटनी भौजीक बात सुनि भेलनि। मुदा मन तँ पहिने गंगा संकल्पकेँ जपैत रहनि जे सासु-पुतोहुक झगड़ाक फरिछौठमे नै पड़ब। ई कि कोनो झगड़ा छी। सोल्हन्नी रगड़ा छी। ने तँ वएह बेटी हँसी-खुशीसँ माएक घर लक्ष्मी बनि बीस बरख बितबै छथि आ सासुर अबिते सासु चुड़ैल बनबए लगै छन्हि। एकरा रग्गड़ नै कहब तँ की कहब। सोझ बात अछि, परिवारक कोनो काज करैसँ पहिने सासु पुतोहुसँ पूछि लेथुन जे कनियाँ ई काज अहाँ नैहरमे केना करै छेलौं। दुइए रंगक जवाब भेटत, या तँ नै कएल अछि वा केलहा ढंग कहि देब। कारणो अछि जे एक्के मिथिलांचलक बीच क्षेत्र-क्षेत्रक विन्यासो बनबैक आ बाजबोक आ पावनिओ-तिहारक संग गीतो-नादक रूप अगल-अलग अछि। तइले जे सासु भागलपुरक चलनिकेँ अधला आ मधुबनीकेँ नीक कहथि, केते उचित हएत। गाम-गामक बीच ढेरो रंगक खाधि बनल अछि। जे खान-पीन, ओढ़ब-पहिरब, बाजब-भूकबसँ लऽ कऽ गीत-नाद, विधि-बेवहार धरिमे पसरल अछि, तैठाम...।

एक तँ ओहिना धीरू भैयाक मन रस्ताक चालिसँ असोथकित रहनि, तैपर लुटनी भौजी आरो नम्हर-नम्हर चेका काटि-काटि लादैत रहनि। धीरू भैयाक मन गवाही दैत कहलकनि जे नीक हएत लुटनीए भौजी किए ने हमर बेथा बुझथि। सभकेँ अपन-अपन बेक्तिगतो आ समाजिको किछु समस्या होइ छै। मुदा से लुटनी भौजी मानथि तखनि ने, ओ तँ अपने ताले बेताल छथि। बेतालो किए ने रहती। मनमे ओहिना छोटकी पुतोहुक बात नचैत रहनि जे 'आब हिनकर भानस नै करबनि। अपन कइए कऽ खथु वा नै खथु हमरा कोनो मतलब नै।' मुदा से मन मानैले तैयारे ने होन्हि। सासु-पुतोहु दू पक्ष भेलौं जौं दुनू पक्षक बीच सोझहा-सोझही किछु टक्कर हएत तखनि आगूक रस्ता किम्हर बनत? या तँ एक गोटे पटका खसि पड़त, या तँ दुनू दिससँ तेहेन देवाल ठाढ़ भऽ जाएत जे रस्ते रोका जाएत। तूफानी धाराकेँ सेहो रोकल जा सकैए, ओना धार बनब, पहाड़ ढाहब धिया-पुताक खेल नै जे साधन छै ओ बिनु अपनौने थोड़े हएत। केतौ बान्ह बन्हैक जरूरति होइ छै तँ केतौ छोट-छोट नासी-नहर बना पानिक वेगकेँ कम करैत रोकल जा सकै छै। तँए नीक हएत जे एक दिस भौजीकेँ चाहो-पानक आग्रह करियनि आ दोसर दिस पहुलका पुतोहुक चर्च ठाढ़ केने मन ससरबे करतनि

तइसँ तम-तमी कमतनि तखने जान बँचत। झगड़ो झगड़ा सन रहए तखनि ने। ओहन झगड़ा जेकरा हजारो ठाम गीरह-गाँठ पड़ल छै तैठाम तँ न्यायालय लेल बेसी उचित यएह ने हएत जे दुनू पक्ष अपनेमे मुँहमिलानी कऽ न्यायमूर्तिसँ हस्ताक्षर करबा लिअए। जेठकी बेटीकेँ धीरू भैया कहलखिन-

> ''बुच्ची, कनी भौजीओकेँ चाह पीआ दहुन आ हमरो पियाबह। बड़ीकालसँ चाह पीअक मन होइए।''

धीरू भैयाक जाल सुतरलनि। ओना घुमौआ जाल नहियेँ रहनि, मुदा तैयो चाह हाथमे लइते लुटनी भौजीक मुँह टुसकिएलनि। मुँहक टुसकी देखि धीरू भैया टिपलनि-

> ''पहुलका पुतोहुक घरदेखी ओहिना मन अछि भौजी। अहाँ बिसरि गेलिऐ?''

सह पाबि लुटनी भौजीक मन तेसर पुतोहुकेँ छोड़ि पहुलकाकेँ झोंट लपकलक। बजली-

> ''अपन केलहा काज लोक वएह ने बिसरैए आकि बिसरए चाहैए जे अधला रहै छै, मुदा नीक केना बिसरि जाएत। अहाँ तँ ओइ काजमे अगुए रही, कहू जे कोन धरानी पुतोहुकेँ घर अनने रही।''

लुटनी भौजीक दोहरी पंच बनिते धीरू भैया कहलखिन-

> ''ओना मुँहपर केकरो बड़ाइ आकि छोटाइ चटुकारी भेल मुदा नीक कि अधला बजलो नै जाए सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। केतौ अधलाकेँ नीक दबतै तँ केतौ नीककेँ अधला दबतै। एहने बात अखनि उठि गेल अछि। जे समांग वा कुटुम घर छोड़ि परदेश जा घर बना लेलनि, पैघ बनि गेला। जौं कोनो काज-पीहानीमे भाग लइले नोत-हकार देबनि तखनि जौं अबै-जाइक गाड़ी-बस, जहाजक भाड़ा-किराया नै देबनि तँ की हुनका मान-मर्जापर नै पड़तनि? मुदा तइ संग ईहो प्रश्न तँ जोड़ले अछि जे जइ पेटक खातिर गामसँ हजारो कोस दूर भगलौं ओइ धरती धारण केनिहारकेँ नै परेखि पाबी? खैर जे होउ...।''

मुस्की दैत धीरू भैया पुन: बजला-

“मुदा ओ बात हम कहियो ने अहाँक बिसरब।”

‘बिसरब’ सुनि लुटनी भौजी अन्हरोखमे फुलाइबला फूल जकाँ हलसि कऽ खिलैत पुछलखिन-

“कोन बात कहलिऐ बौआ?”

“वएह-वएह! अहाँ बिसरि गेलिऐ?”

“एँह, की कहब काजक तेहेन ओझरौठ होइ छै जे कोन बात लोक मोन रखत आ कोन बात नै मन रखत। काजो करैत-करैत कखनो काल मन हरा जाइ छै किने।”

सिमसिमाएल लुटनी भौजीक मन देखि धीरू भैयाक मन सेहो थीर भेलनि। बजला-

“पहिल बेटाक घरदेखीमे जे अहाँ सभकेँ बड़-बड़ी खुऔने रहियनि, तही दिन ने बेटीबला सभसँ कहबा नेने रहियनि ने ‘एते रंगक बड़-बड़ी हम नै खुआ पएब।”

जहिना हौहैठ कलकैल कुरियबै काल सुआस पड़ै छै तहिना धीरू भैयाक बात सुनि लुटनी भौजीकेँ पड़ए लगलनि बजली-

“कोन परगनाक बेटी हमरासँ लूरिगर अछि, सात-परगनाक बड़-बड़ी बनबैक लूरि ऐ देहमे गहना जकाँ सजा कऽ रखने छी।”

बजैत-बजैत लुटनी भौजी झोंक दैत झोंकली-

“अखुनका लोक कहत जे हम बड़ लूरिगर छी, चलह तँ अखनो हमरा सेने भानसमे!”

चुटकी लैत धीरू भैया कहलखिन-

“यएह बात भरिसक छोटकीओ पुतोहु बूझि गेली, तँए भानस करब छोड़ि देलनि।”

जहिना लुटनी भौजीक सनक आगू ससरल रहनि धीरू भैयाक बात सुनि तहिना ढील भऽ गेलनि। पुन: पहुलके पुतोहुक चर्च उठबैत बजली-

“ओहो पुतोहु कि कोनो अधला छथि, मुदा ई दोख तँ छन्हिहेँ ने जे जइ घरमे थेहगर सासु रहती ओइ घरक जुइत पुतोहुक हाथमे केना जाएत। बेटा बेटी परिवारमे होइ छै। आनक बेटी आनक बेटीक संग केहेन बेवहार रखत, ई बात तँ माइए-बाप ने बूझि सकैए आकि कनियाँ-मनियाँ।”

बजैत-बजैत लुटनी भौजीक मन चढ़लनि। धीरू भैया कहलखिन-

“देखू, ओइ पनचैतीमे बेसी दोख अहींक रहए। पुतोहु जकाँ कहियो जेठकी पुतोहुकेँ नै बुझलिऐ।”

मन पाड़ैत लुटनी भौजी कहलकनि-

“देखिऔ बौआ, जेते दोखी अहाँ बनबै छी तेते नै छी। कनी-मनी दोख केतौ भऽ गेल होइ से भऽ सकैए मुदा जेते बुझै छी तेते नै छी।”

“केना नै रहिऐ। देखै छेलौं जे चिचिया-चिचिया पुतोहुकेँ सरापै छेलिऐ आ कहै छी जे केना केलिऐ।”

“ऐमे हम की दोखी भेलौं?”

“ऐमे अहाँ ई दोखी भेलिऐ जे एक तँ ओहुना बेटी नैहरक मुँह पौतीमे बन्न कऽ लइए, तैपर जे सासु साँढ़-पारा जकाँ ढेकरि-ढेकरि टोकारा देथिन तँ की ओ पशु-मुँह केते दिन बरदास करत। अहींक जे पुतोहु छथि, किए ने बेटी जकाँ चुचकारि कऽ गप करै छेलौं। जे अनठिया माल-जाल जकाँ ढूसि लइ छेलिऐ?”

अपन तर्क कमजोर देखि लुटनी भैजी छिछलैत बजली-

“बौआ, ऐमे दोसर भाँज रहै जे हमहूँ नै बजलौं।”

चुम्मक जकाँ जेते धीरू भैया लुटनी भौजीकेँ पकड़ए चाहथि तेते लुटनी भौजी, जहिना लोहामे आन-आन द्रव्य मिलौलासँ चुम्मकीय शक्ति कमजोर होइ छै तहिना आन-आन बात जोड़ए लगली। धीरू भैयाक मन गबाही देलकनि। बजला-

> ''कथी दोसर भाँज रहए बाजू। अखने की भेल, आबो तँ बूझब ने?''

धीरू भैयाक प्रश्न सुनि लुटनी भौजीक मन धकमकेलनि। मनक एक पक्षक कहब रहनि जे घरक कोनो बात छिपा कऽ किए रखब। जखनि समाजक एकटा खुट्टा हमहूँ छिऐ तखनि गराड़कँ किए चोरा कऽ रखब! मुदा दोसर पक्षक कहब रहनि जे पसीना चुबौल काजकँ लोक लग बजैमे हर्ज नै। पसीनाक धार आनोक-आन देखैए। मुदा बिनु पसीना चुबौल काजक आमदनी बजलासँ केहेन हएत? किन्तु डारिक चुकल बानर जहिना अपनाकँ मरले बुझैए तहिना मनमे अबिते फरकि कऽ लुटनी भौजी बजली-

> ''अहाँ सभ जे पंचैतीमे जाइ छिऐ तँ झगड़ाकँ उनटा-पुनटा कऽ नै देखै छिऐ। जखनि उनटा-पुनटा कऽ देखबै तखने ने सुपत बात बाजल हएत।''

जइ आवेशमे लुटनी भौजी बजली ओइ आवेशकँ धीरू भैया सूखल पछिया हवा जकाँ विर्ड़ो बुझलनि। दस-बीस मिनटक खेल, भलहिं घर-दुआरक कोन बात जे मोटगर-मोटगर गाछो किए ने उखाड़ि दिअए...। अपनाकँ समटैत धीरू भैया कहलखिन-

> ''आबो की भेल, बाजू। अखनि तँ दुइए गोरे छी, कोनो बात झाँपि-तोपि नै राखू। जौं पनचैतीमे इशारोसँ आएल हएत आ ओइपर पंचक धियान नै गेल हेतनि, तैठाम पंच दोखी। मुदा जैठाम काजक कोनो गपे ने उठै, तैठाम तँ घरबैए दोखी। छातीपर हाथ रखि बाजू।''

धीरू भैयाक जिज्ञासा पाबि लुटनी भौजी सहमि गेली। सहमैक कारण भेलनि परिवारक अर्थविन्दु केना दोसर लग बाजब। अखनि धरि तँ आबिए रहल अछि जे अपन मेन्टेन करैले भुखलो पेट बाबरी उनटा मुँहमे पान फुलबैत चलिते अछि। जहिना बिनु गुनाक रिंच धीरू भैया लगा खोलए चाहै छथि तहिना लुटनी भौजी दालि तँ बाजथि मुदा राहड़ि आकि खेसारी, से छिपबैमे माहिर। बजली-

> ''मन अछि किने जे अहूँ रस्तेपरसँ सुनैत रहिऐ।''

“नै मन अछि। कनी मन पाड़ि दिअ?”

सह पाबि लुटनी भौजी छड़पि बजली-

“अहीं सन-सन बिसराह पंच न्यायालयमे अपन गवाही बदलि दइ छै।”

छिड़ियाएल लुटनी भौजीकेँ देखि धीरू भैया पुछलखिन-

“सुनू, जे गप करै छी तेकरा पहिने मुड़नसँ सराध धरि विचार कऽ लिअ तखनि दोसर बात चालब। अच्छा, ओइ दिनका मन पाड़ि दिअ जइ दिनक नाओं कहै छी।”

जाल सुतरैत देखि लुटनी भौजी टुसिआइत कहलकनि-

“सुनने रहिऐ ने जेठकी पुतोहु बाजल रहए। ई केहेन भेल जे एक शीशी लोहासव भाए दऽ गेलै तेकर उपराग दिअए, से एहेन होइ। कहै कि नै जे नैहरसँ दबाइ-दारू नै अबितए तँ कहिया ने मरि गेल रहितौं।”

“नै मन पड़ैए। कनी सेरिया कऽ मन पाड़ि दिअ।”

जहिना खिस्सकरकेँ सुनिनिहार भेटिते मन खुशी भऽ जाइ छै तहिना पुतोहुक पितमरी ओढ़ि लुटनी भौजी बजली-

“अहींकेँ पुछै छी जे एकटा लोहासवक शीशीकेँ केते दाम हेतै। बड़े हेतै तँ एक सए रूपैआ। एक दिनक एक गोरेक खेनाइ केते होइ छै। से जोड़ि लिअ। तखनि मिला कऽ देखियौ जे तीस दिनक खर्चा जोड़लक तेकर कोनो मोजरे ने आ एक शीशी लोहासव जोड़िनिहारक ढोल पीटए, से अहींकेँ बरदास हएत?”

धीरू भैया जवाब दैत पुछलखिन-

“बरदास हुअए आकि नै हुअए, मुदा जे परिवार तीस दिनक खर्च जोड़ैए तइ परिवारमे एक शीशी दबाइए किए बाहरसँ औत? मुदा नैहरक देल वस्तुकेँ बेसी आ सासुरकेँ कम कहब केहेन हएत। होइ किए अछि, होइए ऐ दुआरे जे नैहरक सम्पतिक नाओंपर परिवारमे

चोरि पनपैए। तँए किए ने सम्मिलित परिवारक बीच बाहरक सभ वस्तु, सहबक आँखिक सोझहा आबि जाउ। जखनि परिवार सबहक छिऐ तँ परिवारक वस्तुओ ने सबहक भेल?''

बोहियाइत धीरू भैयाकेँ देखि बिच्चेमे लुटनी भौजी टोकलकनि-

''एना नै हएत। जखनि अहूँ सुनए चाहै छी आ हमहूँ कहैए लेल एलौं तखनि सुकचेनसँ सुनिए लिऔ।''

कहि लुटनी भौजी चौकीपर पल्था जमा बैसली।

भौजीक निश्चिन्ती देखि धीरू भैया बूझि गेला जे पेटमरूक घरमे दुपहरिया सिदहा रहने भिनसुरका उखड़ाहामे निश्चिन्ती आबिए जाइ छै। तहिना भरिसक भेलनि अछि। मुदा हमहूँ तँ आब अपनाकेँ पहुलका जकाँ नहियेँ बुझै छी। सबहक झगड़ा हमरे छी से बुझै छेलौं, मुदा गंगा डूम देला पछाति एते तँ भेल जे सभ झगड़ा बूझब अपन छी। झगड़ा तँ झगड़ौआक छिऐ। जखनि भौजी आशा लगा कहए एली तँ पनचैती करए नै जाएब, मुदा चलैक रस्तामे जेतए जे गीरह-गेंठी छै तेकरा ताकि नै बेड़ाएब सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। जहिना माघक सिताएल कुत्ताकेँ छाउरक ढेरीपर बैसल देखि उकट्ठी छाउरबला, लोटो भरि पानि ऊपर उझैल दइ छै तहिना धीरू भैया भौजीपर उझलैत बेटीकेँ कहलखिन-

''बुच्ची, बहू दिन भऽ गेल लुटनी भौजीक संग बैस खेना, तँए पहिने जलखै लाबह। पछाति कलौऔ खुअबिहऽ।''

धीरू भैयाक आग्रह सुनिते लुटनी भौजीकेँ पछिला एकटा घटना मन पड़लनि। घटना मन पड़िते कनबात बिसरि लुटनी भौजीकेँ धीरू भैयाक बात अनसून हुअ लगलनि। जेकर फल भेलनि जे विचारमे जबरदस धक्का लगलनि। जे पाछू बुझलखिन। मन पड़लनि ओ घटना जइमे लुटनी भौजी पार्टीक पंच बनि पनचैतीमे गेली। जैठाम बूझि नै पेली जे ई जगह केहेन छै। गाम-गामक चालि-ढालि भिन्न-भिन्न छै। जइसँ गाम-गामक जगहो चोटाह भऽ गेल छै। कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे किताब रहै छै तँ कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे चुटपुटियासँ नम्हरका हथियार रहै छै। कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे खेलक सामग्री रहै छै तँ कोनो गाममे हँसुआ-

खुरपी-कोदारि, कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे रिंच-हथौरी, पेंचकश रहै छै तँ कोनो गाममे एजेंसीक फार्म-जिल्द।

गपक हलहलीमे लुटनी भौजीकेँ शर्बतमे बीख मिला देने रहनि। संयोग नीक रहलनि जे लोकक बीच रहथि, उठा-पुठा कऽ डाक्टर लग जा जान बँचौलकनि। तही दिन लुटनी भौजी कान धऽ लेलनि जे जगह देखि किछु करैक चाही। मुदा लुटनी भौजीक भक्क तखनि खुजलनि जखनि धीरू भैया दोहरा कऽ आग्रह केलखिन-

"पहिने किछु खाइए लेब तखनि गप-सप्प हेतै।"

'खेनाइ' सुनि लुटनी भौजी चमैक बजली-

"खाइ-पीबैक अरसट्टा छोड़ू। गपेमे कनी तेजी आनि लिअ। अखनि खाइ बेरो ने भेल अछि। अहुना काज-उदममे कनी-मनी अबेर-सबेर भइए जाइ छै।"

अपन जाल सुतरल देखि धीरू भैयाक मन असथिर भेलनि जे जहिना गोनू झाक बिलाइ दूध देखि भागि जाइत तहिना खेनाइक नाओंपर लुटनी भौजीकेँ भगा सकै छी। मन थीर होइते धीरू भैया कहलखिन-

"अहीं तेजीओक बात कहै छी आ अनठेबो करै छी?"

"नै-नै, अनठबै कहाँ छी। एकटा ओझड़ी रहए तखनि ने, तहूमे तेहेन-तेहेन भत्ता सभ धेने अछि जे केकर मुँह केम्हर छै आ केकर नांगरि केम्हर छै जे बतिया जकाँ निहारि-निहारि ने देखए पड़ैए। ई तँ नै जे घेरा-झुमनीक बीआ जकाँ रोपैकाल केकरो मुड़ी अकास दिस आ केकरो पताल दिसकेँ दऽ दियौ आ जनमै काल जे पछुआए ओकरा भोरेसँ गरियाबी।"

जहिना कथाकार लोकनिकेँ सालक किछु मास विषैए खेजैमे राजगीर चलि जाइ छन्हि तहिना लुटनी भौजीक कथा हराइत देखि धीरू भैयाक हजार नम्बर बिजली बौल जकाँ भुक्क दऽ मनमे उठलनि, जहिना शिकारी जालक एकटा सूत पकड़ि सौंसे जाल खोलि लइए, तहिना तँ गपे-गपमे झगड़ोक रग्गड़ पकड़ि खोलल जा सकै छै। बजला-

> “जएह सोझहामे पड़ै तेकरे अन्है जकाँ किम्हरोसँ मुट्ठीएने आउ। अपने ने देखबै जे अगिला जन्ममे कोन साँप हएत।”

धीरू भैयाक सह पाबि लुटनी भौजी समधि-समधिन दिस छड़पैत बजली-

> “कहू तँ एहेन बात अहींकेँ बरदास हएत?”

बिनु मुड़ीक बात सुनि धीरू भैया अकचकेला। कालीए ने अन्हरिया राति छी। जिनकर जिह्वा लपकि-लपकि दुष्ट नाश करै छन्हि। मुस्की दैत भौजीकेँ टुसकियबैत कहलखिन-

> “एना झाँपि-तोपि बजने काज नै चलत। उघारि-उघारि बाजू।”

सह पाबि सहटैत लुटनी भौजी आँखि-कान, मुँह-नाक आ दहिना हाथक पाँचो ओंगरी छिड़ियबैत बजली-

> “घरक बात छी आनठाम बजैमे लाज होइए मुदा अहाँ तँ जिनगी भरिक संगी छी, बारह-बजे दिन आकि बारह बजे राति संगे लोकक बीच रहलौं, दुनू गोरेक तीत-मीठ दुनू गोरे जनै छी। तँए कहै छी। कहू जे ई केहेन बात हरिदम जेठकी कहै छेलए जे हमरा माएक पएर धोनो जकाँ हिनकर छीछा-बीछा नै छन्हि।”

लुटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया पुछलखिन-

> “ऐमे अहाँक कोन लखराज-बह्मोत्तर चलि गेल। जे बात पुतोहुकेँ माए-बापक सिखौल मन नै रहलनि। जौं मन रहितनि तँ विचारि कऽ ने बजितथि जे जखनि दुनू समधीनक बीच हम बेटी-पुतोहु दुनू भेलौं, तखनि हमरा लिऐ दुनू ने एक्के रंग। एक जिनगीक पूर्व पक्ष आ दोसर उत्तर पक्ष। तइले एते अहीं किए आमील पीने छी?”

मीठगर बात रहितो लुटनी भौजीकेँ अमताइन लगलनि। मन गबाही दइले तैयार भेलनि जे कोनो बौस रसगुणसँ खट्टा होइए मुदा जे रसगुणसँ खट्टा नहियोँ होइए ओहो बाइस-तेबाइस भेने तँ खटाइए जाइए। जौं से नै होइए तँ दहीक सुआद खट्टा तँ नै छिऐ मुदा चीनीक काज किए पड़ै छै। पेराशूत जकाँ मजगूती लुटनी भौजीक मुँहकेँ धकेल खोललकनि-

''अच्छा अहीं कहू तँ एक्के विद्यार्थी कौलेजमे प्रोफेसरसँ पढ़ैए, हाइ स्कूलमे उच्च शिक्षकसँ तइसँ कम मिड़ल स्कूल आ सभसँ पहिने अपना परिवारक भाए-बापक संग अगुआएल भाए-बहिनसँ सेहो पढ़ैए, तइमे के कम श्रेष्ठ के श्रेष्ठ आ के बेसी श्रेष्ट भेल, से पहिने बुझा दिअ।''

लुटनी भौजीक प्रश्न सुनि धीरू भैया टेढ़ रस्तापर जहिना साइकिलक मुँह घुमौल जाइ छै तहिना भौजीक मुँह घुमाएब बुझलनि। तेहेन नेतागिरीबला सबाल पटकए चाहै छथि जे अनेरे दिनक-दिन मासक-मास खाइबला अछि। मुदा आँखि-मुँहक चढ़ती देखि अपनाकेँ चढ़बैत बजला-

''देखू, अखनि धरि नै कहने छेलौं मुदा जखनि गप-पर-गप उठैए तखनि कहिए दइ छी।''

हराएल बौस भेटैक संभावना देखि जहिना जिज्ञासा जगैत तहिना जिज्ञासु लुटनी भौजी बजली-

''मनक बात जे चोरा कऽ रखैए ओ चोरे भेल। अखनि धरि अहूँ सएह भेलौं।''

लुटनी भौजीक तीनकमियाँ बंशी धीरू भैयाकेँ लगलनि जरूर मुदा जीहमे नै कातक गलफरमे झिट्टा मारने रहनि। जे कनीमनी धाउ भेने तँ छुट्टिओ जाइ छै। मुदा अमती काँट निकालैले बगूर आकि बेलक काँटक जरूरति पड़िते अछि। पुछलखिन-

''केते दिन अहाँक जेठकी पुतोहु कहलनि जे सासु-सासु जकाँ हुअए तखनि ने, बुढ़िया तेहेन लुपकाहि छथि जे भेल भानसपर चुल्हि गरमे रहै छन्हि, केम्हरोसँ एकटा करैला, तँ केम्हरोसँ एकटा झुमनी नेने औती आ हाँइ-हाँइ कऽ दू-तीनटा टुकड़ी तड़ि लेती। तड़ै छथि तइले दुख नै होइए मुदा तेहेन अपसोगारथी छथि जे आगूमे बैसल मुँह तकैत रहब, मुदा एक टुकड़ी देती नै।''

कोठीक मुँहसँ जहिना धान-चाउर भुभुआ खसैए तहिना लुटनी भौजी भुभुएली-

''बौआ, पेटक बात बजै छी। हमरा एक खढ़ इच्छा नै हुअए जे जेठकी साझही रहए। तीनिटा बेटा अछि तीनिटा पुतोहु हएत। अहीं कहू जे तीन-तीन गोटे जइ घरक भनसिये भऽ जाएत तइ घरमे भानसक जोगार के करत। कनियैँ उच्छन्नर देने भीन भेल, अपन परिवारक भार उठौलक।''

''सम्मिलित परिवारक माने ई नै ने जे किछु गोटे कमेलौं बाँकी सभ बैस खेलौं। सम्मिलित परिवारक माने सम्मिलित जिनगी होइ छै। तँए...।''

धीरू भैयाक बात सुनि लुटनी भौजी बजली-

''अखनि जाए दिअ।''

'अखनि जाए दिअ' बजिते लुटनी भौजीकेँ धुक दऽ मन पड़लनि छोटकी पुतोहु। ओकरे कारनामा कहैले धीरू भैया ऐठाम आएल छी।

तखने धीरू भैया चड़ियबैत पुछलकनि-

''देखू, बेर-बेर एक्के घरक पनचैती केने घर हेहरू भऽ जाइ छै। तँए जेते झगड़ा अछि से सभटा आइए सुनि लेब। बाजू, दोसर पुतोहु किए परदेश चलि गेल?''

पहुलका पुतोहुक खेरहा ओराइते लुटनी भौजी खड़हीसँ निकलि परतीपर डण्ड-बैसकी करैत नढ़िया जकाँ बजली-

''देखियौ बौआ, मझिली सोहरदे मने गेल। कहियो झगड़ा-झाँटी नै भेल। ओना झगड़ा-झाँटी करए चाहितौं तँ दुनू साँझ होइतए मुदा अपने परहेज करैत रहलौं।''

'अपन परहेज' सुनि धीरू भैया दोहरौलकनि-

''की परहेज केलौं?''

''की पुछै छी जेते करूतेल सात दिनमे खर्चा होइ छेलए तेते एक्के दिनमे करै छेली। मुदा घरक बात बूझि केकरा कहितिऐ। लोक कहैत जे पुतोहुकेँ खाइओ ले ने दइ छै।''

“अच्छा छोड़ू, भरि दिन अहाँ पुतोहुकेँ नीक-निकुत खुअबिते रहलौं। परदेश किए जाए देलिऐ। बेटा कमाइले गेल आकि घर-दुआर बनबैले?”

धीरू भैयाक प्रश्न लुटनी भौजीक मनकेँ हौंर देलकनि। जहिना छाँछीमे दूध, मक्खन आ पानि रेहीक बले संगे नचैत तहिना लुटनी भौजीक मन नचलनि। बजली-

“बौआ, ओकर बापो शहरे-बजारमे परिवार रखि बेटीकेँ पढ़ेबो केलक आ ट्रेंनिङो करा देलकै। ओतए ओ दुनू परानी नोकरी करत, कमाएत। ऐठाम कोन काज करैत, तँए विचारेसँ जाए देलिऐ।”

“जहिना दुनू जेठकी-छोटकी बेटा-पुतोहु घर छोड़ि चलि गेल तहिना जौं तेसरो चलि जाए तखनि की करबै?”

धीरू भैयाक प्रश्न लुटनी भौजीकेँ मरोड़ि देलकनि। चारू दिस नजरि दौगए लगलनि। मुदा, जवाबक कोनो बाट नै देखि पाशा पलटैत बजली-

“देखियौ बौआ, गण्डा हुअए आकि गाही, दर्जन हुअए आकि सोरे, असल बेटा तँ दुइएटा ने होइ छै। औरो -बीचलका- संग तँ कटा-कटी भइए गेल छै।”

‘कटा-कटी’ सुनि धीरू भैया प्रश्न उठौलनि-

“की कटा-कटी भेल छै?”

धीरू भैयाक प्रश्न सुनिते लुटनी भौजी मचियापर बैसल मचिबाह जकाँ मचमचबैत बजली-

“जेना कोइ बिलैंतसँ आबि कहै छै जे गामक किछु ने बूझल अछि तहिना अनठा कऽ बजने नै हएत।”

लुटनी भौजीकेँ धकियबैत देखि धीरू भैया बामा ठेहुनकेँ अरकबैत झमाड़ि बजला-

“अच्छा बाजू, की कटा-कटी भेल छै?”

धीरू भैयाक आग्रह सुनि लुटनी भौजी अगुआ जकाँ अगराइत बजली-

“अहाँकेँ नै बूझल अछि जे जेकरा चारि या पाँचटा बेटा रहै छै, ओइमे बीचला बिनु किछु केनौं पाक-साफ रहैए, मुदा से जेठका छोटकाकेँ समाज बनए देत?”

लुटनी भोजीक प्रश्न सुनि धीरू भैया बौलकेँ आगु बढ़बैत गोलकीमे सेरिया कऽ फेकलनि-

“अहाँ मने बीचला जेते बेटा भेल ओ बेटा भेबे ने कएल?”

दुनू हाथसँ गोली-बौलकेँ पकड़ि जहिना गोल होइसँ बँचा लइए तहिना लुटनी भौजी बजली-

“बेटा भेबो कएल नहियोँ भेल। रीति-रेबाजकेँ मानबै तँ नै भेल, अपन बेटत्व बुझबै तँ जहिना एकटासँ छोट अछि तँ दोसरसँ नम्हरो तँ अछिए किने।”

लुटनी भौजीक बात सुनि दोसर दिस मुड़ैत धीरू भैया बजला-

“एहनो बेटा -बीचला- तँ होइते छै जे जेठका-छोटकाक सीमा तोड़ि माए-बापक सेवा करैत अपनाकेँ जेठका, मझिला, सझिला, छोटकाक पतियानीक बीच ठाढ़ भऽ जाइए?”

धीरू भैयाक प्रश्नक उत्तर नै पाबि लुटनी भौजी करोटिया मारलनि-

“देखियौ, जेठका-छोटका नै कोनो बात भेल। जौं से होइत तँ हजारक-हजार बेटाबला सगरकेँ कियो काज नै देलकनि। खाइओ बेर भेल जाइए मुदा बात पछुआएले रहि गेल अछि।”

“अहाँ तँ अपने खापड़िक मकइ जकाँ कुदि-कुदि छिड़ियेबो करै छी आ तीसी जकाँ चनचनेबो करै छी। बाजब की फेर बौएबे करब।”

टिकासनपर बैसल घरछाड़ा जकाँ मठौठक खढ़-बत्ती अजमबैत अजमौनिहार जकाँ लुटनी भौजी बजली-

“अहीं कहू जे ई केहेन भेल जे ठेँसगरि जकाँ बाजलि रहए।”

‘ठेँसगरि’ सुनि धीरू भैया टिपलनि-

''खाली टीकमे ककही चलौने बाबरी नै होइ छै। सेरिया कऽ बाजू जे झगड़ाक जड़ि की अछि?''

''झगड़ाक जड़ि की रहत? अहाँ नै देखै छिऐ जे घरसँ बलजोरी घिच-घिच स्त्रीगणक संग की होइ छै, तैठाम कहैए जे केमरा लऽ कऽ बिआह-मुड़नमे फोटोग्राफी करब। तेकरा हम रोकबै नै। लुच्चा-लम्पटक बरियाती भऽ गेल अछि आकि नीक लोकक अछि। ताड़ी-दारू पीब छौड़ा सभ नाच करैए तैठाम इज्जत-आवरू लोक अपने नै बँचाएत तँ आन गोरे लेतै की बँचौतै।''

लुटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया ठमकला। अपनाकेँ निरूत्तर पाबि पुछलखिन-

''बीचमे तँ बेटो अछि तेकरा पहिने की कहलिऐ?''

बेटाक नाओं सुनिते लुटनी भौजी चौकीपर सँ कुदि निच्चाँ आबि बजली-

''ओ तँ हिजरा छी हिजरा। ने मौगीए ने पुरूखे। बलिगोबना। ओकरे सहसँ तँ पुतोहुओ दूरि भेल अछि। ओइ निर्लज्जाकेँ कथी कहबै?''

''तखनि मुँह किए तकैत रहै छी, दुनू हाथे झोंटा पकड़ब से नै?''

''मन अपनो होइए मुदा फेर सोचै छी कहीं हाथा-वाहीं भेल तँ ऐ बुढ़ाड़ीमे मारि खाएब, नै जे झोंटा-झोंठौअलि भेल तँ ओकर तड़गर केश छै गोटे-आधे उखड़तै मुदा अपन तँ पकलाहा गोट-गोट कऽ बीछा जाएत, तेकरो डर होइए किने? एकबेरक जौं पकलाहा केश रहैत तँ ओते दुख नहियेँ होइतए मुदा समरथाइएसँ जे गोटि-पंगरा शुरू भेल ओ आब सोलहन्नी भेल।''

'डर' सुनि धीरू भैया बजला-

''बेटा-पुतोहु दुनूकेँ कहि दियौ, तुकपर खाइले दिअए। ऐसँ बेसी आब कथीक जरूरति अछि। इन्दिरा अवासक घर भइए गेल, तेहेन-तेहेन स्वीटर, कम्मल, साड़ी पुतोहुओ पठा दइए आ बड़ो-विदाइ

तेते होइए जे लत्ता-कपड़ाक जरूरते ने अछि। तखनि की चाही? ओना करैए वा नै करैए ई ओकर धर्म काज भेलै। जौं नहियोँ करत तँ अहाँकेँ छोड़ि भगती से काज चलतनि।''

धीरू भैयाक बात सुनि लुटनी भौजीकेँ किछु हराएल बौस जेना भेटलनि। पुछलखिन-

''नै बुझलौं जे की कहलिऐ, नै बनतनि?''

गदगदाइत लुटनी भौजीक चैहरा देखि धीरू भैया कहलखिन-

''जीता जीनगी अहिना होइ छै हेबै करतै। कहुना अहाँ माए भेलिऐ। जीबैसँ मरै धरिक भार ओकरा छै। से जाबे नै पुरौत ताबे परतवाएक भागी रहत। तँए अहाँ मुइलोपर बिसेबनि।''

मुइलिक असरा देखि लुटनी भौजीकेँ अपन ओछाइनिक जिनगी मनमे उठलनि। दबाइओ-दारू तँ करैए पड़तै...।

धीरू भैया लुटनी भौजीक झगड़ा समापन केनौं ने रहथि आकि लुटनी भौजीक छोटका बेटा-सोमना आबि रूआब झाड़ैत बाजल-

''काका, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे एहेन गप्पकरि किए अछि जे अपनो भूखे टटाइत हएत आ हमरो सभकेँ टटबैए।''

सोमनाकेँ सम्हारैत धीरू भैया कहलखिन-

''पुरना गप-सप्प मन पड़ि गेल छेलै तँए देरी भऽ गेल।''

आँखिक इशारा लुटनी भौजीकेँ दैत सोमनाकेँ कहलखिन-

''माएकेँ अण्डा-तण्डा खुअबै छहक किने?''

''की खुएबै, बुढ़िया अपने हथकट्ठू अछि।'' सोमना बाजल।

आगू-आगू लुटनी भौजी आ पाछू-पाछू सोमना घरमुहाँ भेल। मुदा अमती काँटमे लुटनी भौजीक मन ओझराइते रहनि, होन्हि जे अखनि मुहेँ कान-तोपि दिऐ मुदा फेर सोचथि, एक तँ अबेरक सगुन छी जौं तेकरा भंगठाइए लेब तँ औझुका दिने ओहिना रीब-रीबेमे चलि जाएत। तँए चुपे रहब नीक।

तहिना सोमनाक मनमे अपन तँ कम्मो-सम्म मुदा घरवालीक बात कहैले आन गोटे लग किए गेल, से तामस रहै। होइ जे लोक जौं नीक कहितए तँ अखने चारिए थापरमे मुँह घूमा घर दिस कऽ दैतिऐ। मुदा एक तँ ओहिना समाजमे अबाह छी तैपर जँ एहेन काज करब तँ आरो दोखी हएब। तँए चुपे रहब नीक।

❍ ❍ ❍

सड़ल दारीम

नीन टुटिते कुमराकक्काक मन ओछइनेपर चनकलनि। भगवानकेँ हृदैसँ प्रणाम करिते मन रमकलनि। रमकल रमैत मन दिनक कर्माहार-सँ-फलाहार दिस बढ़लनि। बढ़िते ठमकि गेलनि। ठमकिते मनमे अपन जिनगी नाचए लगलनि। कृषक छी कृषि जीवन छी। करमेसँ फलागम होइए। गाड़ीक पहिया जकाँ जहिना दिन-रातिक धुरीमे समए चलैए तहिना ने काजोक धुरीमे जिनगी चलैए। चौबीसे घंटाक बीच जेतेटा दिन तेतेटा रातिओ अछि। मुदा से कहाँ होइए। सालक बँटवारामे भलहिं दुनू एक-समान भऽ जाए, मुदा मास आ दिनमे से कहाँ भऽ पबैए। जाड़क मास रातिक बढ़ती आ दिनक घटती जहिना होइए तहिना गरमी मास दिनक बढ़ती आ रातिक घटती भऽ जाइए। जँ कहियो बरबरि होइतो अछि तँ टिक नै पबैए। पाहुन जकाँ दिन भरि रहल आ प्राते भने विदा भऽ जाइए। समैए संग ने जिनगीओ आ कृषि कार्यो चलैए। कृषिओ तँ भिन्न-भिन्न अछि। जहिना अन्न तहिना तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहारी अछि। मुदा एक रहितो भिन्न-भिन्न चालि-ढालि आ गुणो-सुआदमे अछि। कहैले धान बारहो मास तीन सए साइठो दिन होइए मुदा तँए कि तीन मसुआ, छह मसुआ नै होइए। हेबे करत, जनम-सँ-मृत्यु धरिक जे दूरी छै ओकरा पार करैमे समए लगबे करत। मुदा सेहो एक रंग कहाँ अछि? कोनो धान तीन मासमे अपन जिनगी लीला समाप्त करैए तँ कोनो चारि मास कोनो छह मासमे आ कोनो साल भरिमे। तहिना तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहारीक अछि। जइसँ कोनो समैया तँ कोनो छहमसिया तँ कोनो बरहमसिया बनि जीबैए। तँ कोनो बरहबर्खा बनि हँसैत रहैए। जेहेन धरतीक गुण-स्वभाव रहत तेहने ने भोजनो-छाजन आ वस्त्रो-भूषण, साजो-सिगांर करत। मुदा धरतीओक खेल तँ अपना हाथमे नहियेँ छै ओहो तँ दोसरे

हाथक खेलौना छी। जँ से नै रहैत तँ केतौ मरूभूमि आ केतौ गाछ-बिरीछ, फूल-पात, फल इत्यादिसँ लदल केना रहैए। चित्त असथिर होइते कुमराकक्काक मनमे एलनि, दारीमक समए आबि गेल। दारीमपर नजरि जाइते मनमे उठलनि, केना नान्हिटा फूल एते सुन्नर फल गढ़ि लइए। सुन्नर की सोझहे फलेटा गढ़ैए। ओकर रंग-रूप अभोज्य-भोज्यक, गुण-स्वभाव सेहो सभ ने गढ़ि लइए। मुदा जहिना फूल-फल गढ़ैए तहिना ने अपनो गाछ गढ़ै छै। यएह तँ जिनगीक खेल छी, लीला छी।

देह-हाथ समेटि कुमराकाका बैसला। बैसिते मन पड़लनि बाबाक रोपल दारीम। मिथिलाक अमुल्य फल जनकक फुलवाड़ीक ओहन फल जे ऋृषि-मुनिसँ लऽ कऽ राजा-रानीक अतिथि-सत्कार्य करैबला फल। जहियासँ जनम भेल आ देखैत एलौं तहियेसँ बाबाक दारीमक गाछ देखैत एलौं। की ओ जनै छला जे आमक तँ गाछीए अछि, जे एकटा दारीमक, एकटा नेबोक, एकटा लतामक, एकटा सरीफाक दूटा अनरनेबा, एकटा लगौलासँ फलबला नै फुलेवाली भऽ जाएब। इत्यादि अपन घरक पछुआरमे लगौने छला। छोट परिवार रहने अपनासँ उगड़िए जाइ छेलनि। जे दरबज्जापर खुअबेबला रहल ओ बजा कऽ खुऔलनि जे दरबज्जा परहक नै ओ दइओ अबै छेलखिन आ रस्ता-पेरा भेँट भेने कहियो दइ छेलखिन। ई सभ तँ बच्चाक बात भेल जखनि स्कूलमे भगवानक प्रार्थना सेवाक संकल्पित भक्त बनैले करै छेलौं।

जहिना बाबाकेँ अपन जिनगी अपने हाथे चलै छेलनि तहिना श्रवण कुमार बेटाकेँ सभ सीख-लीख सिखा देने छेलखिन। सिखा कहाँ देलखिन बच्चेसँ संग रहने एका-एकी सिखैत गेल। फलसँ लऽ कऽ अन्न धरिक खेती करै छला, अपन हर-बड़द अपन समांग। छोट खेती-बाड़ी अपने सम्हारि लइ छला। सम्हारि कि लइ छला जे छोट परिवारमे जँ काज केनिहार कम रहत तँ खेनिहारो ने कमे रहत। मुदा तँए कि कम श्रमक परिवार जिनगी पूरा नै चलैत। मुदा पिताक परोछ भेला पछाति समैओमे मोड़ आएल। किसान परिवारमे करखन्नादारक बेटी आबए लगल। खेतमे काज करैबला बेटी करखन्नादारक घर पहुँचए लगल। श्रम शक्तिक हाथसँ काज लूटा गेल। सभ परिवार बसबए चाहैए मुदा टूट-फाटक एहेन स्थिति किए बनि गेल छै। जे सभ डीह छोड़ि पड़ा गेल वएह सभ अपनाकेँ डीही कहि कामत पुजबए चाहैए।

दारीमक समए आबि गेल। सभ फलक अपन समए छै। अपना समैमे सभकेँ बेसी चलती रहबे करै छै। रहनाइओ उचित छै। रौद-बसात सहलक ओ आ गिरथानि बनइ कोइ, सेहो उचित नै। केकरो कि समए बान्हल छै। जेकरा जेहेन मन होइ से तेहेन करह। ओना तँ सभ दिन बाड़ी जाइते छी मुदा ओगरबाहि हिसाबसँ। काजक हिसाब काजसँ जोड़ल छै। कुमराकक्काक मनमे फेर उठलनि, ओह! काजमे ढिलाइ भेल अछि। जइ समए दारीमक फलमे गोबरसँ लेबा लगबैक छल तइ समए तेहेन ने लगन जोर मारि देलक जे नते-पिहानीमे बौआ गेलौं। चुक भेल। अखनि ने रंग-रंगक दवाइओ आ नव-नव तकनीको आबि गेल अछि मुदा हम तँ अखनि धरि गोबरेक लेबापर खेती करैत एलौं...। सोझहामे काज अबिते कुमराकाका फुड़फुड़ा कऽ ओछाइन समेटि उठला।

चाह पीब कुमराकाका दारीमक बाड़ी विदा भेला। मन ततमत करए लगलनि जे दस गोटेक परिवारमे जँ अदहो-अदहो फल देब तैयो पाँचटा चाही। तहूमे धिया-पुता सेहो औत आ जँ कियो हित-अपेछित आबि जाथि तँ की हुनका नै आग्रह करबनि। फेर प्रश्न उठलनि जे आठटा गाछ अछि। करीब दू सए फल हेबे करत। बेरा-बेरी गाछमे सँ तोड़ी आकि सभमे हाथ लगा दिऐ। ओना किसिमक हिसाबे समैओ आगू-पाछू अछि मुदा सभटा रोहनिए अछि। नीक हएत जे सभ गाछमे हाथ लगा देब।

बाड़ी पहुँचिते फल देखि कऽ मन खुशी भेलनि। आन फल जकाँ दारीमकेँ नै होइ छै। ऊपर नान्हिटा छेद रहै छै, छिलका वृद्धि होइते रहै छै मुदा दाना नष्ट भऽ गेल रहै छै। मनमे खुशी अबिते बेलक गाछपर नजरि गेलनि। जहिना घटक रंग-रंगक बर-कनियाँक जोड़ाक हिसाब लगबैए तहिना कुमराकाका दारीमक भजार बेलपर गेलनि। नजरि जाइक कारण छेलनि खोंइचाक शक्ति। आम केरा जकाँ नै जे पहिने गुद्दा सड़त आकि खोंइचा। जेना बेलक खोंइचा मोटो आ सक्कतो होइ छै तेना दारीमक नै होइ छै। मोटाइमे भलहिं कनी बेसीओ भऽ जाउ मुदा सक्कत कम होइ छै। भगवानोक खेल अजीव छन्हि। नीक गुणक रच्छा करैले हाथियारो संगे दऽ दइ छथिन। नै तँ कहू जे आम-जामुनक गाछमे जे ओते फड़ैए तइमे काँट देबे ने केलखिन आ बेलमे किए दऽ देलखिन? काँटेटा कहाँ देलखिन, सभटा गहनो-जेवर ओकरे दऽ देलखिन। कहू जे ई उचित भेल? बेलपात देलखिन, जइमे

श्रद्धा-प्रेमक सीरप बनबैक गुण छै। तेहेन पातो देलखिन तँए ने महादेवो बाबा अगिला आसन दइ छथिन। नै तँ फूलक डालीमे पात केना चलि आएल। भेड़ी जेरमे हूरार केना आबि गेल। जहिना सुगन्धित फूल देलखिन तहिना बनल-बनाएल भोज्यकेँ महिनो दिन रखैक कोठी देलखिन। तेतबेटा केने रहितथि तँ पनचैतीमे सोलहो-सलूकत होइत मुदा तहूसँ बेसी अन्याय केने छथिन जे तेहेन सुगंध भरि हाड़-काठ देने छथिन जे चानन बनि चानिपर चमकैत रहै छै। सभ फल लेल रोग वियाधि देलखिन आ ओकरा भगबैक गुण दऽ देलखिन। बेसी फड़ने टिकुलामे जे झड़ि-झूड़ि जाए मुदा आन्ही-झाँटसँ मुकाबला करैले दम रखैए। दारीम जकाँ भलहिं ओकर रक्षक नै होउ दारीमक काँट बहुत नम्हर होइ छै मुदा जेतबेटा होइ छै ओ दारिमकेँ के कहए जे बगुरोक काँट निकलि सकै छै।

कट्ठा पाँचेक बाड़ी कुमराकाकाकेँ, जेकरा ओ पुश्तैनी बुझै छथि। पुश्तैनीक कारण अछि तीमन-तरकारी आ फल फलहरीक विद्यालय छी। उत्तरवड़िया-पछवड़िया कोनपर दारीमक आठटा गाछ लगौने छथि, मनमे उठलनि दारीम तोड़ए एलौं हेन। काज छी तँए पहिने कइए ली। मुदा जँ पहिने दारीम तोड़ि कऽ रखि दोसर दिस जाएब आ गाछक जड़िमेसँ टुटलाहा फल हल्ला करए लगए जे जखनि गाछसँ उतारलह तँ देवस्थान पहुँचाबह, आकि गाछक जड़िमे रखि देलह हेन जे परिवारक संग टूटि-टूटि कानह! से नै तँ नीक हएत जे जेकर समए समाप्त भऽ गेल आ जे दारिम पछाति औत दुनूक विचार तँ करनाइए अछि।

सौंसे बाड़ी टहलि-बूलि कुमराकाका दारिमक आड़िपर पहुँचला। आड़िपर बैसिते मनमे सुमारक भेलनि। यएह छी जिनगी। फुलाएल-फड़ल आ पकि कऽ टूटि रहल अछि। चौकोर बगानक कोनपर मचान-खोपड़ीक जगह। साले-साल मरम्मति होइत नव सिरासँ बनि अखनो धरि अछि। कोण दिसक गाछ हियबैत विचारए लगला जे ई बाबेक अमलदारीक छी। पुरना सिरो आ गाछो सुखाएल जाइ छै आ नव-नव सिरो आ गाछो होइत जाइ छै। पचास बरखसँ ऊपरेक गाछ। बाबू तँ दोसर नै लगौलनि मुदा ओकरे ताम-कोर, छाँट-छुट करैत रहला। मुदा जखनि फलक महत बुझलौं तखनि आगु बढ़ि दारिमक बगान लगबैक विचार भेल।

दोसर गाछपर नजरि पड़िते मन पड़लनि। ओही पुरना गाछक एकटा नै दुटा गाछ अछि। एक गाछसँ दोसर गाछ बनबैमे कहाँ कोनो बेसी तरद्दुत

करए पड़ल। हुनके कहल बात मन रहबे करए, अदरा नक्षत्रमे डारि माटिमे गाड़ि देलिऐ, भरिए बरसातमे अपने सिर एते भेलै जे गाछक भार उठबैक शक्ति भऽ गेलै। कोजगरा परात गाछसँ जुड़ल डारि काटि देलिऐ, जइसँ पुरना गाछसँ सम्बन्ध समाप्त भऽ नव गाछ बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। अहिना ने सनातन वैदिक पद्धति चलैत आएल अछि। जन-जनक फुलवाड़ीक अमूल्य फल दारिम। मुदा जहिना-जहिना तेज गतिए देशक विकास होइत जा रहल अछि तहिना-तहिना जनकक फुलवाड़ी सेहो उजड़ि रहल अछि। उजड़ि कि रहल अछि जे उजड़ि गेल अछि। जँ से नै तँ केतए गेल मिथिलाक अध्यात्म-चिन्तन। केतए गेल संयुक्त परिवार आ केतए गेल स्वयंवर पद्धति। जइ मिथिलामे देश-देशक राजा-रजबारक राजकुमार आबि, सीताक बामा हाथक उठौल धनुष तोड़ेक कोन बात जे हिलाइओ नै सकल, धरतीमे जेते ऋृषि, मुनि, महात्माक आगमन भेल ओ कोनो-ने-कोनो रूपमे मिथिला आबि मिथिलाक दर्शन केलनि आ दर्शन पछाति जनकक दरबारमे अपन उपस्थिति दर्ज करौलनि, एकरा धिया-पुताक गुल्ली डंडा खेल बूझब नेनमतिक सिवा आरो की भऽ सकैए। राम लक्ष्मण सन युवराजकेँ विश्वामित्र सन पारखी जनकपुर आबि अपनाकेँ धन्य बुझलनि।

पनरह दिन पछाति दिवाली दिन कुमराकाका दारीमक गाछ रोपैक विचार केलनि। भने दिवाली सन पावनि अमवसिया दिन होइए। अही पनरह दिनमे दुनू गाछो अपन जगह बना ठमा गेल। जेते दूरमे ओकर सिर पसरल छै तइसँ कनी आगूएसँ माटिक स्थल उखाड़ि दोसरठाम रोपलासँ किए गाछ बूझत जे हमरा कुभेला भेल, सेवामे दू लोटा पानि जड़िमे ढारि देब, सएह ने। दिवाली दिन, सूखल माटिकेँ मेहीसँ फोड़ि, पानिमे सानि, दुनू हाथक आँगुरसँ गढ़ि, एकटा मुँह बना, करुतेल आकि घीमे वस्त्रक सूतक बनल बत्तीकेँ भीजा, पेटमे भोजन दऽ ताधरि जरैले छोड़ि देल जाइ छै जाधरि तेलक संग बत्ती नै जड़ि जाइत अछि। जहिना सजमनि, कदीमा, घेड़ा-झुमनी रोपैले बुढ़िया दादी अपन पोतीकेँ संग केने छोटका खुरपी नेने भोरे बाड़ी पहुँच जाइत जे कुमारि कन्याक सेवा सीता मैयाक सेवा छियनि। तँए बच्चा रोपल गाछ निरोगो हएत आ समए पबिते फड़बो करत। अपन रोपल रहतै साँझ-परात देखबो करत जे जनमल आकि नै जनमल। आब जे अपना हाथे रोपब तँ ओहो कहीं बुढ़ाड़ीया चालि पकड़ि बुढ़ाड़ीएमे फड़ैक विचार कऽ

लिअए। मुदा से नै बुढ़ाड़ीक रोग बिसरबो छी। जइ बीआकेँ माटिमे रोपि ओकरा औँकरा माटिक ऊपर आनि गाछ बना लत्तीकेँ साँगह दऽ दऽ फुलाइ-फड़ै जोकर बनौल जाइए, तेकरा जे समुचित देखभाल नै हएत तँ जे नान्हि-नान्हिक कीड़ी-मकौड़ीक शिकार छी ओकर जिनगी केना बँचत।

अगते अगिला मौसिममे दुनू गाछक मुड़ी-मुड़ी नै, एक्के मुड़ीमे निच्चाँ-ऊपर फुलाएल। मुदा कम आँट-पेटक रहने एक-एकटा फल पकड़लक। केना नै पकड़ैत? चुमौनियाँ कनियाँ ने रहए, कोनो कि कुमारि कन्या छेलए। हँ ओना बहुतो एहेन अछि, जेना अनरनेबा, जे डारिक गाछक रूपमे फड़ि जाइत अछि। मनक जिज्ञासा कुमराकक्काक बढ़लनि। दारीम केहेन माटि-पानिक छी ई तँ सोझहेमे अछि। कोनो अनाड़ी-धुनाड़ी खेती करब आ बकना जाए तइसँ नीक देखल-बूझल दारीमक खेती। ओना अपना ऐठाम - मिथिलांचल-क मौसमक जे खेल अछि ओ बहुत कमे इलाकामे छै। जाड़-रौद-बरसातक बीच साधना स्थल छी। अहिना नै कातिककेँ धरम मास कहल जाइए। अनेको रंगक अन्न, अनेको रंगक तरकारी अनेको रंगक फल-फूल लगबैक मास कातिक। अनुकूल समए रहने अंकुरन शक्ति धरतीमे अधिक भऽ जाइए। मुदा से तँ तखनि ने जखनि ओकरा धर्म-स्थल जकाँ सजाएब। प्रकृति अपन अनुकूलते ने परसारत आकि ओकरा हाथ-पएर छै जे कएओ वएह देतै। बड़ करत तँ बोन-झार लगौत। छगुन्ताक बात ई नै भेल जे केतौ बीआसँ गाछ तँ केतौ लत्तीएसँ गाछ, केतौ लत्तीएमे फल तँ केतौ गाछेमे तरकारी, केतौ डारिएसँ गाछ तँ केतौ डारिएमे सिर। केतौ पत्तेमे गाछ तँ केतौ फुलेसँ गाछ।

दारीमक गाछक दोसर पतियानीपर नजरि पड़िते कुमराकाकाकेँ धक दऽ द्वारका मन पड़लनि। ओइ साल द्वारका गेल रही तँ आरो देश-कोस देखैक मन भेल, तँ नागपुर चलि गेलौँ। की पहाड़ी इलाका, की फलक खेती। कुमराकाकाकेँ अपना मनमे रहबे करनि जे दारीमक गाछ लेब। ओना नर्सरीमे हलुआइए दोकान जकाँ रंग-बिरंगक गाछ मुदा पहिने जीवैत जिनगीमे जान फूकब आकि अनठिया भाँजमे पड़ि अनठीए बनि जाएब। गाछक रंग रूप देखि नर्सरीबलाकेँ पुछलनि-

"ई कथीक गाछ छी?"

कहलकनि-

“अनारक।”

ओना अनार दरीमक बात मनमे उठलनि मुदा गाछक हाड़-काठ आ डारि आ पात देखि बिसवास भऽ गेलनि जे दारीमे छी। भऽ सकैए जे माटि-पानि-हवाक दुआरे किछु अन्तर होउ मुदा छी दारीमे। ओना जहिना नीक खाँढ़क गाएकेँ दब साँढ़सँ पाल खुऔला पछाति बच्चाक खाँढ़ निच्चाँ मुहेँ उतरि जाइए आ दबो खाँढ़क गाएकेँ नीक साँढ़सँ पाल खुऔलापर ऊपर मुहेँ खाँढ़ बढ़ि जाइए, तहुना भऽ सकैए वा एक कुल-खुटक रहितो दोसरो-तेसरो कारणे किछु अन्तर आबि जाइ छै। खैर जे होउ। बेसी तँ नै एकटा गाछ कीनि लेब। गाछबलाकेँ पुछलखिन-

“एकटा गाछक दाम कहू।”

कुमराकाकाकेँ नर्सरीबला बहरबैया बूझि परेखि गेलनि। एकटा गाछ सुनि बुझबैत कहलकनि-

“देखू, नबे-पनचानबे प्रतिशत गाछकेँ लगैक गारंटी करै छिऐ। पाँच-दस प्रतिशत सुखिओ सकै छै। एकटा गाछ लेब आ जौं कहीं सुखि गेल तँ अहूँक आशापर पानि पड़ि जाएत आ हमहूँ गारि सुनब। तँए नीक हएत जे दूटा गाछ लिअ।”

नर्सरीबलाक बात कुमराकक्काक मनमे जँचलनि मुदा एकटा दोसर बात आबि गेलनि। ओ ई एलनि जे जखनि एकटाक बिसवास दइए तँ दाम किए दूटाक लेत। पुछलखिन-

“लगत एकटा आ दाम लेब दूटाक।”

कुमराकक्काक प्रश्न सुनि नर्सरीबला बिनु विचारने बाजि गेल-

“गाछो तँ दूटा देब।”

मुदा कुमराकक्काक गुम्मी नर्सरीबलाक मनमे ठमकल। विचारैत बाजल-

“दूटाक दाम नै, देढ़गोक दाम लगत, दूटा गाछ देब।”

दुनू गोटे राजी भेलौं। वएह चारिम गाछ छी। आब तँ आने गाछ जकाँ ओहो फड़ै-फुलाइए। ओना मिथिलांचलमे दर्जनो किसिमक अनार, दारीम, वेदाना, नारंगी इत्यादि अछि मुदा सबहक नाओं दारीमे छिऐ। गाछक फल द्वारकाक फलमे बदलि गेलनि। चारिम गाछसँ पाँचम गाछपर नजरि पहुँचिते इलाहाबाद-प्रयागक कुम्भ मेला मन पड़लनि। ई गाछ ओतुक्के छी। बहुत दिन पछाति कुम्भो लगल आ अपनो दारीम लगबैक विचार मनमे रहबे करए, दुनू गाछ देखि ओत्तैसँ अनने रही। मुदा ओ वेदाना कहि कऽ अनने रही। ऐठाम तँ दारीमे छी। ओना किछु अन्तर होइते छै। से तँ आनो-आनोमे होइ छै। तँए कि नामे बदलि जाए। छठम गाछपर नजरि पड़िते कश्मीरक अमरनाथ मन पड़लनि। मन पड़िते छगुन्ता लगलनि। केते सुन्नर फल होइए। जहिना रंग-रूप सुन्नर तहिना मोती दाना जकाँ फलक भीतर मधुमाछी छत्ता जकाँ घौदियाएल, बसहा कागतक चद्दरि ओढ़ि संगे-संग रहि अपन जिनगीक पूर्ण विकास करैए। मुदा लगले मन बहटि गेलनि। झंझटिया जगहक फल छी। अकबरेक समए जे झंझटिक जड़ि रोपाएल से अखनो धरि झंझटिया रहिए गेल। कहियो कम-कहियो बेसी मुदा झंझटि मेटाएल नै। तइसँ नीक अपने सभ -बिहारी- छी। मुदा जे होउ बागक बोन आ झीलक झिलहोरि बेसी ओकरे सभकेँ छै। जेहने शालीमार, निशातक बोन तेहने डल झील। ओना अपने सभ जकाँ धानक चूड़ा-चाउर-भात। गहुमक सोहारी मुदा ओ सभ कहियो ने खेलक।

मकइक भुजा, ओरहा खाइए मुदा मलड़ैए बेसी अपना सभसँ। किए ने मलड़त, अपना सभ पानिमे नहाइ छी ओ सभ बेसी बरफेमे नहाइए। ओना अकास गंगाक जलधार सेहो होइ छै मुदा अपना सभसँ कम। आरो जे होउ, ओकरा सभ जकाँ फल सड़ा कऽ नै टटका खाइ छी। सातम गाछपर नजरि पड़िते मन पड़ि गेलनि हरिद्वार। पाथरक धारक पवित्र जलधार। माटिसँ घोराएल नै। किए ने हरिक दुआर बनत। आठम गाछपर नजरि पड़िते जगरनाथ मन पड़लनि। समुद्र-पहाड़ बीच बसल जगरनाथ। एक्के बगानमे दारीम, अनार, वेदाना, नारंगी सभ अपन-अपन जगह पाबि जिनगीक फल लुटबैए। चढ़ैत सुरूज देखि काजकेँ आगू बढ़ाएब बूझि कुमराकाका आड़िपर सँ उठि दारीम तोड़ैक विचार केलनि।

पहिल गाछ पहिल फलपर हाथो बढ़लनि आ नजरिओ। फल तँ छेदाएल अछि! ऊपरेसँ भूर भेल अछि। जरूर फलमे कीड़ाक प्रवेश भऽ गेल

अछि। पहिल फल छोड़ि दोसर देखलनि, ओहो तहिना! छेदाएल फल देखि मन कलपि गेलनि। भरिसक गाछक सभ फल सड़ि गेल अछि। मुदा हूबा करैत दोसर गाछ दिस बढ़ि हाथसँ फल उठा देखलनि तँ ओहो छेदाएल! दोसरो-तेसरो चारिमो ओहिना। आठो गाछक फल देखि हिया हारि देलनि जे सालक अमृत फल छिना गेल। चूक अपनो भेल जे लगन-पाती भोज-भातक फेरिमे पड़ि फल छिनबा लेलौं।



चुप्पा पाल

गोसाँइ लुकझूक करैत। ओना छह बजि गेल मुदा सुरूज अपन दिनक यात्राक अंतिम पड़ावपर अँटकि तकिते छला। पतराएल काज रहने नीलकंठ काका सबेरे-सकाल निचेन भऽ गेल छला। जहिना परिवार मोटेलासँ काजो मोटाइ छै आ दुबरेलासँ काजो दुबराइ छै तहिना नीलकंठ काकाकेँ सेहो भेलनि। ओना परिवारक संस्कार आगू बढ़लनि मुदा काज पूरने काजो पतराइए। होइतो तँ तहिना ने छै जे जनम होइते संस्कारोक जनम होइ छै आ अन्त होइत अन्तो होइ छै। नीलकंठ काकाकेँ तेहने सन भेलनि। किए ने हेतनि, सोझहे लग्गीसँ घास खुएलासँ नै ने होइ छै जे आगू ताकब दादा-परदादा देखब आ पाछू ताकब तँ नाति-छेड़नाति देखब। बाल-बच्चाक बिआह-दान भेने माए-बापक जिनगीक प्रमुख कर्म-धर्मक पूर्ति होइ छै जइसँ बाल-बच्चाक अपन दायित्व पूर्ति करै छथि। बेटा बिआहक आइ पनरहम दिन छेलनि। पैघ यज्ञसँ दुनू परानी मुक्ति पाबि जहिना साबुनसँ वस्त्रक मैल साफ कएल जाइए तहिना माए-बापसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक परिवार बना जिनगीक मैलकेँ कमर्क साबुनसँ घोइ अपन मनक सफाइ लोक करै छाथि। नीलकंठ कक्काक मनमे उठलनि जे बेटा-बिआहक अंतिम हिसाब जोड़ि किए ने काजक विसर्जन कइए ली। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे तीन-तीन-चरि-चरि मास गरदनिमे उतरी झुलिते रहल। जे काज महज चारि-पाँच घंटाक छी। मन गबाही देलकनि जे से नै तँ आइ अंतिम हिसाब -बिआहक लाभ-हानिक- कऽ काजक विसर्जन कइए लेब। जहिना बोनैया हरिणक बच्चा पकड़ाइते चारूकात चौकन्ना हुअ लगैत तहिना नीलकंठ काकाकेँ भेलनि। काजसँ विश्राम होइते देखि सुचिता काकी हाँइ-हाँइ अपन काजक मुड़ी मोड़ि चाहक ओरियानक विचार मनमे अनलनि। किए नै अनती, ओहन जनाना थोड़े छथि जे पतिक विकलांत देखि ओइसँ बेसी अपने विकलांतता देखबए लगती। केतली-लोटा नेने कल दिस बढ़ली, मनमे उठलनि पहिने अपने हाँइ-हाँइ पएर धोइ लोटा-केतली अखाड़ब आकि लोटे केटली अखाड़ि पानि भरि लेब। मन ततमत करए लगलनि, ओना ऐ उमेरक ई प्रश्न नै भेल, मुदा हर-काजक अपन गति-विधि छै। अपने जिनगीक काज ने दोसराकेँ बाट देखौत। समैसँ पहिने सुचिता काकी चाह बना दहिना हाथे गिलास नेने नीलकंठ काका लग पहुँचली। अखनि धरि नीलकंठ काका मुड़ी निच्चे मुहेँ

केने छला। मनमे बेटा बिआहक काज घुरियाइत रहनि। चाहक गिलास जखनि सुचिता काकी निच्चे दबा बढ़ौलकनि तखनि आँखि पड़िते काका नजरि उठौलनि। भकुआएल मुँहक सुरखी देखि नजरि-पर-नजरि गड़ौलनि। मुदा कक्काक मन अपन विचारपर रहनि। काकीकेँ बूझि पड़लनि जे भरिसक कोनो दब कएल काज मनकेँ पकड़ने छन्हि। मुदा जँ चाह पीबैसँ पहिने बाजि बात लाड़ब तँ भऽ सकैए जे चाह पीब छोड़ि अपने बेथासँ बेथित भऽ जाथि, तइसँ नीक जे चुपचाप हाथमे चाहक गिलास पकड़ा, अपनो चाह अँगनासँ आनि एतै पीबो करब आ पुछिओ लेबनि। तैबीच दू-चारि घोंट चाहो घोंटि नेने रहता जइसँ मनोक जुआरि कमतनि। ओना उदासो चेहराक केते कारणो अछि। केतौ रौद-बसातक उदासी तँ केतौ कोनो काज नै भेने, केतौ परिश्रमक नोकसानक उदासी, केतौ धीया-पुता मुइने उदासी तँ केतौ माए-बाप मुइने। मुदा तँए कि पतिक बेथा पत्नी नै सुनथि। पति-पत्नीक बीच हजारो रूप अछि हजारो रंग अछि तँए कि बजा-भुकी बन्न भऽ जाए। आँगन दिस सुचिता काकी बढ़ली। एक घोंट चाह पीविते नीलकंठ कक्काक मुँह मुस्कीयेलनि। मनमे उचरलनि, कहू जे एहेन काजकेँ की कहबै, काज छेलनि डेढ़ सए जोड़ धोती आ तेकर आरो संगी सभ माने पाँचो टूक कपड़ा संग विदाइ करब। ओना डेढ़ सए बहुत भेल मुदा से नै, अज-गज बला परिवार कक्काक। चारि भाँइक अपन भैयारी, तेकर नैहर-सासुर, नाति-नातिक, पोता-पोतीसँ लऽ कऽ अपन सासुरक सातो संबन्धीक, तइ संग बेटाक हाइस्कूल-कौलेजक संगीक संग नोकरीक संगी धरि। नीलकंठ काका हृदए खोलि काज केलनि। प्रश्न तँ मनमे उठलनि मुदा लगले जवाब भेटलनि जे जग-जापमे खर्च होइते छै। जँ से नै होइ तँ धनक काजे की रहत। पेट तँ सागो आ एक लोटा पानिओसँ मानिए जाइ छै। मन नचिते रहनि आकि सुचिता काकी मुँहमे चाहक गिलास भिरौने आगूमे बैसली। तही बीच नीलकंठ काका अपन हाथक गिलास चौकीपर रखि हाथक पाँचो ओंगरी घुमबैत पुछलखिन-

''कहू तँ ई केहेन भेल?''

नीलकंठ कक्काक प्रश्न सुनि सुचिता काकी अकचकाइते रहली जे की केहेन भेल। बाघ भेल की साँप भेल से केना बुझबै। ओना दुनू परानीक -

नीलकंठ काका आ सुचिता काकी- मन बेटा बिआहसँ एते खुशी रहनि जे छोट-छीन केते बातो आ काजो मनसँ हटि गेल रहनि मुदा मनोक तँ अपन संसार छै। प्रसंगोक अपन स्थानो आ महत्तो छइहे। दुनू बेकतीक सझिया काज तँए आरो बेसी मन खुशी रहनि। खुशी हएब उचितो छल किएक तँ केतो एहनो होइ छै जे प्रेमरस पीब, मधुर गीत गाबि संतान पैदा होइ छै आ किछुए दिन पछाति सभ किछु उनटि जाइ छै, ओइ बेटासँ तँ नीक काज भेले रहानि। ओना चारि भाए-बहिनक बीच एकेटा बेटा तीनटा बेटीए छेलनि। जे तीनू बेटा बेटीसँ जेठे छेलनि जेकर बिआह-दुरागमन पहिने कऽ नेने छला। तीनू बेटी बिआहक दान-दहेज देखि दान-दहेजसँ मने उचटि गेलनि, जइसँ बेटाक प्रति दान-दहेजक विचारे मनमे दबि गेलनि। दोसरो कारण भेलनि, एक-एक बेटीक बिआहमे जेते खर्च भेल तइसँ बेसी जँ बेटीबलाकेँ खर्च कराएब ई तँ सोझहा-सोझही अन्याय भेल। मुदा से कहाँ होइ छै, दहेजक दुआरे बेटी बिआहकेँ लोक अगर-मगर करैत टपि जाइए मुदा बेटा बेरमे बिनु पढ़लो-लिखलकेँ डाक्टर-इंजीनियर बना देल जाइए। जहिना बड़दहट्टामे फुसि-फासिक तेजी रहै छै तहिना ने बेटो-बेटीक बिआहमे...। यज्ञ सन पवित्र स्थलमे जँ फुसि-फासिक तेजी नै रहत तँ ओ यज्ञ शुद्धे केना भेल? खैर जे होइ। जेते तीनू बेटीक बिआहमे खर्च भेल ओते आमद एकटामे केना हएत। तइसँ नीक जे मुँहछोहनिए नै करब। हथउठाइ जे हेतै सएह हेतै। पतिक बिपटा बानि -हाथक ओँगरी घुमा बजैत- देखि सुचिता काकीकेँ हँसी लगलनि मुदा हँसबो तँ हँसबे छी। केतौ गुदगुदबैए तँ केतौ भकभकेबो करैए। काज नफगर रहल घट्टो नफे बुझाए छै आ घटगर रहल तँ नफो घट्टे बुझाए छै। पथड़ाएल केराउक भुज्जा जकाँ सुचिता काकीक दाँत तर नीलकंठ कक्काक आक्रोश पड़लनि। मुदा आक्रोशो तँ आक्रोशे छी, कथीक आक्रोश? तँए जाबे उघारि-उघारि नै बजता ताबे बूझब केना? मुदा मुँहक हँसी पेटमे गुरकुनियाँ कटिते रहनि। बजली-

> "तेहेन झाँपि-तोपि बजै छी जे ऊपरे-घाँड़े रहि गेलौं तँए कनी बिक्छा कऽ बजियौ। जखनि दुनू गोटेक सझिया जीवन अछि तखनि हम हँसी आ अहाँ कानी ई केहेन हएत?"

खिस्सकरकेँ जहिना एक्कोटा खिस्सा सुनिनिहार भेटला पछाति अपन सुधि-बुधि हरा जाए छै तहिना नीलकंठ काकाकेँ सुचिताक बोल सुनि भेलनि बजला-

> ''परिवारक महान यज्ञ बेटा-बेटीक बिआह छी, तेहेन यज्ञ जँ नीक जकाँ सम्पन भऽ जाए तँ खुशीक बात भेल। तइले देहोक धौजनि आ पाइयोक धौजनि तँ हेबे करत। मुदा तइमे उचित-अनुचितक तँ विचार करए पड़त किने?''

नीलकंठ कक्काक मनकेँ पकड़ैत चुट्टा सुचिता काकी भिड़ौलनि। हुँहकारी भरैत बजली-

> ''ऐमे के नै करत?''

जहिना एक्के भगवान भिन्न-भिन्न स्वरूप भिन्न-भिन्न फूल-पत्ती पाबि खुशी होइछ तहिना नीलकंठ काकाकेँ सेहो भेलनि। सुचिता काकीक नजरि-पर-नजिर गड़ा बजला-

> ''उचित-अनुचित बेड़ाएब असान अछि। जिनगीक संगी रहने की हएत! ई तँ विचारक संगी भेने ने काज चलत?''

नीलकंठ कक्काक बात सुचिता काकीकेँ अकठाइन लगलनि। मनमे उठलनि जे कहू सभ दिन एकठाम रहि सभ किछु करै छी तखनि एना किए बजै छथि। भरिसक कोनो एहेन उकडू सोग ने तँ मनकेँ पकड़ि नेने छन्हि। आन दिन केहेन बढ़ियाँ हबगब करै छेलौं आ आइ की भऽ गेल छन्हि। बजली-

> ''कनी नीक जकाँ अपन उदासीक कारण बजियौ। हम ऊपरे-झापरे रहि गेल छी।''

सुचिता काकीक जिज्ञासा देखि नीलकंठ काका कहलखिन-

> ''उचित-अनुचित काजक दू छोर भेल। एक छोर उचित भेल आ दोसर अनुचित। मुदा तइसँ थोड़े काज चलत। सुत-सुत मिलि जहिना डोरी बनैए तहिना दुनू अछि। तेकरा बिहिया कऽ जँ नै सीमा देब तँ काजे भँसिया जाएत। बुझबे ने करबै जे केतए की

भऽ गेलै। पछाति बाजब जे मनमे जे छेलै से भेबे ने कएल। अहीं कहू जे मनेक विचारकेँ ने काज रूप बना केलिऐ तखनि किए ने भेल?''

नीलकंठ कक्काक विचार सुचितो काकीकेँ दमगर बूझि पड़लनि। माथ कुड़ियबैत बजली-

''तखनि केना हएत?''

सुचिता काकीक पघिलल मन देखि नीलकंठ काका कहलखिन-

''बड़ भारी जाल छै। फुलवाड़ीक फूलमे देखबै जे एके नामक अपराजित फूल उजरो होइए लालो होइए आ कारीओ होइए। सोझहे अपराजित आकि आने फूल जे रंग-रंगक होइए, कहलासँ थोड़े बूझि पेबे जे लाल-कारीमे कोन-नीक कोन-अधला भेल?''

नीलकंठ कक्काक छिड़ियाएल विचार सुनि सुचिता काकी समटैत बजली-

''अच्छा, छोड़ू एते छान-पगहाकेँ। एक-एक काजकेँ उठा बेड़बैत चलू जे की नीक-भेल आ की अधला भेल।''

पत्नीक विचार सुनि नीलकंठ काका बजला-

''हँ, बड़बढ़ियाँ विचार देलौं। मुदा पहिने ई कहि दिअ जे केते काज अढ़ेला पछाति करै छी आ केते अपने फुड़ने करै छी?''

पतिक बात सुनि सुचिता काकी अकबका गेली। मने-मने विचारे लगली जे ई की भेल? एकरा की काज करब नै कहबै? घर-परिवारक जखनि काज भइए गेल तखनि काज केना ने भेल। भरिसक बुधिए तँ नै घुसुकि गेलनि हेन, नै तँ एहेन बिनु हाथ-पएरक बोल किए भेलनि? हलाँकी एक्केटा बातमे सेहो मानब उचित नै हएत। जँ मन घुसकल-फुसकल हेतनि तँ दोसरो-तेसरो बात एहेन बजता। ओना लोककेँ बेरो-विपति आ काजो-उदममे मन घुसुकि-फुसुकि जाइ छै। आंशिक रूपमे की ई झूठ जे किछु सरकारीओ कर्मचारी वा शिक्षकोकेँ बेटीक बिआह सेहो पतित बनौलकनि। परिस्थितिओ रहल जे केते शिक्षक हाइ स्कूल वा कौलेजसँ सेवा-निवृत भऽ गेला मुदा हाथसँ कहियो वेतन नै उठौलनि। मुदा तँए कि परिवारमे खर्च नै छेलनि,

एक शिक्षक वा कर्मचारीक खर्च तँ छेलनिहँ। मनकँ थीर करैत सुचिता काकी विचारलनि जे से नै तँ जे बुझैमे नै आएल से पुछिए किए ने ली, पुछलखिन-

''की कहलिऐ अढ़ेलोत्तर आ अपने फुड़ने?''

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकंठ कक्काक मनमे उपकलनि, भरि दिनक हराएल जँ साँझो घड़ि घर पहुँच जाए तँ ओ हराएब नै भेल। दिन तँ होइते छै बौआइले तखनि बौआएब हराएब केना भेल। बजला-

''जखनि कोनो काज अढ़ेला पछाति जे करैए ओ अपन उहिक नै भेल। जँ ओकरा अढ़ाएल नै जाए तखनि ओ करत की? अहीं कहू?''

नीलकंठ कक्काक विचार सुनि माथक मोटा पटकैत सुचिता काकी बजली-

''अहाँ अपनाकँ एतबे किए बुझै छिऐ जे हमरा कोनो काज करैले नै कहब। जँ से नै कहब तँ केना बुझबै जे हमर बात फंल्ली मानैए आकि नै?''

पाशा पलटैत नीलकंठ कक्काक बजला-

''जड़िसँ छीप धरिक काजक हिसाब-किताब करैमे बड़ समए लगत। से नै तँ एक्केटा काजक हिसाब करू।''

एकटा सुनि सुचिता काकीक मन हलचलेलनि। ई तँ सोलहन्नी एक तरफा भेल औगता कऽ बजली-

''अहूँक बात रहल आ एकटा हमरो अछि।''

''से की?''

''सवारी बरियातीक हिसाबसँ होइ छै तइमे एते गाड़ीक कोन प्रयोजन छेलै, जे लऽ गेलौं?''

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकंठ काका बजला-

"अच्छा, अहीं विचार दिअ जे पहिने की विचारब?"

पतिक शीतल छाहरि पाबि काकी बजली-

"पहिने गाड़ीए-सवारीक विचार करू। किए पच्चीसटा गाड़ी लऽ गेलिऐ, जखनि कि डेरहे सए बरियाती गेलिऐ।"

गाड़ीक नाओं सुनि समाजमे जीतक अनुभव नीलकंठ काकाकेँ भेलनि। अखनि धरि समाजमे किेयो बीसटा गाड़ीसँ आगू नै बढ़ल छला तैठाम पाँच गाड़ी बढ़ैक प्रतिष्ठा केकरा भेटल। आह्लादित होइत कहलखिन-

"अपन मनोरथ छल जे आगू बढ़ि काज करी। किए अहाँकेँ कोनो तेकर दुख अछि? प्रतिष्ठा की फूटा कऽ भेल आकि सम्मिलिते भेल।"

एक तँ ओहिना सुचिता काकीक मन बेटा बिआहक खुशीसँ उधियाइत रहनि तैपर पतिक मनोरथ सुनि आरो उधिया गेलनि। बजली-

"अनकासँ तँ नीक काज जरूर भेल। देखै छिऐ जे अल्हुआक बोरा जकाँ मनुख गाड़ीमे ठसमठस बरियाती जाइ-अबैए आ गाड़ीएमे मुँह पेट सभ चलए लगै छै। तइसँ नीक भेल जे जे किेयो गेला अरामसँ एला-गेला।"

सुचिता काकीक बोल सुनि नीलकंठ कक्काक मुँहसँ हँसी फुटलनि। पतिक हँसी देखि काकीकेँ भेलनि जे भरिसक हमर निशान उचित जगहपर लगलनि। अपन बराइ सुनि खुशी हएब मनुखक जन्मजात संस्कार रहल अछि। अपन उचित जगहक निशानसँ पतिक मुँहकेँ लाबा जकाँ हँसाएब सफल पत्नीक प्रमुख लक्षण तँ भेबे कएल। मुदा नीलकंठ कक्काक हँसीक कारण सुचिता काकीक निशान नै बल्की समाजमे अरामदेह बेसी गाड़ीकेँ बेटाक बिआहक बरियातीमे लऽ जाएब छेलनि। जेकरा बेटाकेँ अधिक दान-दहेज बिआहमे भेटै छै, समाजमे ओकरे मान भेल किने? जँ मान बढ़ल तँ जरूर अंको बढ़ल हेबे करत। पेटक गुदगुदी असथिर होइते सुचिता काकी बजली-

"आब, हाँ-हाँ हीं-हीं छोड़ू। भानसोक बेर भेल जाइए। अखनि पुतोहुकेँ चुल्हिक भार थोड़े देबै। जइ बेथे बेथाएल छी से बेथा

> निकालू। जाबे गुर घाउ जकाँ कोनो बेथाकेँ नीक जकाँ नै निकालि बहा लेब ताबे सड़नि-असाइक डर रहिते छै। तँए आदो-पान्त बाजू?''

जहिना कियो संगीतज्ञ उच्च कोटीक मंचपर कलासँ श्रोताकेँ मुग्द कऽ सुता दइए तँ केतौ एकान्त बनमे असकरे कियो अपन गुणसँ निराकार रूप भगवानकेँ सुन भरत जकाँ नन्दी गाम बना राज-काज चलबैए तहिना अपन बेथित वाणकेँ निकालैत नीलकंठ काका बजला-

> ''बिआहक आन खरच आ काजपर मन केतौ नै अँटकल अछि, किएक तँ चाउर-दालि खर्च भेल तँ बदलामे लोको, मालो-जाल आ चिड़ैऔ खेलक। गाड़ी-सवारीमे खर्च भेल तँ ईहो उपराग नै भेटल जे किनको डाक्टर ऐठाम जाए पड़लनि। मुदा डेढ़ सए जोड़ धोती मिला पाँचो टूक विदाइमे जे खर्च भेल ओ टारनो मनसँ नै हटैए।''

जहिना मरूभुमिमे बालु सिबा चमकैत किछु नै नजरि अबैत तहिना सुचिता काकीकेँ बेटा बिआहक सफलता मनमे छेलनिहेँ चमकि चड़चड़ेली-

> ''राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लगल बड़कुम्मरि कानए, सुहरदे मुहेँ किए ने बजै छी जे आने बरक बाप जकाँ कननी बिमारी धेने अछि तँए कनै छी। अपने मने जे केतबो गुर-चाउर चिबबैत कानब तँ की हमहीं संगी छी, बाँटि थोड़े लेब? खैर जे होउ, देह तँ रोगाएल अहींक अछि, तँए बिमारीक जड़ि तँ अपने बुझैत हेबै। बाजू, खोलि कऽ बाजू, कनी भानसमे देरीए हएत तँ की हेतै। मनक घाउ जे मेटाएल रहत तँ खाइओ आ सुतैओमे रुचि औत।''

सुचिता काकीक विचार सुनि नीलकंठ कक्काक मनमे भेलनि जे भरिसक लोक ठीके कहै छै राजाकेँ किदनि चिन्ता आ रानीकेँ किदनिक। मुदा मनक बेथा नीक जकाँ वएह ने बूझि पाबि सकैए जेकर हाथ-पएर नम्हर हेतै। घटको सबहक अजीब गति छै। बर-कनियाँक घरदेखीमे लगले सर्टिफिकेट दऽ दइ छथि जे सीता-रामक जोड़ी अछि। विधातो जेना जोड़े लगा पठौलनि। मुदा नै सोलहन्नी तँ अठन्नीओ बेथा तँ भगबे करत। सोलहन्नी तँ तखनि भगै छै जखनि सुनिनिहार बेथा सुनि बेवसथित ढंगसँ समाधान करै

छथि, मुदा तइसँ कि अपन बेथा हृदैसँ निकाललोसँ तँ अदहा कमिते अछि। किएक ने कमत? लोक नै सुनत तँ नै सुनह मुदा उगलाहा तँ सुनबे करता। पुछलखिन-

"विदाइमे केते खर्च भेल से बूझल अछि?"

ठोरेपर बरी पकबैत सूचिता काकी कहलकनि-

"विदाइ तँ विदाइ भेल, तइमे हमरा बुझैक की प्रयोजन अछि। ई काज तँ पुरुख पात्रक छी। जे घरसँ निकलि कुटुम-परिवार धरिक चीन-पहचीन रखै छाथि, सेहो अधला की भेल। जखनि अधले नै भेल तखनि चिन्ते किए हएत? जखनि चिन्ते नै हएत तखनि मने किए बेथाएत? मन हल्लुक करू। अनेरे तरे-तरे गुमसड़ै छी।"

नीलकंठ कक्काक मन मानि गेलनि जे मुँहछोहनि छोड़ि किछु ने भेटत। मुदा मनक बेथाक कथा जँ बाजिओ नै लेब तँ ओकरा संग अन्याय हएत। बजला-

"जे बात सुनैमे नै आबए ओ दोहरा कऽ पूछि लेब। मुदा जे बुझैमे नै आबए ओहन नै दोहराएब। शुरूहेसँ कहै छी।"

अपन भरियाइत आसन देखि सुचिता काकी हाथ-पएर सोझ-साझ करैत बैसली। सोझ-साझक कारण रहनि जे नजरि-नजरिक मिलानी नब्बे डिग्रीमे नै शत-प्रतिशत हुअए। कहलखिन-

"देखू हम बिसराह छी, जँ बीचमे कोनो बिसरि जाइ तँ ओकर मदी नै भेल। मुदा अहूँ, काज केतौ आ बात केतौसँ नै करब। जहिना-जहिना काज बढ़ैत गेल तहिना-तहिना बातो बढ़बैत चलब।"

सुचिता काकीक विचार नीलकंठ काकाकेँ दमगर बूझि पड़लनि। दमगरे विचार ने दमगर आशा जगबैए। बजला-

"डेढ़ सए गोटेकेँ विदाइ केलियनि। ओना किनको ऐ दुआरे नै बेरेलियनि जे एक काजक एके विदाइ उचित बुझलौं। मुदा तइसँ कि किनको संग कम-बेसी नहियेँ केलियनि?"

पतिक बात सुनि सुचिता काकी टपकली-

''किए, कियो किछु उपराग पठौलनि अछि?''

''उपराग किए कियो पठेता। मुदा मन मानि नै रहल अछि। कहिए दइ छी। डेरहो सए विदाइ डेढ़ लाखक छल। एक-एक विदाइक वस्तुमे एक-एक हजार लगल छल। मुदा आब जखनि पाछू उनटि तकै छी तँ बूझि पड़ैए जे दस-सँ-पनरह गोटे धोतीओ चदरिओक उपयोग करता बाँकी कियो घरनीपा बनौता तँ कियौ गड़ीपोछना!''

पतिक बात सुनिते सुचिता काकी कुदैक बजली-

''अपन महिंसकेँ कियो कुरहरिए नाथत तइले अहाँकेँ चिन्ता किए होइए?''

सुचिता काकीक बात सुनिते नीलकंठ काकाकेँ झड़क उठलनि बजला-

''अहीं सन लोक बिआहमे काजसँ विधि भारी बनबैए। एकटा कहू जे अपन बिआह मन अछि।''

''मन किए ने रहत?''

''केते खर्च बाप केने रहथि से बूझल अछि?''

''दहेलहा-भसेलहा खनदान बुझै छिऐ जे काजक हिसाब बाप-माएसँ लेब?''

''एना नै छिड़िआउ सबा लाख रूपैआमे दुनू गोटेक बिआह भेल रहए। जाउ कनी चसगरसँ भानस करब। अहिना बेजाए नीक होइत एलैए?

